THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

आम आदमी पार्टी ने जारी की चौथी सूची, 21 उम्मीदवारों को दिया टिकट

चंडीगढ़, 11 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने उम्मीदवारों की चौथी सूची जारी कर दी है। चौथी सूची में कुल 21 उम्मीदवारों को टिकट दिया गया है। इससे पहले आम आदमी पार्टी की तरफ से पहली सूची में 20 प्रत्याशी, दूसरी में नौ और तीसरी में 11 उम्मीदवारों का एलान किया था। वहीं, चौथी लिस्ट में 21 उम्मीदवारों को टिकट देने के बाद आप के कुल प्रत्याशियों की संख्या 61 हो गई है। 12 सितंबर प्रत्याशियों के नामांकन की अंतिम तारीख है। इससे पहले आप को अब 29 और उम्मीदवारों का एलान करना है।

वर्ष-29 अंक : 171 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) भाद्रपद शु.9 2081 गुरुवार, 12 सितंबर-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ❊ पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग के लिए अच्छा समय : पीएम

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से बुधवार को कहा गया कि सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग में निवेश के लिए यह भारत में सबसे अच्छा समय है, क्योंकि भारत में वैश्विक कंपनियों का मजबूत इकोसिस्टम मौजूद है। साथ ही बड़ी संख्या में स्किल्ड लोग भी हैं। दिल्ली के पास ग्रेटर नोएडा में 'सेमीकॉन इंडिया 2024' इवेंट में इंडस्ट्री के बड़े पक्षकारों की मौजूदगी में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत में चिप में कभी मंदी नहीं होगी, आप हमारी ग्रोथ स्टोरी पर दांव लगा सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत में आकर निवेश कर वैल्यू क्रिएट करें। हम आपको ग्रोथ के लिए एक इकोसिस्टम उपलब्ध कराएंगे।

भारत के पास सेमीकंडक्टर डिजाइन में दुनिया के ग्लोबल टैलेंट का 20 प्रतिशत हिस्सा है। हम 85,000 की मजबूत सेमीकंडक्टर वर्कफोर्स बना रहे हैं। इसमें तकनीकी विशेषज्ञ, आरएंडडी एक्सपर्ट्स और डिजाइनर शामिल हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि एक लाख करोड़ रुपये के 'अनुसंधान फंड' का उद्देश्य बेसिक रिसर्च और प्रोटोटाइप डेवलपमेंट को समर्थन देना है। इसमें सेमीकंडक्टर भी शामिल है। उन्होंने अपने संबोधन में आगे कहा कि भारत एक सुधारवादी सरकार प्रदान करता है, जो कि एक बढ़ता हुआ मैन्युफैक्चरिंग बेस और महत्वाकांक्षी तकनीक-उन्मुख बाजार भी है। हम सेमीकंडक्टर के लिए 85,000 इंजीनियर्स और टेकनिशियन का एक मजबूत टैलेंट पूल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस उद्देश्य से 113 से ज्यादा यूनिवर्सिटिज, शैक्षिणिक और आरएंडडी संस्थाएं जुड़ी हैं। प्रधानमंत्री मोदी एग्जीबिशन में भी गए और कंपनियों से सेमीकंडक्टर सॉल्यूशंस को लेकर बातचीत की। इससे पहले मंगलवार को सेमीकंडक्टर कंपनियों के सीईओ ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की तारीफ की। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने केवल भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को प्रोत्साहित किया है। राष्ट्रीय राजधानी में बड़ी सेमीकंडक्टर कंपनियों के सीईओ ने प्रधानमंत्री मोदी से उनके आधिकारिक आवास पर मुलाकात की थी। इसमें एसईएमआई, माइक्रोन, एनएक्सपी, पीएसएमसी, आईएमईसी, रेनेसा, टीईपीएल, टोक्यो इलेक्ट्रॉन लिमिटेड, टॉबर, सिनोप्सिस, कैडेंस, रैपिडस, जैकब्स, जेएसआर, इनफिनियन, एडवांटेस्ट, टेराडाइन, एप्लाइड मैटेरियल्स, लैम रिसर्च, मर्क, सीजी पावर और कायन्स टेक्नोलॉजी शामिल थी।

साइबर अपराध के खिलाफ आई4सी अभियान में शामिल हुए अमिताभ बच्चन

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बढ़ते साइबर अपराधों से निपटने के लिए सरकार की पहल में सक्रिय भागीदारी के लिए बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अभिनेता की भागीदारी भारत को साइबर-सुरक्षित राष्ट्र बनाने के मिशन को और गति देगी।

साइबर अपराध के प्रति आई4सी ने कई कदम उठाए

यह अभियान केंद्रीय गृह मंत्रालय की एक शाखा भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) द्वारा शुरू किया गया था। अमित शाह ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, 'पीएम मोदी के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए गृह मंत्रालय देश में एक सुरक्षित साइबर स्पेस बनाने के लिए संकल्पित है। आई4सी ने इस दिशा में कई कदम उठाए हैं। मैं इस अभियान में शामिल होने के लिए अमिताभ बच्चन को धन्यवाद देता हूं। अमिताभ बच्चन की सक्रिय भागीदारी साइबर-सुरक्षित भारत बनाने के हमारे मिशन को और गति देगी।'

'विश्व एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा'

> *जलवायु परिवर्तन को लेकर बोले पीएम मोदी*

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को ग्रीन हाइड्रोजन पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि विश्व एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। इस बात का बड़ा एहसास है कि जलवायु परिवर्तन केवल भविष्य का मामला नहीं है, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव यहां और अभी महसूस किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ऊर्जा परिवर्तन और स्थिरता अब वैश्विक नीति चर्चा का केंद्र बन गई है। भारत स्वच्छ और हरित ग्रह बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम हरित ऊर्जा पर अपनी पेरिस प्रतिबद्धताओं को पूरा करने वाले G20 देशों में से पहले थे। ये प्रतिबद्धताएं 2030 के लक्ष्य से 9 साल पहले ही पूरी कर ली गईं। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारत की स्थापित गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता में लगभग 3007 की वृद्धि हुई है। पिछले 10 वर्षों में भारत की सौर ऊर्जा क्षमता 3,0007 से अधिक बढ़ी है। लेकिन हम ऐसी उपलब्धियों पर आराम नहीं कर रहे हैं। हम मौजूदा समाधानों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हम नए और नवोन्वेषी क्षेत्रों पर भी विचार कर रहे हैं। यहीं पर हरित हाइड्रोजन तस्वीर में आती है! प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हरित हाइड्रोजन विश्व के ऊर्जा परिदृश्य में एक आशाजनक वृद्धि के रूप में उभर रहा है। यह उन उद्योगों को डीकार्बोनाइजिंग करने में मदद कर सकता है जिन्हें विद्युतीकृत करना मुश्किल है।

❊ अतीत में मानवता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा

उन्होंने कहा, 'मुझे विश्वास है कि यह सम्मेलन बेहतरी के लिए कई विचारों के आदान-प्रदान में मदद करेगा। अतीत में मानवता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हर बार, हमने सामूहिक और नवीन समाधानों के माध्यम से प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त की। सामूहिक और नवोन्वेषी कार्यों की इसी भावना के साथ हम एक स्थायी भविष्य की ओर आगे बढ़ेंगे।'

अरविंद केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 25 सितंबर तक बढ़ी

> *सीबीआई की चार्जशीट पर जवाब दाखिल किया*

> *राउज एवेन्यू कोर्ट ने आप विधायक को जमानत दी*

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। शराब नीति केस में भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में सीएम अरविंद केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 25 सितंबर तक बढ़ाई गई है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश किया गया।

इसी मामले में आरोपी और आप विधायक दुर्गेश पाठक को अदालत ने जमानत 1 लाख रुपए के बॉन्ड पर जमानत दे दी है। सीबीआई की सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर होने के बाद कोर्ट के समन पर वे अदालत में पेश हुए थे।

दरअसल, सीबीआई ने अरविंद केजरीवाल, दुर्गेश पाठक, विनोद चौहान, आशीष माथुर, सरथ रेड्डी के खिलाफ सप्लीमेंट्री चार्जशीट राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश की थी। 3 सितंबर को कोर्ट ने चार्जशीट पर संज्ञान लिया। कोर्ट ने सभी आरोपियों को आज यानी 11 सितंबर तक अदालत में पेश होकर जवाब दाखिल करने के लिए कहा था। जवाब दाखिल होने के बाद कोर्ट ने केजरीवाल की न्यायिक हिरासत बढ़ाई और दुर्गेश पाठक को जमानत दे दी। सीबीआई केस में गिरफ्तारी के खिलाफ केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका लगाई है। 5 सितंबर को इस मामले में सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया गया। वहीं, ईडी मामले में केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल चुकी है।

सिद्धारमैया ने अटकलों पर लगाया विराम, मुख्यमंत्री की सीट खाली नहीं-मैं पद पर बना रहूंगा

बंगलूरू, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने बुधवार को कहा कि राज्य में मुख्यमंत्री का पद अभी किसी के लिए खाली नहीं है। उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे इस पद पर बने रहेंगे। सिद्धारमैया की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब जमीन आवंटन मामले में मुकदमे के लिए राज्यपाल की मंजूरी को चुनौती देने याचिका पर हाईकोर्ट में सुनवाई चल रही है। कांग्रेस के कुछ नेता नेतृत्व परिवर्तन की स्थिति में मुख्यमंत्री बनने की तैयारी में लगे हैं। उनमें से कुछ ने खुले तौर पर मुख्यमंत्री बनने की इच्छा जताई है।

मीडिया के सवालों के जवाब में सिद्धारमैया ने कहा, 'किसी ने कोई बयान नहीं दिया। किसी ने नहीं कहा कि वे मुख्यमंत्री बनेंगे। (मुख्यमंत्री की) सीट खाली नहीं है। फिर कोई क्यों कहे कि वे मुख्यमंत्री बनेंगे? हर कई यही कह रहा है कि सिद्धारमैया मुख्यमंत्री बने रहेंगे।' जब उन्हें बताया गया कि कुछ नेताओं ने कहा है कि अगर सिद्धारमैया निर्देश देंगे तो वे मुख्यमंत्री बन जाएंगे, इस पर उन्होंने कहा, जब पद ही खाली नहीं है, तो कोई ऐसा निर्देश क्यों देगा?

मुंबई में नगालैंड के मंत्री तेमजेन के खिलाफ जांच शुरू

राज्य में 125 करोड़ निवेश का मामला; कंपनी का आरोप-इन्वेस्टमेंट के बाद दूरी बनाई

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मुंबई पुलिस ने नगालैंड के कैबिनेट मंत्री और भाजपा सांसद तेमजेन इम्ना अलोंग के खिलाफ एक कंपनी से जुड़े निवेश विवाद मामले में जांच शुरू की है। मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) के स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने मंगलवार (10 सितंबर) को बॉम्बे हाई कोर्ट में इसकी जानकारी दी। यह जांच जस्टिस रेवती मोहिते डेरे और जस्टिस पृथ्वीराज चव्हाण की बेंच के आदेश के बाद शुरू की गई है। मुंबई स्थित कंपनी हेजल मर्केंटाइल लिमिटेड ने उनके खिलाफ याचिका लगाई है। कंपनी का आरोप है कि उसने तेमजेन के कहने पर नगालैंड में 125 करोड़ रुपए इन्वेस्ट किए थे।

हालांकि, सभी सप्लाई कमिटमेंट्स को पूरा करने और चालान जारी करने के बाद अलॉन्ग ने कंपनी के लोगों से दूरी बना ली। मामला 2015 का है। तब तेमजेन किसी पद पर नहीं थे। कंपनी ने 9 फरवरी, 2024 को ईओडब्ल्यू में शिकायत दर्ज कराई थी। कंपनी ने बताया कि तेमजेन ने 2015 और 2018 के बीच नगालैंड में निवेश करने के लिए उनसे संपर्क किया था।

'20 सीटें और आती तो जेल में रहते ये लोग'

> *जम्मू कश्मीर में बीजेपी पर बरसे मल्लिकार्जुन खड़गे*

अनंतनाग, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भारतीय जनता पार्टी पर जमकर निशाना साधा है. बुधवार को जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में रैली को संबोधित करते हुए खड़गे ने बीजेपी को जमकर घेरा. उन्होंने कहा कि अगर 20 सीटें और आ जातीं तो ये सब जेल में होते।

खड़गे ने कहा, 'कहां गए 400 पार वाले? वो लोग 240 सीट पर सिमट गए. अगर हमें 20 सीटें और आ जातीं तो ये सारे लोग जेल में होते. ये लोग जेल में रहने के लायक हैं. बीजेपी भाषण तो बहुत देती है, लेकिन काम और कथनी में बहुत अंतर होता है. बीजेपी चाहे जितनी कोशिश कर ले, कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस का गठबंधन कमजोर नहीं होगा. हमने संसद में अपनी ताकत दिखाई है. हम उसी ताकत के साथ आगे बढ़ेंगे।'

कभी कामयाब नहीं होगी इनकी कोशिश : खड़गे

उन्होंने कहा, 'बीजेपी यहां पर लोगों को

तोड़-फोड़कर हिंदू-मुस्लिम को बांटने की कोशिश कर रही है. लेकिन इनकी कोशिश, जिंदगी में कभी कामयाब नहीं होगी. ऐसे बीजेपी और आरएसएस के हजारों कार्यर्ता आएंगे और चले जाएंगे. यहां के लोग झुकने वाले नहीं हैं. कांग्रेस पार्टी यहां के लोगों के साथ है. हम सब एक हैं और हमेशा एक रहेंगे।'

'कांग्रेस के इंडिया गठबंधन से डरी हुई है भाजपा'

खड़गे ने आगे कहा,'कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस का गठबंधन देखने के बाद बीजेपी बौखला गई है. इसलिए बीजेपी जम्मू-कश्मीर की लिस्ट बार-बार बदल रही है. इतना घबरा गए हैं, दो-तीन लिस्ट बदल दी है. बगावत शुरू हो गई है. इससे पता चलता है कि इंडिया गठबंधन की एकता से वो लोग कितना डरे हुए हैं।'

राहुल की भारत जोड़ो यात्रा का खड़गे ने किया जिक्र

रैली में मल्लिकार्जुन खड़गे ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का भी जिक्र किया. खड़गे ने कहा, 'राहुल गांधी ने सबसे बड़ी यात्रा निकाली. कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और कश्मीर में यात्रा का समापन हुआ. भारत जोड़ो यात्रा, जिसमें मैं भी शामिल था, फारूक अब्दुल्ला भी उसमें शामिल थे. उस यात्रा को यहां पर बहुत कामयाबी मिली।'

यूपी में धर्मांतरण कराने वाले 12 दोषियों को उम्रकैद

4 को 10-10 साल की सजा; हिंदू से मुस्लिम बने उमर ने 1000 लोगों का धर्म बदलवाया

लखनऊ, 11 सितंबर (एजेंसियां)। यूपी में अवैध धर्मांतरण मामले में लखनऊ के एनआईए कोर्ट ने बुधवार (11 सितंबर) को 12 दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाई। 4 दोषियों को 10-10 साल की सजा दी गई। कोर्ट के फैसला सुनाते वक्त सभी दोषी कोर्ट में मौजूद थे।

अवैध धर्मांतरण मामले में यह पहला केस है, जिसमें एक साथ 16 लोगों को सजा दी गई। मंगलवार को एनआईए-एटीएस कोर्ट के स्पेशल जज विवेकानंद शरण त्रिपाठी ने सभी को दोषी को करार दिया था। कोर्ट ने 10 सितंबर को सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था।

एटीएस ने बताया कि ये लोग नौकरी समेत कई तरह का प्रलोभन देकर धर्मांतरण कराते थे। फतेहपुर का मोहम्मद उमर गौतम गिरोह का सरगना है, वह खुद हिंदू से मुसलमान बना था। फिर उसने करीब एक हजार लोगों का अवैध तरीके से धर्मांतरण कराया।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में 2 आतंकी ढेर

जम्मू, 11 सितंबर (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में सुरक्षाबलों से एनकाउंटर में दो आतंकी मारे गए हैं। सेना ने बताया कि आर्मी के फर्स्ट पैरा के जवानों को बुधवार सुबह उधमपुर के खंडरा टॉप के जंगलों में 2-3 आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस के साथ मिलकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। दोपहर 12.50 बजे आतंकियों ने जवानों पर फायरिंग की। जवाब में जवानों ने भी फायरिंग की। करीब चार घंटे चले एनकाउंटर के बाद सुरक्षाबलों ने तीनों आतंकियों को ढेर कर दिया। वहीं जम्मू-कश्मीर के अखनूर में 10-11 सितंबर की दरमियानी रात 2:35 बजे पाकिस्तानी जवानों ने बॉर्डर पर सीजफायर का उल्लंघन किया। जवाब में बीएसएफ के जवानों ने भी फायरिंग की। गोलीबारी में बीएसएफ का एक जवान घायल हो गया है। बीएसएफ के प्रवक्ता ने बताया कि जवाबी एक्शन में पाकिस्तान को हुए नुकसान की अभी जानकारी नहीं है। घटना के बाद बीएसएफ के जवान बॉर्डर पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं। 18 सितंबर को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव की पहले फेज की वोटिंग होनी है। इससे सात दिन पहले उधमपर में एनकाउंटर और सीजफायर का उल्लंघन हुआ है। लिहाजा सुरक्षाबलों को अलर्ट पर रखा गया है।

राहुल गांधी के घर के बाहर भाजपा का प्रोटेस्ट

सिखों के अपमान का आरोप; राहुल बोले थे-सिखों की चिंता, क्या वे गुरूद्वारे जा सकेंगे

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली में राहुल गांधी के घर के बाहर बुधवार को भाजपा सिख प्रकोष्ठ ने प्रदर्शन किया है। उनका कहना है कि कांग्रेस नेता ने अमेरिका में जाकर भारत और सिखों का अपमान किया है। विदेश धरती में हमारे देश को बदनाम किया है। उन्हें इसको लेकर माफी मांगनी चाहिए। भाजपा नेता आरपी सिंह और अन्य सिख नेताओं को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। दरअसल, अमेरिका दौरे के दौरान मंगलवार को राहुल ने कहा था- 'भारत में सिख समुदाय के बीच इस बात की चिंता है कि उन्हें पगड़ी, कड़ा पहनने की इजाजत दी जाएगी या नहीं? क्या वे गुरुद्वारे जा सकेंगे? ये चिंता सिर्फ सिखों की नहीं बल्कि सभी धर्मों के लिए है।'

सुप्रीम कोर्ट : खनिजों पर रॉयल्टी बकाया की वसूली का मामला

राज्यों की याचिका पर सुनवाई के लिए गठित की जाएगी पीठ

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को झारखंड जैसे खनिज समृद्ध राज्यों की याचिकाओं पर सुनवाई के लिए एक पीठ गठित करने पर सहमति जताई। अदालत ने कहा कि याचिकाओं में केंद्र और खनन कंपनियों से हजारों करोड़ रुपये मूल्य के खनिज अधिकारों और खनिज युक्त भूमि पर रॉयल्टी और कर बकाया वसूलने की मांग की गई है। इसलिए याचिकाओं पर सुनवाई करने के लिए एक पीठ गठित की जाएगी। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय पीठ ने 25 जुलाई को 8:1 के बहुमत वाले फैसले में कहा था कि खनिज अधिकारों पर कर लगाने की विधायी शक्ति राज्यों के पास है, संसद में नहीं। इसके बाद 14 अगस्त को दिए गए आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने खनिज संपन्न राज्यों को बड़ी राहत देते हुए उन्हें खनिजों और खनिज-युक्त भूमि पर केंद्र सरकार से 12 वर्ष में क्रमबद्ध तरीके से रॉयल्टी तथा कर पर एक अप्रैल 2005 से बकाया लेने की बुधवार को अनुमति दे दी थी।

चुनाव के बीच हरियाणा विधानसभा भंग करने की सिफारिश

कैबिनेट में मंजूरी, गवर्नर से मिलने जाएंगे सीएम; संवैधानिक संकट से बचने को कदम उठाया

चंडीगढ़, 11 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा की बीजेपी सरकार ने चुनाव के बीच विधानसभा भंग करने की सिफारिश कर दी है। इसके लिए बुधवार शाम को कैबिनेट की अर्जेंट मीटिंग बुलाई गई थी। जिसमें विधानसभा भंग करने की सिफारिश को मंजूरी दी गई। अब आगे के फैसले के लिए 9.30 बजे सीएम सैनी गवर्नर बंडारू दत्तात्रेय से मिलने राजभवन जाएंगे।

विधानसभा भंग करने पर अंतिम मुहर गवर्नर लगाएंगे। प्रदेश में चुनाव के बीच ऐसी स्थिति बनने की वजह विधानसभा सत्र बुलाने का संवैधानिक संकट है। संविधान के मुताबिक अधिकतम 6 महीने के भीतर विधानसभा का एक सत्र बुलाना अनिवार्य है। नायब सैनी के सीएम बनने के बाद 6 महीने खत्म होने की आखिरी तारीख 12 सितंबर है। अब चुनाव के बीच सत्र बुलाना संभव नहीं है। वहीं अर्जेंट मीटिंग में कृषि मंत्री कंवरपाल गुर्जर, स्वास्थ्य मंत्री कमल गुप्ता, लोक निर्माण मंत्री डॉ बनवारी लाल, शहरी निकाय मंत्री सुभाष सुधा, परिवहन मंत्री असीम गोयल, खेल मंत्री संजय सिंह कैबिनेट मीटिंग में शामिल रहे।

मदरसा मामले में एनसीपीसीआर का सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा

कहा-शिक्षा का सही माहौल नहीं, मजहबी तालीम पर जोर

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के 22 मार्च के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर किया। दरअसल, हाईकोर्ट ने 'यूपी बोर्ड ऑफ मदरसा एजुकेशन एक्ट 2004' को रद्द कर दिया था। इसी फैसले को शीर्ष अदालत में चुनौती दी गई है।

मदरसे में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा व्यापक नहीं

एनसीपीसीआर का कहना है कि मदरसे में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा व्यापक नहीं है और इसलिए यह शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई एक्ट), 2009 के प्रावधानों के खिलाफ है। आयोग ने आगे कहा कि मदरसों में बच्चों को औपचारिक और सही गुणवत्ता की शिक्षा नहीं मिल रही है। मदरसे शिक्षा के अधिकार कानून के तहत भी नहीं आते इसलिए वहां के बच्चे आरटीई एक्ट के तहत मिलने वाले लाभ नहीं ले पाते। आगे कहा कि बच्चों को न केवल एक उपयुक्त शिक्षा से वंचित किया जाता है, बल्कि एक स्वस्थ वातावरण और विकास के बेहतर अवसरों से भी वंचित किया जाता है। उन्हें मिड डे मील, यूनिफॉर्म और प्रशिक्षित टीचरों जैसी सुविधाएं नहीं मिल पाती। मदरसों में कई शिक्षक ऐसे होते हैं, जिन्हें कुरान और धार्मिक ग्रंथों की जानकारी के आधार पर नियुक्त कर लिया जाता है। उन्होंने खुद ही शिक्षक बनने के लिए जरूरी ट्रेनिंग नहीं ली होती है।

गैर-मुस्लिमों को इस्लामी धार्मिक शिक्षा दी जा रही

हलफनामे में कहा गया, 'ऐसे संस्थान गैर-मुस्लिमों को इस्लामी धार्मिक शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं, जो भारत के संविधान के अनुच्छेद 28 (3) का उल्लंघन है। मदरसे में शिक्षा प्राप्त करने वाला बच्चा स्कूल में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के बुनियादी ज्ञान से वंचित रहेगा।' आयोग ने कहा कि मदरसे न केवल शिक्षा के लिए असंतोषजनक और अपर्याप्त मॉडल पेश करते हैं, बल्कि उनके कामकाज का तरीका भी मनमाना है जो पूरी तरह से शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 29 के तहत निर्धारित पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया का अभाव है।

बारिश के बाद इलेक्ट्रिक पोल से करंट लगने से रिक्शा ड्राइवर की मौत

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के करोलबाग इलाके में एक रिक्शा ड्राइवर की मौत का मामला सामने आया है। क्षेत्र के नाई वालान इलाके में बारिश के दौरान हाई मास्क पोल में उतरे करंट से एक लोडिंग रिक्शा चालक की मौत हो गई। बता दें कि बारिश के बाद इलाके में जल भराव के बाद पोल में करंट उतर गया था, जिसकी चपेट में मदन लाल नाम का रिक्शा ड्राइवर आ गया और उसकी मौत हो गई। घटना देर शाम की है। हादसे के बाद मदन लाल को पास के अस्पताल में ले जाया गया, जहां उसे डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मदन लाल उत्तर प्रदेश के बहराइच का रहने वाला था और दिल्ली के बदरपुर में रहता था। शख्स की मौत होने के बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जम्मू-कश्मीर के अखनूर में पाकिस्तान की तरफ से फायरिंग

बीएसएफ जवान घायल, दिया जा रहा जवाब

जम्मू, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कश्मीर इस वक्त बड़ी खबर जम्मू-कश्मीर के अखनूर से आ रही है जहां बुधवार की सुबह करीब 2:35 मिनट पर सीमा पार पाकिस्तान की ओर से अकारण गोलीबारी की घटना सामने आई है। हालांकि इस गोलीबारी का बीएसएफ ने बहादुरी से जवाब दिया लेकिन इस जवाबी कार्रवाई में बीएसएफ का एक जवान घायल हो गया है।

अब सीमा पर तैनात जवान पूरी तरह से हाई अलर्ट पर हैं। गोलीबारी की यह घटना ऐसे समय में सामने आई है जब बीएसएफ के एक आला अधिकारी का बयान एक दिन पहले ही आया था, जिसमें कहा गया था कि सीमाओं पर घुसपैठ

पर रोक के लिए उपाय किए गए हैं ताकि जम्मू-कश्मीर में 370 हटने के बाद पहली बार होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों में आतंकवादी घुसपैठ कर गड़बड़ी न कर सकें।

दो आतंकवादी मारे गए

बयान में कहा गया था, "सीमाएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं क्योंकि बीएसएफ ने पुलिस समेत सहयोगी एजेंसियों के साथ घुसपैठ विरोधी सभी जरूरी इंतजाम किए हैं। मैं सभी को आश्वस्त करना चाहता हूं कि ऐसी कोई एक्टिविटी नहीं होगी। इससे पहले इंडियन आर्मी ने कहा था कि जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में एलओसी के पास नौशेरा इलाके में रविवार और सोमवार की रात को शुरू किए गए घुसपैठ विरोधी ऑपरेशन में घुसपैठ की कोशिश कर रहे दो आतंकियों को मार गिराया गया था।

एक्स पर किया था पोस्ट

दहशतगर्दों के पास से भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद किया गया। यह जानकारी सुरक्षाबलों की ओर से दी गई। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट कर लिखा, "दो आतंकवादियों को मार गिराया गया है और दो एके-47 और एक पिस्तौल समेत बड़ी मात्रा में युद्ध जैसे सामान बरामद किए गए हैं। वहीं इससे भी पहले जम्मू के सुंजवान आर्मी बेस के बाहर आतंकवादियों की ओर से की गई गोलीबारी में एक सैनिक घायल हो गया था, जिसने बाद में अस्पताल में दम तोड़ दिया था।

एनएमसी से निष्पक्ष तरीके से काम करने की उम्मीद

शीर्ष अदालत ने 10 लाख रुपये जुर्माने के साथ खारिज की याचिका

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने केरल उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज करते हुए कहा कि राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) राज्य का एक अंग है और उससे निष्पक्ष और उचित तरीके से काम करने की उम्मीद की जाती है। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के लिए 150 से 250 सीटें बढ़ाने के लिए एक मेडिकल कॉलेज को दी गई मंजूरी वापस लेने से संबंधित मामले में एनएमसी और अन्य द्वारा दायर याचिकाओं पर विचार कर रही थी। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि किसी पक्ष को अनुमति लेने के लिए अदालत दर अदालत दौड़ाना, खासकर तब जब संस्थान 18 साल से काम कर रहा हो, केवल संस्थान को परेशान करने का प्रयास है। पीठ ने 9 सितंबर को पारित अपने आदेश में कहा, प्रथम दृष्टया, हम पाते हैं कि एनएमसी का रवैया आदर्श वादी जैसा नहीं है। एनएमसी राज्य का अंग है और उससे निष्पक्ष और उचित तरीके से काम करने की उम्मीद की जाती है। मामले में पीठ ने आगे कहा, इसलिए, हमारा मानना है कि वर्तमान विशेष अनुमति याचिकाएं कानून की प्रक्रिया का दुरुपयोग हैं और इसलिए, इस आदेश की तारीख से चार सप्ताह के भीतर 10 लाख रुपये की राशि का भुगतान करने के साथ इसे खारिज किया जाता है। पीठ ने कहा कि एनएमसी और अन्य ने उच्च न्यायालय के 13 अगस्त के आदेश को चुनौती दी है, जिसमें मेडिकल कॉलेज को अंडरटेकिंग दाखिल करने का निर्देश दिया गया था।

भूकंप के तेज झटकों से हिली दिल्ली-एनसीआर

डरे सहमे लोग अपने घरों से निकले बाहर

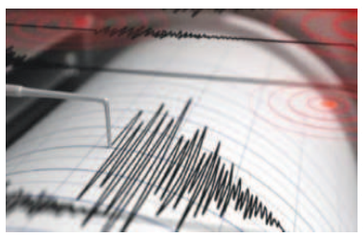

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बुधवार को दिल्ली-एनसीआर में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 5.8 दर्ज की गई है। भूकंप के झटके महसूस होने के बाद लोग अपने घरों और कर्मचारी अपने-अपने ऑफिसों से बाहर निकल आए। गनीमत रही कि इस भूकंप से किसी प्रकार के जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं आई है।

विशेषज्ञों के अनुसार, इस भूकंप का केंद्र पाकिस्तान में था। कब आता है भूकंप भूकंप तब आता है जब धरती के अंदर मौजूद टेक्टोनिक प्लेट्स आपस में टकराती हैं, रगड़ती हैं, एक-दूसरे के ऊपर चढ़ जाती हैं, या फिर एक-दूसरे से दूर हो जाती हैं। धरती के अंदर कुल सात टेक्टोनिक प्लेट्स हैं, जो लगातार घूमती रहती हैं।

गृह मंत्री अमित शाह ने राहुल गांधी पर साधा निशाना

कहा- उन्होंने देश की सुरक्षा और भावना को हमेशा आहत किया

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा है और सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट किया है। अमित शाह ने कहा, 'देशविरोधी बातें करना और देश को तोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े होना राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आदत सी बन गई है। चाहें जम्मू-कश्मीर में जेकेएनसी के देशविरोधी और आरक्षण विरोधी एजेंडे का समर्थन करना हो, या फिर विदेशी मंचों पर भारत विरोधी बातें करनी हो, राहुल गांधी ने देश की सुरक्षा और भावना को हमेशा आहत किया है।' अमित शाह ने कहा, 'भाषा से भाषा, क्षेत्र से क्षेत्र और धर्म से धर्म में भेदभाव लाने की बात करना राहुल गांधी की विभाजनकारी सोच को दर्शाता है। राहुल गांधी ने देश से आरक्षण को समाप्त करने की बात कह कर कांग्रेस का आरक्षण विरोधी चेहरा एक बार फिर से देश के सामने लाने का काम किया है। मन में पड़े विचार और सोच किसी न किसी माध्यम से बाहर आ ही जाते हैं।' शाह ने कहा, 'मैं राहुल गांधी को बताना चाहता हूं कि जब तक बीजेपी है, आरक्षण को कोई छू भी नहीं सकता और देश की एकता के साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता।'

अमेरिका यात्रा पर हैं राहुल गांधी

राहुल गांधी तीन दिनों की यात्रा पर अमेरिका में हैं। हालही में उन्होंने भारत के लोकसभा चुनावों को लेकर कहा था कि लोकसभा चुनाव 2024 को वह स्वतंत्र चुनाव के रूप में नहीं देखते। अमेरिका के वाशिंगटन डीसी में राहुल गांधी ने कहा था कि चुनावों से पहले, हम इस विचार पर जोर देते रहे कि संस्थाओं पर कब्जा कर लिया गया है। राहुल ने कहा था कि आरएसएस ने शिक्षा प्रणाली पर कब्जा कर लिया है। मीडिया और जांच एजेंसियों पर कब्जा कर लिया है। हम यह कहते रहे लेकिन लोगों को यह समझ में नहीं आ रहा था। लेकिन मैंने संविधान को आगे रखना शुरू किया और मैंने जो कुछ भी कहा था, वह अचानक से फूट पड़ा। गरीब भारत, उत्पीड़ित भारत, जिसने यह समझ लिया कि अगर संविधान खत्म हो गया तो पूरा खेल खत्म हो जाएगा।

रतलाम के एसपी राहुल कुमार लोढा का ट्रांसफर

क्या गणेश चतुर्थी पर हुई घटना बनी वजह?

रतलाम, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के गृह विभाग ने तीन आईपीएस अधिकारियों के तबादले की सूची जारी की है। इनमें रतलाम और नरसिंहपुर एसपी बदल दिए गए हैं। रतलाम में गणेश स्थापना के दिन हुए उपद्रव के मामले में हिंदू संगठनों ने पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाए गए थे। जिसके बाद अचानक रतलाम एसपी राहुल कुमार लोढा का तबादला कर दिया गया है। गृह विभाग के सचिव ओमप्रकाश श्रीवास्तव ने तीन आईपीएस अधिकारियों के तबादले की सूची जारी है।

रतलाम एसपी राहुल कुमार को पुलिस अधीक्षक रेल भोपाल बनाकर नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनके स्थान पर साल 2016 बैच के अधिकारी अमित कुमार को पुलिस अधीक्षक नरसिंहपुर से पुलिस अधीक्षक रतलाम के रूप में पदस्थ किया गया है। इसी प्रकार पुलिस अधीक्षक रेल भोपाल मृगाखी डेका को पुलिस अधीक्षक नरसिंहपुर बनाकर नई जिम्मेदारी दी गई है।

पीएम मोदी की सभा में बम ब्लास्ट करने वाले दोषियों को उम्र कैद, पटना एचसी का फैसला

पटना, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पटना के गांधी मैदान में नरेंद्र मोदी की सभा में बम ब्लास्ट करने वाले सभी चार दोषियों की सजा को पटना हाई कोर्ट ने उम्र कैद में तब्दील की है।

इन चार दोषियों को निचली अदालत से फांसी की सजा सुनाई गई थी। बुधवार (11 सितंबर) को कोर्ट ने इस पर अपना अहम फैसला सुनाया। इस मामले में चार दोषियों की फांसी की सजा को अब 30 साल कैद में बदल दिया है, जबकि आजीवन कारावास की सजा पाए दो लोगों की सजा बरकरार रखी है। सीरियल ब्लास्ट का ये मामला 27 अक्टूबर 2013 का है, जब गांधी मैदान पटना में नरेंद्र मोदी एक जनसभा को संबोधित करने आए थे। दरअसल आरोपियों ने निचली अदालत के फैसले को पटना हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। इस संबंध में पटना के गांधी मैदान थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। इसके बाद 31 अक्टूबर 2013 को एनआईए ने केस अपने हाथ में ले लिया था। कोर्ट ने बुधवार को दोषी इम्तियाज आलम, हैदर अली, नुमान अंसारी और मोजिबुल्ला अंसारी की फांसी की सजा में बदलाव कर दिया। जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने इस मामले पर सुनवाई पूरी करने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था, जिसे आज सुनाया गया।

शक होने पर पति ने की गला दबाकर पत्नी की हत्या, मासूम के सामने लाश छोड़ हो गया फरार

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली के वजीराबाद इलाके से पति-पत्नी के पवित्र संबंधों के साथ इंसानियत की हत्या करने वाला सनसनीखेज मामला सामने आया है। खबर यह है कि एक पति पत्नी पर अवैध संबंधों का शक होने की वजह से इतना परेशान हुआ कि उसने हैवानियत की सारी हदें पार कर दी। पति ने अपनी पत्नी की गला दबाकर हत्या करने के बाद उसकी लाश को मासूम बच्चों के सामने छोड़कर मौके से फरार हो गया। हत्या की यह वारदात दिल्ली के वजीराबाद थाना इलाके की है। चार सितंबर की रात शख्स ने पहले तो गला दबाकर अपनी पत्नी की हत्या की

फारूक अब्दुल्ला की बढ़ेंगी मुश्किलें?

करप्शन मामले में नए आरोपों के साथ कोर्ट पहुंची ईडी

जम्मू, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कश्मीर में विधानसभा चुनाव को लेकर प्रचार जोरों पर है। इसी बीच नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आई है। जम्मू-कश्मीर क्रिकेट एसोसिएशन (जेकेसीए) में कथित वित्तीय अनियमितता मामले में जांच एजेंसी ईडी ने श्रीनगर कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। जानकारी के अनुसार, ईडी ने इस मामले में फारूक के खिलाफ नए आरोपों के साथ आवेदन दायर किया है। बता दें कि पिछले महीने जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट ने पीएमएलए के तहत आरोपपत्र को रद्द करके फारूक और सह आरोपियों को राहत दी थी क्योंकि मूल मामला सीबीआई के आरोपपत्र से तय किया गया था। अब इस मामले में नया आवेदन दिया गया है। चर्चा है कि इस मामले में फारूक अब्दुल्ला के खिलाफ नया मामला दर्ज किया जा सकता है। हाल ही में फारूक अब्दुल्ला ने कहा था कि जबतक चुनाव नहीं हो जाते हैं तब तक केंद्र सरकार की ओर से उन्हें परेशान किया जाता रहेगा। उनपर नए-नए आरोप लगाए जाते रहेंगे। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा की 90 सीटों के लिए तीन चरणों में मतदान होना है। इस चुनाव में फारूक अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का गठबंधन है। इस गठबंधन को लेकर हाल ही में फारूक अब्दुल्ला ने कहा था कि कांग्रेस के साथ उनकी पार्टी का गठबंधन कोई मजबूरी नहीं बल्कि जम्मू-कश्मीर के विकास और पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए समय की जरूरत है।

तीन चरणों में होगा जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव

आपको बता दें कि जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 के खात्मे के लंबे अंतराल के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। केंद्र शासित प्रदेश में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को तीन चरणों में मतदान होगा। चुनाव परिणाम 8 अक्टूबर को घोषित किए जाएंगे।

गर्लफ्रेंड के साथ जाम गेट घूमने गए ट्रेनी अफसर को लूटा, दिनदहाड़े हुई वारदात

इंदौर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर के पास स्थित पर्यटन स्थल जाम गेट पर उस वक्त हड़कंप मच गया, जब आर्मी के ट्रेनिंग अफसर के साथ कुछ बदमाशों ने लूट की वारदात को अंजाम देने की कोशिश की है। ट्रेनिंग अफसर अपनी महिला मित्र के साथ जाम गेट पहुंचे थे, जहां उनके साथ लूट की वारदात को अंजाम दिया गया है। ट्रेनिंग अफसर कार में अपनी महिला मित्र के साथ बैठे थे, तभी उस वक्त 5 से 6 बदमाश उनके पास आए, और महिला मित्र को बंधक बनाकर आर्मी अफसर से पैसों की मांग करने लगे। कुछ देर बाद जब बदमाशों को पता चला कि, जिसके साथ वारदात को अंजाम दिया जा रहा है, वह आर्मी अफसर है तो बदमाश वहां से फरार हो गए। जानकारी के मुताबिक, पूरा वाक्या बुधवार की सुबह जाम गेट पर घटित हुआ, जब आर्मी अफसर अपनी महिला मित्र के साथ जाम गेट घूमने गए थे, तभी जाम गेट घूमने के बाद जब आर्मी ऑफिसर अपनी महिला मित्र के साथ कार में बैठे हुए थे, तभी अचानक 5 से 6 लोग मौके पर पहुंचे और आर्मी अफसर से पैसों की मांग की, जहां पैसे नहीं देने पर बदमाशों ने आर्मी अफसर की महिला मित्र को बंधक बना लिया। इसके बाद आर्मी ऑफिसर से पैसे लाने के लिए कहा, वहीं जैसे ही बदमाशों को पता चला जिसके साथ लूट की वारदात की जा रही है,

अजित पवार ने नकारी सीएम पद की मांग करने की बात, फ्रेंडली फाइट से भी इनकार

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में कुछ ही समय बाद विधानसभा चुनाव का आयोजन किया जाना है। हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र का दौरा किया था और भाजपा, शिवसेना और एनसीपी के नेताओं के साथ बैठक की थी। इस बैठक के बाद ऐसी खबरें सामने आ रही थीं कि उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अमित शाह से महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का पद मांगा था। हालांकि, अब अजित पवार ने इस दावे को सिरे से नकार दिया है। अजित पवार ने इस बात से भी इनकार कर दिया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्य की 25 विधानसभा सीटों पर दोस्ताना लड़ाई का प्रस्ताव दिया है।

क्या आई थी बैठक के बाद खबर?

अमित शाह के साथ बैठक के बाद खबरें आई थीं कि एनसीपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजित पवार ने महाराष्ट्र में बिहार पैटर्न लागू करने और विधानसभा चुनाव के बाद खुद को मुख्यमंत्री बनाने की मांग की थी। साथ ही ये भी खबरें थीं कि जिन सीटों को लेकर दलों में खींचतान है ऐसी 25 सीटों पर फ्रेंडली फाइट का प्रस्ताव दिया गया है। हालांकि, अजित पवार ने इन सभी दावों का खंडन कर दिया है।

क्या बोले अजित पवार?

अजित पवार ने कहा है कि सीएम पद की मांग या 25 सीटों पर दोस्ताना लड़ाई की खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। अजित पवार ने कहा कि सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ अपनी बैठक के दौरान, मैंने कपास, सोयाबीन और प्याज उत्पादकों की समस्याओं सहित कई मुद्दों पर चर्चा की। पवार ने कहा कि मैंने प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध नहीं लगाने की अपील की है। दि किसानों को प्याज की बिक्री से अधिक दाम मिल रहा है तो मिलना चाहिए। इसके साथ ही एमएसपी बढ़ाने पर भी बात हुई है।

सीट-बंटवारे का फॉर्मूला अभी तय नहीं

अजीत पवार ने जानकारी दी है कि महायुति में सीट-बंटवारे के फॉर्मूले को अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया गया है। पवार ने कहा है कि फॉर्मूले के तैयार होने के बाद इस बारे में जानकारी दी जाएगी।

डूसू इलेक्शन को लेकर बड़ी खबर, दिल्ली हाई कोर्ट ने डीयू के कुलपति को दिया निर्देश

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति और अन्य संबंधित प्रतिवादियों को दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) चुनावों में 50% महिला आरक्षण लागू करने की मांग करने वाले एक अभ्यावेदन पर विचार करने का निर्देश दिया है। न्यायालय का यह निर्देश छात्र संघ चुनावों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की मांग करने वाली एक याचिका के बाद आया है। याचिका में तर्क दिया गया है कि संघ में महिलाओं के वर्तमान प्रतिनिधित्व की कमी उनके अधिकारों का उल्लंघन है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने की उनकी क्षमता में बाधा डालती है। अदालत ने प्राधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अभ्यावेदन पर विचार करें और तीन सप्ताह के भीतर डूसू चुनावों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) के लिए शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के लिए चुनाव 27 सितंबर को होने हैं। नामांकन दाखिल करने की विंडो 17 सितंबर तक खुली है। जो उम्मीदवार अपना नामांकन वापस लेना चाहते हैं, वे 18 सितंबर को दोपहर 12 बजे तक ऐसा कर सकते हैं, और उसी दिन शाम 5 बजे तक चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की अंतिम सूची प्रकाशित की जाएगी।

संजय राउत का बड़ा आरोप, 'महाराष्ट्र बीजेपी अध्यक्ष के बेटे की ऑडी से बीफ कटलेट का बिल मिला'

नागपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। नागपुर में महाराष्ट्र बीजेपी चीफ के बेटे की कार ने कुछ दिन पहले कई गाड़ियों को टक्कर मार दी थी। इस सड़क हादसे के बाद पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया। इस हादसे को लेकर महाराष्ट्र में सियासी पारा भी हाई है। उद्धव ठाकरे गुट के सांसद संजय राउत ने बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले के बेटे पर गंभीर आरोप लगाये हैं। संजय राउत ने आरोप लगाते हुए कहा कि, ऑडी कार से बीफ कटलेट का बिल मिला है, जो गाड़ी महाराष्ट्र बीजेपी अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले के बेटे की है। बीफ खाने वाले ही हिंदुत्व की बात करते हैं। संजय राउत ने यह भी कहा कि देवेंद्र फडणवीस घटिया गृहमंत्री हैं, इतना घटिया गृहमंत्री इतिहास में कभी नहीं मिला। राउत ने आगे कहा, नागपुर में रास्ते पर किसी आम आदमी ने एक्सीडेंट किया होता तो क्या होता। गृहमंत्री देवेंद्र फडणवीस फेल हैं। उनके जितना घटिया होम मिनिस्टर महाराष्ट्र को आज से पहले नहीं मिला। काले अक्षर में उनका नाम लिखा जाएगा। उस गाड़ी से लाहौरी बार का बिल मिला है। जो गाड़ी चला रहा था वह कौन है। बार के बिल में दारू का बिल है, साथ ही चिकन, मटन, बीफ कटलेट का बिल है। ये उनका हिंदुत्व है। बीफ कटलेट भी उन्होंने खाया। मॉब लिंचिंग ये करते हैं, खुद बीफ खाते हैं और दूसरे को निशाना बनाते हैं। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के सांसद संजय राउत ने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर निशाना साधते हुए कहा कि वह राज्य के गृह विभाग का नेतृत्व करने योग्य नहीं हैं और जब तक वह इस पद पर हैं तब तक किसी भी मामले में निष्पक्ष जांच नहीं हो सकती।

अमेरिका में राहुल गांधी के बयान पर भड़के सीएम एकनाथ शिंदे 'उनके घटिया विचारों से देश कभी सहमत नहीं हो सकता

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के आरक्षण वाले बयान को लेकर सीएम एकनाथ शिंदे ने निशाना साधा है। 'एक्स' पर एक पोस्ट में सीएम शिंदे ने कहा, राहुल गांधी के विचार उनकी ओछी मानसिकता को दर्शाता है, राहुल गांधी जब भी विदेश जाते हैं वहां जाकर देश के खिलाफ जहर उगलते हैं। राहुल गांधी के घटिया विचारों से देश कभी सहमत नहीं हो सकता। एकनाथ शिंदे ने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए आगे कहा, धर्म और जाति के नाम पर राजनीति करना कांग्रेस की आदत रही है।

संविधान और आरक्षण को लेकर भ्रम फैलना उनका फैशन बन चुका है। राहुल गांधी का आरक्षण विरोधी चेहरा अब दुनिया के सामने आ गया है। महायुति की सरकार आरक्षण को पूरा समर्थन करती है और जब तक शिवसेना का यह सच्चा सैनिक है, कभी आरक्षण को खत्म नहीं होने देगा। बता दें, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय में कहा था, कांग्रेस पार्टी आरक्षण खत्म करने के बारे में तब सोचेगी, जब भारत में आरक्षण के लिहाज से निष्पक्षता होगी और अभी ऐसा नहीं है।

यहां विश्वविद्यालय के छात्रों ने राहुल से आरक्षण को लेकर सवाल किया था और पूछा था कि यह कब तक जारी रहेगा। इस पर उन्होंने कहा, ''जब भारत में (आरक्षण के लिहाज से) निष्पक्षता होगी, तब हम आरक्षण खत्म करने के बारे में सोचेंगे। अभी भारत इसके लिए एक निष्पक्ष जगह नहीं है।''राहुल ने कहा, ''जब आप वित्तीय आंकड़ों को देखते हैं, तो आदिवासियों को 100 रुपये में से 10 पैसे मिलते हैं। दलितों को 100 रुपये में से पांच रुपये मिलते हैं और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लोगों को भी लगभग इतने ही पैसे मिलते हैं। सचाई यह है कि उन्हें उचित भागीदारी नहीं मिल रही है।''

सुविचार: प्रेम, घृणा का रूप भले ही ले ले, उसे मैत्री में परिवर्तित करना असंभव होगा।

पुलिस अधिकारी होना सिर्फ़ एक नौकरी ही नहीं बल्कि एक भावना : रेवंत रेड्डी

सीएम ने साल के अंत तक 35 हजार नई सरकारी नौकरियों की घोषणा की

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने सरकारी रोजगार के संबंध में एक और महत्वपूर्ण घोषणा की है। रेवंत रेड्डी ने घोषणा की कि "उनके प्रशासन के पहले दो महीनों के भीतर, 30 हजार से अधिक पद पहले ही भरे जा चुके हैं। अब, हमने इस साल के अंत तक अतिरिक्त 35 हजार नौकरियों की पेशकश करने का फैसला किया है।" मुख्यमंत्री बुधवार को तेलंगाना पुलिस अकादमी में आयोजित एसआई पासिंग आउट परेड में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने पुलिस सम्मान गार्ड प्राप्त किया और नव प्रशिक्षित उप-निरीक्षकों (एसआई) को हार्दिक बधाई दी, उन्होंने कहा कि यह घटना न केवल अधिकारियों के लिए बल्कि उनके लिए भी एक यादगार घटना है।

तेलंगाना के गठन के बाद की यात्रा पर विचार करते हुए, मुख्यमंत्री ने छात्रों, कार्यकर्ताओं और जनता के बीच व्यापक असंतोष को स्वीकार किया। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनकी सरकार की स्थापना के बाद, बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। उन्होंने तेलंगाना लोक सेवा आयोग के पुनर्गठन का भी उल्लेख किया, जो सक्रिय रूप से रिक्तियों को भर रहा है। मुख्यमंत्री ने तेलंगाना में नशीली पदार्थो के बढ़ते प्रभाव के बारे में चिंताओं को भी संबोधित किया, उन्होंने कहा कि कुछ व्यक्ति नशे की लत के शिकार हो गए हैं। राज्य सरकार द्वारा नशीली दवाओं और नशीले पदार्थों के खिलाफ सख्त कार्रवाई किए जाने की बात कहते हुए, रेवंत रेड्डी ने पुलिस बल पर पूरा भरोसा जताया और उनसे साइबर अपराध और नशीली दवाओं के खतरे जैसे मुद्दों से समर्पण के साथ निपटने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा, "पुलिस अधिकारी होना सिर्फ़ एक नौकरी नहीं है; यह एक भावना है, एक ज़िम्मेदारी है।" कानून प्रवर्तन मुद्दों को संबोधित करने के अलावा, मुख्यमंत्री ने तेलंगाना में निवेश को बढ़ावा देने और पारंपरिक व्यवसायों का समर्थन करने के लिए सरकार के प्रयासों के बारे में बात की। उन्होंने गर्व से उल्लेख किया कि, देश के इतिहास में पहली बार, कृषि विकास का समर्थन करने के लिए किसानों के खातों में सीधे 18,000 करोड़ जमा किए गए हैं। अवैध अतिक्रमणों के बारे में बोलते हुए, रेवंत रेड्डी ने दृढ़ता से कहा कि झीलों पर अतिक्रमण करने वालों के लिए कोई नरमी नहीं बरती जाएगी। यह कहते हुए कि हाइड्रा की स्थापना केवल अतिक्रमित झीलों को पुनः प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई है, मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी कि इसमें शामिल व्यक्तियों की स्थिति या शक्ति की परवाह किए बिना, झीलों के आसपास अवैध निर्माण को ध्वस्त कर दिया जाएगा।

उन्होंने अतिक्रमणकारियों से स्वेच्छा से क्षेत्र खाली करने, उन्हें सिंचाई विभाग को सौंपने या तत्काल ध्वस्तीकरण का सामना करने का आग्रह किया। रेवंत रेड्डी ने जोर देकर कहा कि उनका प्रशासन फुल टैंक लेवल (एफटीएल) जोन, बफर जोन और नालों (जल निकासी चैनल) सहित सभी अवैध निर्माणों को हटाने के लिए दृढ़ संकल्प है। "भले ही आप अदालत में जाएं, हम वहां भी लड़ेंगे। हम आपके अतिक्रमण हटाएंगे," उन्होंने जोर देकर कहा। इसके अलावा, रेवंत रेड्डी ने केंद्र सरकार की सहायता से मूसी नदी को साफ करने, अतिक्रमण हटाने और रिवरफ्रंट विकसित करने की अपनी योजना के बारे में बात की। उन्होंने रिवरफ्रंट के किनारे वंचितों के लिए व्यावसायिक अवसरों का वादा किया। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) जितेंद्र ने न केवल अपराधों का जवाब देने, बल्कि उन्हें रोकने के लिए काम करने वाले पुलिस अधिकारियों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने निरंतर तकनीकी अपडेट और टीम वर्क की आवश्यकता पर जोर दिया। तेलंगाना पुलिस अकादमी में पासिंग आउट परेड में कुल 547 सब-इंस्पेक्टर शामिल हुए, जिनमें 145 महिला और 402 पुरुष अधिकारी शामिल थे।

कांग्रेस की महिला नेता ने बीआरएस विधायक को थप्पड़ मारने की चेतावनी दी

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। महिला निगम की अध्यक्ष बंदरू शोभा रानी ने बीआरएस विधायक पाडी कौशिक रेड्डी को चेतावनी दी है कि अगर वह महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करना जारी रखते हैं, तो उन्हें थप्पड़ मारा जाएगा। बुधवार को गांधी भवन में एक संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए शोभा रानी ने हुजूराबाद के विधायक पाडी कौशिक रेड्डी की महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी के लिए कड़ी आलोचना की और उन पर महिलाओं का इस्तेमाल कर अपनी राजनीतिक स्थिति को सुरक्षित करने का आरोप लगाया। 'तेलंगाना की महिलाओं में संघर्ष की प्रबल भावना है। पाडी कौशिक रेड्डी महिलाओं के पीछे छिपकर विधायक बने हैं। अगर उन्हें लगता है कि वह महिलाओं को चूड़ियां बांट सकते हैं, तो उन्हें सबसे पहले पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव को चूड़ियां भेजनी चाहिए। बीआरएस का जन्म ही अन्य दलों के नेताओं के प्रवेश से हुआ है। उन्हें याद रखना चाहिए कि केसीआर की राजनीतिक उत्पत्ति कहां से हुई है। महिलाओं के बारे में बुरा बोलने से पहले उन्हें दो बार सोचना चाहिए। हम उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हैं। हम पुलिस में शिकायत दर्ज कराएंगे। महिला आयोग को उनकी टिप्पणी का स्वत: संज्ञान लेना चाहिए और उन्हें जांच के लिए बुलाना चाहिए। शोभा रानी ने कहा, "हम विधानसभा अध्यक्ष से उन्हें विधानसभा से निलंबित करने का आग्रह कर रहे हैं।" प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौजूद आर्य वैश्य निगम की अध्यक्ष कलवा सुजाता ने कड़े शब्दों में कहा, "बीआरएस विधायक पदी कौशिक रेड्डी को परिणाम भुगतने का समय आ गया है। तेलंगाना कार्यकर्ताओं पर पत्थर फेंकने का उनका इतिहास रहा है। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चे का इस्तेमाल करके मतदाताओं की सहानुभूति का फायदा उठाकर जीत हासिल की। अब, वह ऐसे बोल रहे हैं जैसे वह एक नेक नेता हों। अगर वह महिलाओं का अपमान करना जारी रखते हैं, तो उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

प्रजावाणी कार्यक्रम में कुल 527 आवेदन प्राप्त हुए

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बुधवार को महात्मा ज्योतिबा पूले प्रजा भवन में आयोजित प्रजावाणी कार्यक्रम में कुल 527 आवेदन प्राप्त हुए।

अधिकारियों ने बताया कि राजस्व संबंधी 80, विद्युत विभाग से संबंधित 79, अल्पसंख्यक कल्याण से संबंधित 68, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग से संबंधित 63 तथा अन्य विभागों से संबंधित 237 आवेदन प्राप्त हुए है. कार्यक्रम में राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. चिन्ना रेड्डी, लोक प्रशासन विशेष अधिकारी श्रीमती दिव्या ने भाग लिया और आवेदन प्राप्त किये। उन्होंने प्रजा भवन में आये लोगों से उनकी समस्याएं पूछीं।

छात्रा को समय पर चिकित्सा सहायता प्रदान वाले कंडक्टर व चालक सम्मानित

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीते 9 सितंबर को बस बैंसा से निर्मल जा रही थी, जब दिलावरपुर पहुंची तो 12 साल की छात्रा किरण को अचानक दिल का दौरा पड़ गया। यह देख कंडक्टर जी गंगाधर ने बस एक तरफ रोक दी। ड्राइवर बी गंगाधर के साथ मिलकर उन्हें प्राथमिक उपचार दिया गया। तबीयत बिगड़ने पर किरण को तुरंत बस से पास के नरसापुर पीएचसी में ले जाया गया।

डॉक्टरों ने बताया कि समय रहते अस्पताल लाने से किरण की जान बच गई। इस मौके पर टीजीएसआरटीसी के एमडी वीसी सज्जनर ने ड्राइवर बी. गंगाधर और कंडक्टर बी. गंगाधर की सराहना की, जिन्होंने समय रहते 12 वर्षीय छात्र की जान बचाई। उन्होंने कहा कि यह बड़ी बात है कि आरटीसी स्टाफ आपात स्थिति में सेवा दक्षता का परिचय दे रहा है। यात्रियों को उनके गंतव्य तक सुरक्षित पहुंचाने के अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए भी उनकी सराहना की जाती है कि वे जरूरत के समय वहां मौजूद हैं। इस सम्मान समारोह में कंपनी के सीईओ डॉ. रविंदर, संयुक्त निदेशक अपूर्व राव, कार्यकारी निदेशक मुनिशेखर, वित्त सलाहकार विजयपुष्फा, मुख्य यातायात प्रबंधक श्रीदेवी, मुख्य कार्मिक प्रबंधक उषादेवी, बैंसा डिपो प्रबंधक हरिप्रसाद व अन्य शामिल हुए।

मंत्री कोमाटीरेड्डी को बाउमा कॉनएक्सपो इंडिया 2024 के लिए आमंत्रित किया गया

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। ग्रेटर नोएडा में 11 से 14 दिसंबर तक आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित "बाउमा कॉनएक्सपो इंडिया 2024" के प्रतिनिधियों ने सड़क एवं भवन मंत्री कोमाटीरेड्डी वेंकट रेड्डी को मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण दिया है। यह एक्सपो अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर्स (एईएम) और मेसे म्यूनिख इंडिया के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। प्रतिनिधियों ने मंत्री को एक्सपो के बारे में जानकारी दी, जिसमें निर्माण उद्योग में अत्याधुनिक उपकरण और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया है। इसमें विभिन्न देशों की 1,000 से अधिक कंपनियों के भाग लेने की उम्मीद है, जो अपने उत्पादों और नवाचारों का प्रदर्शन करेंगी। इस कार्यक्रम में तकनीकी सत्र और उत्पाद समाधान प्रस्तुतियाँ भी शामिल होंगी, जिनका उद्देश्य उद्योग की अंतर्दृष्टि और उन्नति को साझा करना है। केंद्रीय भूतल परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे। मंत्री वेंकट रेड्डी के साथ बैठक के दौरान, प्रतिनिधियों ने एक्सपो की एक दृश्य प्रस्तुति दी, जिसमें इसकी वार्षिक प्रगति और वैश्विक प्रतिक्रिया का विवरण दिया गया। उन्होंने दुनिया भर से सुरंग प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति पर प्रकाश डालने वाली एक विशेष वीडियो प्रस्तुति भी दिखाई।

हैदराबाद सिटी पुलिस कमिश्नर सीवी आनंद ने बुधवार को मंत्री श्रीधर बाबू और सीताक्का से शिष्टाचार मुलाकात की।

तेलंगाना हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज वाला एकमात्र राज्य बन गया: हरीश राव

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीएसआर के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री हरीश राव ने आज कहा कि तेलंगाना हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज वाला एकमात्र राज्य बन गया है। उन्होंने कहा कि उन्हें यह देखकर गर्व है कि तेलंगाना ने एक ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल किया है, जो भारत का एकमात्र राज्य बन गया है जिसके पास हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज है। हाल ही में चार नए मेडिकल कॉलेजों की मंजूरी के साथ, राज्य में अब 34 सरकारी मेडिकल कॉलेज हैं, जो तेलंगाना राज्य गठन से पहले सिर्फ पांच से एक उल्लेखनीय परिवर्तन है।

उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव के नेतृत्व में, हमने सिर्फ नौ वर्षों में 29 नए मेडिकल कॉलेज जोड़े हैं, जिससे एमबीबीएस सीटों की संख्या 2014 में 850 से बढ़कर आज 4,090 हो गई है। इस नाटकीय विस्तार से तेलंगाना को हर साल 10,000 से अधिक डॉक्टर तैयार करने की अनुमति मिलती है, जिससे स्थानीय और वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल दोनों जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलती है। हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का केसीआर का सपना साकार हुआ है। मैं यदाद्री, मेडक, महेश्वरम और कुतुबुल्लापुर के लोगों को हार्दिक बधाई देता हूं, जहां नए कॉलेजों को मंजूरी दी गई है, और मुलुगु, नरसंपेट, गडवाल और नारायणपेट के लोगों को, जहां पिछले महीने कॉलेजों को मंजूरी दी गई थी।

हरीश राव ने कहा कि पिछली केसीआर सरकार ने आठ नए मेडिकल कॉलेजों के लिए धन और जमीन सुरक्षित कर ली थी, लेकिन कांग्रेस सरकार के तहत प्रशासनिक देरी के कारण, पिछले महीने एनएमसी द्वारा केवल चार को मंजूरी दी गई थी। कांग्रेस सरकार ने तब से केंद्र से अपील की है, सभी आवश्यक शर्तों को पूरा करने का वादा किया है, और हमें खुशी है कि अब चार अतिरिक्त कॉलेजों को मंजूरी दे दी गई है तेलंगाना राज्य प्रति लाख लोगों पर 22 सीटों के साथ एमबीबीएस सीटों में भी देश में अग्रणी है - एक उपलब्धि जिस पर हम सभी गर्व कर सकते हैं। यह यात्रा पूर्व मुख्यमंत्री केसीआर द्वारा एकीकृत आंध्र प्रदेश के तहत तेलंगाना में स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में असमानताओं को ठीक करने की आवश्यकता की मान्यता के साथ शुरू हुई। यह सुनिश्चित करके कि हर जिले में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा तक पहुँच हो, हमने न केवल विशिष्ट स्वास्थ्य सेवा को लोगों के करीब लाया है, बल्कि छात्रों के लिए डॉक्टर बनने के अपने सपनों को पूरा करने के लिए नए अवसर भी बनाए हैं।

हरीश राव ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा तेलंगाना को 157 नए मेडिकल कॉलेजों में से कोई भी आवंटित न करने के फैसले के बावजूद, हमने आगे बढ़कर अपने संसाधनों से 29 कॉलेज स्थापित किए। इस प्रयास ने एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया है, और केवल नौ वर्षों में, हमने वह हासिल किया है जो दशकों में नहीं किया जा सका था और तेलंगाना के छात्रों को अब चीन, यूक्रेन या फिलीपींस जैसे देशों में विदेश में अध्ययन करने के लिए बड़ी रकम खर्च करने की आवश्यकता नहीं है।

सफाई कर्मचारी पर हमला, महिला नेता गिरफ्तार

वारंगल, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। महात्मा गांधी मेमोरियल अस्पताल में कार्यरत आउटसोर्सिंग सफाई महिलाकर्मी बिल्ला सुमालता की कथित तौर पर पिटाई करने वाली आउटसोर्सिंग कर्मचारी यूनियन की महिला नेता अलकुंता राजम्मा को मत्तेवाड़ा पुलिस ने बुधवार को गिरफ्तार कर लिया। वारंगल एसीपी नंदीराम नाइक के अनुसार, सुमालता द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर राजम्मा को गिरफ्तार किया गया है।

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि सुमालता ने उससे 10,000 रुपये और मोबाइल फोन छीन लिया। पुलिस ने राजम्मा के कब्जे से 1,000 रुपये नकद और हमले में इस्तेमाल की गई चेन जब्त कर ली है और उसे रिमांड पर भेज दिया है।

सूत्रों का कहना है कि राजम्मा ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके सुमालता को नौकरी दिलवाई और हर महीने उससे पैसे वसूले। हालांकि, पिछले महीने से उसने राजम्मा को पैसे देने से मना कर दिया है, जिससे वह नाराज हो गई और सोमवार दोपहर को उसने कथित तौर पर अस्पताल परिसर में सुमालता को पकड़ लिया, उसे जंजीर से बांध दिया और उसकी पिटाई कर दी। सुमलता ने आरोप लगाया कि राजम्मा उसे नौकरी दिलाने के लिए 2 लाख रुपए की रिश्वत मांग रही थी। उसने यह भी धमकी दी कि अगर उसने रकम नहीं दी तो वह उसे जान से मार देगी। आश्चर्य की बात यह है कि एमजीएम अधीक्षक ने दावा किया कि राजम्मा अस्पताल की कर्मचारी नहीं थी और इस घटना का अस्पताल से कोई संबंध नहीं है।

आरपीएफ ने 'ऑपरेशन डिग्निटी' के तहत 48 लोगों को बचाया

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) सिकंदराबाद के जवानों ने इस वर्ष अब तक 'ऑपरेशन डिग्निटी' के तहत 48 व्यक्तियों को बचाया है। 'ऑपरेशन डिग्निटी' का उद्देश्य संकट में फंसे वयस्कों की पहचान करना और उनकी सहायता करना, उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना और सहायता सेवाओं तक उनकी पहुंच को सुगम बनाना है। यह पहल रेलवे परिसर में जोखिम में पड़े व्यक्तियों को समय पर हस्तक्षेप और सहायता प्रदान करने में सहायक है।

वर्ष 2024 के दौरान, आरपीएफ टीमों ने 31 महिलाओं सहित 48 व्यक्तियों को बचाया, जिन्हें देखभाल और सुरक्षा की सख्त जरूरत थी। इसी तरह 2023 में, आरपीएफ कर्मियों ने इस पहल के तहत %1 महिलाओं सहित 104 वयस्कों को बचाया था। सिकंदराबाद की वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त देबश्मिता चट्टोपाध्याय बनर्जी ने आरपीएफ टीमों की त्वरित प्रतिक्रिया की सराहना की और कहा कि ऑपरेशन डिग्निटी महज एक बचाव अभियान से कहीं अधिक है, यह करुणा, सतर्कता और सेवा के हमारे मूल मूल्यों का प्रतीक है।

आयुष ने चोटियों पर दोहरे प्रयास के साथ बनाया रिकॉर्ड

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। लद्दाख में 6,000 मीटर से अधिक की ऊंचाई पर स्थित कंग यात्से की जुड़वां चोटियां अनुभवी पर्वतारोहियों के लिए भी एक कठिन चुनौती हैं। हैदराबाद के 15 वर्षीय आयुष के लिए, ये चोटियां, कंग यात्से-2 (6240 मीटर) और कंग यात्से-1 (6400 मीटर), एक परीक्षा थीं, जिसे उन्होंने उत्सुकता से स्वीकार किया। आयुष की कांग यात्से-2 के शिखर तक की यात्रा 23 अगस्त को शुरू हुई, मार्खा घाटी के ऊबड़-खाबड़ इलाकों से होकर 4 दिन की कठिन यात्रा के बाद 9 घंटे तक बर्फबारी और बर्फीली हवाओं से जूझने के बाद, वह केवाई2 के शिखर पर पहुंचे।

आयुष याद करते हुए कहते हैं कि यह एक कठिन चढ़ाई थी, चट्टानी भागों और बर्फ से गुजरना थका देने वाला था, लेकिन मैं वापस नहीं लौटना चाहता था। 15 घंटे की यात्रा के बाद, वह केवाई2 के शिखर पर पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोहियों में से एक बन गए। आयुष का पर्वतारोहण के प्रति जुनून 10 साल की उम्र में शुरू हुआ, जो उनके पिता की ट्रैकिंग की कहानियों से प्रेरित था। तब से, उन्होंने सैंडकफू, केदारकांठा और बाली दर्रे सहित कई उच्च-ऊंचाई वाले ट्रेक पूरे किए हैं। 2022 में, उन्होंने कांग यात्से-2 का प्रयास किया, लेकिन बीमारी के कारण उन्हें वापस लौटना पड़ा, जिससे उनका दृढ़ संकल्प और मजबूत हुआ। वे कहते हैं कि इस बार मेरे पास ज़्यादा दृढ़ संकल्प था, क्योंकि मैं 2022 में कांग यात्से-2 पर नहीं चढ़ सकता था। मैं फिर से पीछे नहीं लौटना चाहता था, इसलिए इससे मुझे आगे बढ़ने में मदद मिली।

पत्नी का कर्ज न चुका पाने पर पति को पीटा

मेदक, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तूप्रान नगरपालिका के पदलापल्ली में एक व्यक्ति को खंभे से बांधकर पीटा गया। बताया जा रहा है कि उसकी पत्नी महिला स्वयं सहायता समूह से लिया गया ऋण चुकाने में विफल रही थी। कनुकुंता भिक्षापति के अनुसार, उनकी पत्नी मिन्नी, जो गांव के एक स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं, ने आठ महीने पहले ऋण लिया था।

हालांकि, वह अपनी मां की बीमारी के कारण घर छोड़कर चली गई थी और उनके साथ रह रही थी। समूह के सदस्यों और उनके परिवार के सदस्यों ने भिक्षापति से ऋण चुकाने की मांग शुरू कर दी। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका ऋण से कोई लेना-देना नहीं है। भिक्षापति ने शिकायत की कि मंगलवार रात 10 लोगों के एक समूह ने उन्हें एक खंभे से बांध दिया और उनकी पिटाई की।

इससे पहले करीब 15 दिन पहले उसे उसके घर ले जाने के लिए सदस्यों ने कार में बिठाया था। हालांकि, रास्ते में कार में भी उसकी पिटाई की गई, ऐसा उसने तूप्रान पुलिस को दी गई शिकायत में बताया। उन्होंने बताया कि स्वयं सहायता समूह के सदस्य और उनके रिश्तेदार नियमित रूप से उन पर हमला कर रहे थे और उनके साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जब उनकी पत्नी घर लौटी तो समूह के सदस्य पैसे वापस मांगने घर आ गए, हालांकि संबंधित लोगों के आने पर उनकी पत्नी मौके से भाग गई और एक रिश्तेदार के घर में छिप गई। पत्नी की इस हरकत के लिए भिक्षापति को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्होंने उसे घसीटकर बाहर निकाला और एक खंभे से बांधकर उसकी पिटाई की। अन्य ग्रामीणों के हस्तक्षेप के बाद ही उसे जाने दिया गया। तूप्रान पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच जारी है।

करंट लगने से दो केबल चोरों की मौत!

महबूबनगर, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जिले के जडचेरला निर्वाचन क्षेत्र के मिजिल मंडल में एक सौर संयंत्र से केबल चोरी करने के कथित प्रयास के दौरान करंट लगने से दो संदिग्ध चोरों की मौत हो गई। रिपोर्ट के अनुसार प्रगति सोलर प्लांट में अक्सर केबल चोरी की घटनाएं होती रहती थीं, इसलिए प्लांट प्रबंधन ने ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए दो इलेक्ट्रिक फेंस लगाए थे। मंगलवार रात को कथित तौर पर दो लोगों ने इलेक्ट्रिक फेंस काटकर प्लांट में घुसने की कोशिश की। वे पहली फेंस को काटने में कामयाब रहे, लेकिन जैसे ही वे दूसरी फेंस को काटने वाले थे, उन्हें करंट लग गया। दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच जारी है।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें. द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

PUB/0902

सं. सी/सी/ सीएटीजी./जीएमयुएस/ ए1,ए,बी,सी/1/2024, दि.10-09-2024

भारत के राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य की ओर से व के लिए, वरिष्ठ विभागीय वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद डिवीजन, दक्षिण मध्य रेलवे द्वारा ई-टेन्डरिंग पोर्टल जैसे, www.ireps.gov.in के माध्यम से कैटरिंग स्टाल्स एवं मिल्क स्टाल्स की स्थापना एवं संचालन हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित है। तदनुसार, सिकंदराबाद डिवीजन ने ए1, ए,बी,सी केटगिरी स्टेशनों पर 36 कैटरिंग स्टाल्स की स्थापना व संचालन तथा ए1, ए,बी, केटगिरी स्टेशनों पर 10 मिल्क स्टाल्स की स्थापना व संचालन से संबंधित निविदाओं को प्रदर्शित किया है, जिसे https://www.ireps.gov.in/website पर अधिसूचित किया गया है।

श्रेणी	निविदा सं.--	बोलियों की प्रस्तुति की अंतिम तिथि-	कार्य विवरण
कैटरिन्ग स्टाल्स	एससीसीएटीजी 070 2024 से एससीसीएटीजी1052024	23-09-2024 के 15.00 बजे तक	सिकंदराबाद डिवीजन के ए1,ए,बी, सी कैटगिरी रेलवे स्टेशनों पर 36 कैटरिंग स्टाल्स(टी स्टाल्स या चाय की दुकानें एवं फ्रूट ज्यूस स्टाल्स या फलों के रस की दुकानें) की स्थापना एवं संचालन हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित हैं। विस्तृत विवरण हेतु कृपया वेबसाइट: www.ireps.gov.in का अवलोकन करें।
मिल्क स्टाल्स	एससीसीएटीजी10720 24 से एससीसीएटीजी1162024	03-10-2024 के 15.00 बजे तक	सिकंदराबाद डिवीजन के ए1,ए,बी कैटगिरी रेलवे स्टेशनों पर 10 मिल्क स्टाल्स या दूध की दुकानों की स्थापना एवं संचालन हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित हैं। विस्तृत विवरण हेतु कृपया वेबसाइट: www.ireps.gov.in का अवलोकन करें।

इच्छुक पार्टीज तथा ठेकेदार इस महत्वपूर्ण बात पर ध्यान दें तथा वे तत्संबंधित ई-निविदा सूचना के विस्तृत विवरण हेतु उपरोक्त वेबसाइट देख सकते हैं। पूछताछ/स्पष्टीकरण हेतु कृपया अधोहस्ताक्षरी कार्यालय पर संपर्क करें।

A1163 **वरिष्ठ विभागीय वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद**

गोरखपुर के कैथोलिक डायोसिस और राज्य सरकार पर 10 लाख रुपये का जुर्माना

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने लिया एक्शन

प्रयागराज, 11 सितंबर (एजेंसियां)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक ग्रामीण की जमीन पर गलत तरीके से कब्जा जमाने के लिए गोरखपुर के कैथोलिक डायोसिस और राज्य सरकार पर संयुक्त रूप से 10 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। मामला लंबित रहने के दौरान वादी भोला सिंह की मौत हो गई और 32 साल से अधिक वर्ष तक भोला सिंह और उनके वारिसों को इस जमीन के उपयोग से वंचित रखा गया। अदालत ने गोरखपुर के कैथोलिक डायोसिस द्वारा दायर दूसरी अपील खारिज करते हुए कहा, 10 लाख रुपये हर्जाने के साथ यह दूसरी अपील खारिज की जाती है और अपीलकर्ता एवं राज्य सरकार द्वारा इस हर्जाने की रकम को समान रूप से वहन किया जाएगा। न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र ने आदेश में कहा, यह अदालत इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि राज्य सरकार और अपीलकर्ता के इस कार्य को कानून की कोई मंजूरी नहीं थी और यह एक तरह से एक ग्रामीण की जमीन हड़पने के समान है।

इस मामले में गोरखपुर में भोला सिंह की राज्य सरकार ने जमीन गलत ढंग से डायोसिस को पट्टे पर दे दी थी। डायोसिस की दलील थी कि यह जमीन भोला सिंह द्वारा सीलिंग प्रक्रिया के दौरान राज्य सरकार को दी गई थी और बाद में यह जमीन फातिमा अस्पताल के निर्माण के लिए डायोसिस को सौंप दी गई।

अदालत ने पाया कि राज्य सरकार के रिकॉर्ड के मुताबिक, केवल एक अन्य सह-मालिक का हिस्सा राज्य सरकार को सौंपा गया था, ना कि भोला सिंह का हिस्सा। लेकिन इस संबंध में किसी तरह के प्रतिकूल हस्तक्षेप से बचने के लिए दस्तावेज को रिकॉर्ड में नहीं लाया गया था। इसलिए राज्य सरकार को भोला सिंह की जमीन डायोसिस को देने का कोई अधिकार नहीं था।

भोला सिंह ने मुकदमे में आरोप लगाया कि जब डायोसिस ने दीवार के निर्माण के जरिए जमीन घेरना शुरू किया तो उसने आपत्ति जतायी, जिस पर प्रतिवादी ने उस जमीन पर एक अस्पताल बनाने की धमकी दी। आरोप है कि संशोधन के जरिए प्रतिवादी संख्या-2 (राज्य सरकार) द्वारा प्रतिवादी संख्या-1 (डायोसिस) के पक्ष में पट्टा किया गया, जबकि राज्य सरकार को यह करने का अधिकार नहीं था।

अदालत ने कहा कि राज्य सरकार और अपीलकर्ता ने मिलीभगत कर जिला और सचिवालय स्तर पर सरकारी मशीनरी की मदद से दस्तावेजों में छेड़छाड़ की जिसके परिणाम स्वरूप वादी और उसके वारिस 32 वर्षों से अधिक समय तक अपनी अचल संपत्ति का इस्तेमाल करने से वंचित रहे।

मॉब लिंचिंग के डर से युवक ओवरब्रिज पर चढ़ा, फिर लगा दी छलांग, हुई दर्दनाक मौत

जौनपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के लाइनबाजार थाना क्षेत्र में एक युवक ने सुबह ओवरब्रिज से छलांग लगा दी जिससे उसकी मौत हो गई। ग्रामीण इस युवक को 'बच्चा चोर' समझ कर इसका पीछा कर रहे थे। पुलिस ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बच्चा चोर समझकर एक युवक को ग्रामीणों ने दौड़ाया तो वह वाराणसी-लखनऊ हाइवे पर नेवादा गांव के पास बने फुट ओवरब्रिज पर चढ़ गया।

मामले की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस और दमकल विभाग की टीम ने उसे उतारने का प्रयास किया। करीब 7-8 घंटे के प्रयास के बावजूद उसने नीचे आने की बजाय ओवरब्रिज से छलांग लगा दी। पुलिस ने बताया कि घायल शख्स को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

'दिल की बात जुबां पर आ ही गई'

राहुल गांधी के आरक्षण खत्म करने वाले बयान पर बोलीं अनुप्रिया पटेल

लखनऊ, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राहुल गांधी के आरक्षण वाले बयान पर सियासी घमासान छिड़ गया है। बीजेपी समेत तमाम सियासी दल इस मुद्दे को लेकर कांग्रेस पार्टी पर हमला बोल रहे हैं। वहीं अब इस मामले में केंद्रीय मंत्री और अपना दल की नेता अनुप्रिया पटेल ने भी राहुल गांधी पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि आरक्षण को लेकर राहुल गांधी के मन की बात उनकी जुबान पर भी आ ही गई। अनुप्रिया पटेल ने राहुल गांधी के बयान पर निशाना साधते हुए अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर प्रतिक्रिया दी और कहा- 'आखिर दिल की बात जुबान पर आ ही गई। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जी ने कहा कि समय आने पर कांग्रेस आरक्षण खत्म कर देगी। याद कीजिये ये वही राहुल गांधी जी हैं जिन्होंने पूरे लोकसभा चुनाव के दौरान आरक्षण और संविधान खत्म करने का झूठा भ्रम फैलाया।'

दो आर्केस्ट्रा डांसरों का किडनैप, बंदूक की नोक पर बर्थडे पार्टी में नचवाया फिर की दरिंदगी, पुलिस मुठभेड़ में अरेस्ट

कुशीनगर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में बंदूक की नोक पर दो महिला डांसरों को किडनैप कर लिया। तीन राउंड फायर कर लग्जरी गाड़ी से आए 8-9 बदमाश उन्हें बर्थडे पार्टी में नचाने के लिए अपहरण कर ले गए। उनसे जबरन डांस कराया गया। नशे में धुत्त बदमाश उनके साथ छेड़खानी करते रहे। आर्केस्ट्रा संचालक ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस ने छापा मारकर दोनों अगवा युवतियों को बरामद किया। वहीं 6 बदमाशों को भी गिरफ्तार किया है। इनमें दो बदमाशों को मुठभेड़ में दबोचा है।

13 महीने में 50 हजार से ज्यादा अपराधियों को कोर्ट से दिलाई गई सजा

यूपी में दिखने लगा 'ऑपरेशन कनविक्शन' का असर

लखनऊ, 11 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के डीजीपी प्रशांत कुमार के 'ऑपरेशन कनविक्शन' का असर दिखने लगा है। इस मुहीम के तहत 13 महीने में 50 हजार से ज्यादा अपराधियों को कोर्ट से सजा दिलाई गई। 13 महीने 10 दिन में 50010 अपराधियों को कोर्ट से सजा दिलाई गई। बता दें कि डीजीपी ने 1 जुलाई 2023 को "ऑपरेशन कनविक्शन" शुरू किया था। 13 महीने में 87 माफिया, बच्चों और महिला संबंधी अपराध करने वाले 6944 ,गंभीर और सनसनीखेज अपराधों को अंजाम देने वाले 15541 अन्य अपराधों में 27438 दोषियों को सजा दिलाई गई।

इसमें 29 मामलों में 44 दोषियों को मृत्यु दंड की सजा हुई है। इसके अलावा 2453 मामलों में 4953 दोषियों को उम्र कैद की सजा दिलाई गई। बता दें कि डीजीपी प्रशांत कुमार ने "इन्वेस्टिगेशन ,प्रॉसीक्यूशन एवं कनविक्शन" के फॉर्मूले पर चलने के लिए स्पेशल पोर्टल बनाया था। इसके तहत हर जिले को हर महीने 20 मामलों में सजा कराने का टारगेट दिया गया था। इसमें माफिया ,महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध, हत्या, लूट, डकैती, अवैध धर्म परिवर्तन एवं अन्य अपराधों के 20-20 मामलों में हर महीने सजा कराने का टारगेट दिया गया था।

जिसके बाद कोर्ट में प्रभावी पैरवी के जरिए अपराधियों को सजा दिलाई गई। 'ऑपरेशन कनविक्शन' का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि पुलिस ने जहां पुराने मामलों को तेजी से निपटाया, साथ ही नए मामलों में भी तेजी देखने को मिली। इतना ही नहीं इस ऑपरेशन से माफियाओं और परदहियों में भी कड़ा संदेश दिया गया कि अब मामला लटकेगा नहीं और कानून के तहत सजा होगी। डीजीपी प्रशांत कुमार ऑपरेशन की सफलता का श्रेय प्रभावी विवेचना और पैरवी को दिया है।

बीच सड़क आकर बैठा तेंदुआ, कार को भी रोका, पाकबड़ा के कई गांवों में डर का माहौल

मुरादाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में तेंदुए की दहशत बरकरार है। मुरादाबाद जिले के थाना पाकबड़ा इलाके के गांवों में तेंदुआ लगातार देखा जा रहा है। वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि इलाके में गश्त की जा रही है। जिले में तेंदुए का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। सोमवार की रात कांठ और पाकबड़ा क्षेत्र में तेंदुआ देखा गया। कांठ में चेतरामपुर मार्ग पर तेंदुआ अचानक ठेकेदार की कार के सामने आया गया और बीच सड़क पर कार को रोककर बैठक गया। तो वहीं थाना पाकबड़ा से सटे गांव गुरैठा में तेंदुआ के दिखने पर हड़कंप मच गया। यहां तेंदुआ को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाया गया हैं।

लखनऊ में गणेश जी की मूर्ति पर फेंका पत्थर, घटना के बाद जमकर हंगामा

लखनऊ, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बारत में इस वक्त गणेश चतुर्थी का त्योहार धूमधाम से मनाया जा रहा है। हालांकि, त्योहार के बीच देश के विभिन्न हिस्सों से पत्थरबाजी और हंगामे की खबर सामने आ रही है। अब हाल में खबर आई है कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के चिनहट में एक घर में गणेश जी की मूर्ति पर पत्थर फेंका गया है। ये घटना देर रात की बताई जा रही है। एक घर में गणेश जी की मूर्ति की स्थापना की गई थी जिसपर पत्थर फेंके गए।

इस घटना के बाद से जमकर हंगामा मचा हुआ है। लखनऊ में गणेश जी की मुर्ति पर पत्थरबाजी का आरोप अल्पसंख्यक वर्ग के दो नाबालिग बच्चों पर लगा है। पत्थर लगने से गणेश मूर्ति के पास रखा कलश खंडित हो गया है। इस घटना के बाद इलाके के कई लोगों ने जमकर हंगामा किया है। पुलिस ने पत्थर फेंकने के आरोपी दो नाबालिगों को हिरासत में ले लिया है। ये पूरी घटना चिनहट के विधायक चौराहे से सामने आई है। जानकारी के मुताबिक, चिनहट में एक हिंदू परिवार ने घर में गणेश मूर्ति की स्थापना की थी। आरोप है कि पड़ोस में रहने वाले अल्पसंख्यक वर्ग के लड़कों ने मूर्ति पर त्थर फेंके। नाबालिग बच्चों पर पूजा में व्यवधान डालने और आरती के समय उत्तेजक नारे लगाने का आरोप भी लगा है। पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर लिया है और मामले की जांच में जुट गई है।

मैनपुरी में डिंपल यादव बोलीं

राहुल गांधी सच कह रहे:इससे भाजपा को तकलीफ हो रही; सपा की जीत से भाजपा बौखला गई है

मैनपुरी, 11 सितंबर (एजेंसियां)। 'सच बोलने की कोई जगह नहीं देखी जाती। सच हर जगह सच ही रहता है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सच बोलते हैं, तो भाजपा को बहुत तकलीफ होती है। भाजपा को हमेशा सच के सामने आने से दिक्कत रही है।' यह बात सांसद डिंपल यादव मंगलवार को अपने संसदीय क्षेत्र मैनपुरी में कही। सुल्तानपुर में हुए मंगेश यादव के एनकाउंटर पर उन्होंने कहा- भाजपा जो प्रथा चला रही है, वह अमानवीयता का प्रतीक है। भाजपा अपने आपको बहुत धार्मिक पार्टी मानती है। तो फिर ऐसे एनकाउंटर से

किस तरह का धर्म दिखाना चाहती है? किस तरह का संदेश देना चाहती है? ये लोग संविधान को लगातार कुचल रहे हैं। जो न्यायालय है, जहां से लोगों को इंसाफ मिलता है, ये पार्टी उसको भी कुचलने का काम कर रही है। सपा को जनता का जो इतना साथ मिला, उससे भाजपा बौखला गई है। देश-प्रदेश को ऐसे अच्छे और पढ़े-लिखे नेताओं की जरूरत है, जो देश को आगे बढ़ा सकें।

उत्तर प्रदेश और देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं

डिंपल यादव ने सरकार को बेरोजगारी पर घेरते हुए कहा- मैं बेरोजगारों से पूछना चाहती हूं कि उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी है या नहीं। अग्निवीरों के लिए सरकार ने क्या व्यवस्था की, यह तो पूरा देश जानता है।

आज उत्तर प्रदेश और देश में बेरोजगारी चरम सीमा पर है। उत्तर प्रदेश और देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। जो महिलाएं विदेश से आ रही हैं, उनके साथ भी बलात्कार हो रहे हैं।

लोकसभा चुनाव में गलत सीट शेयरिंग के कारण एनडीए को हुआ नुकसान

उपेंद्र कुशवाहा का बड़ा बयान

पटना, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार की राजधानी पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान राष्ट्रीय लोक मोर्चा के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने लोकसभा चुनाव में सीट शेयरिंग को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान गलत सीट शेयरिंग के कारण एनडीए को भारी नुकसान उठाना पड़ा। उपेंद्र कुशवाहा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि नीतीश कुमार को बार-बार सफाई देने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। उनके अनुसार, चुनावी रणनीति में हुई गलतियों का असर स्पष्ट रूप से दिख रहा है, और इससे पार्टी की स्थिति कमजोर हुई है। कुशवाहा ने कहा कि लोकसभा चुनाव में सीट शेयरिंग की गलतियों ने एनडीए को नुकसान पहुंचाया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बार-बार सफाई देने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। इन गलतियों के कारण हमें नुकसान उठाना पड़ा है।

यूपी के 513 मदरसों पर लगेगा ताला, संचालकों ने लौटाई मान्यता एक्शन में योगी सरकार

लखनऊ, 11 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में मदरसा शिक्षा परिषद की ओर से मान्यता प्राप्त 513 मदरसों पर ताला लगाया जाएगा। इन मदरसों ने राज्य सकार को मदरसों की मान्यता छोड़ने की अर्जी दी थी, जिसे कैबिनेट की बैठक में हरी झंडी दे दी गई है। यूपी मदरसा शिक्षा परिषद की बैठक हुई जिसमें इन मदरसों की मान्यता समाप्त किए जाने के प्रस्ताव को मंज़ूरी दे दी गई। इस संबंध में नियमावली 2016 के मुताबिक आगे की कार्रवाई के लिए एक रजिस्ट्रार को अधिकृत कर दिया गया है। यूपी मदरसा शिक्षा परिषद द्वारा संचालित ये 513 मदरसे प्रदेश के अलग-अलग जनपदों में चल रहे हैं।

यूपी में 17 आईपीएस अफसरों के ट्रांसफर:संदीप कुमार मीना को गोरखपुर रेलवे का एसपी बनाया

आरती और अंकिता कानपुर डीसीपी बनीं

मुरादाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। योगी सरकार ने बुधवार सुबह 17 आईपीएस अफसरों के ट्रांसफर कर दिए। मुरादाबाद के अपर पुलिस अधीक्षक संदीप कुमार मीना को गोरखपुर रेलवे का एसपी बनाया है। गोरखपुर रेलवे के एसपी अवधेश प्रताप सिंह को लखनऊ भेजा है। उन्हें भ्रष्टाचार निवारण संगठन का एसपी बनाया है। आरती सिंह और अंकिता शर्मा कानपुर कमिश्नरेट में डीसीपी बनी हैं। चंद्रकांत मीना को वाराणसी कमिश्नरेट, तो साद मियां खां को गौतमबुद्धनगर का डीसीपी बनाया गया है। कई अफसरों को उसी जिले में प्रोन्नति देकर पोस्टिंग दी गई। 17 में से 12 अफसर 2018 बैच के हैं। इससे पहले, मंगलवार शाम को शासन ने 17 आईपीएस अफसरों का तबादला किया था। इनमें 8 जिलों के पुलिस कप्तान बदले गए थे। 3 को पहली बार जिलों की कमान दी गई थी। यानी 24 घंटे में 34 आईपीएस अफसरों के ट्रांसफर हुए हैं।

अनिल यादव को गौतबुद्धनगर से लखनऊ भेजा

सैयद अली अब्बास और सूरज कुमार राय को आगरा कमिश्नरेट का डीसीपी बनाया गया है। वाराणसी कमिश्नरेट के अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त मनीष कुमार शान्डिल्य को प्रयागराज पीएसी का सेनानायक बनाया है। बरेली के अपर पुलिस अधीक्षक राहुल भाटी को यूपीएसएसएफ लखनऊ का सेनानायक बनाया है। अनिल यादव को गौतमबुद्धनगर से लखनऊ भेजा गया। उन्हें लखनऊ कमिश्ननरेट में पुलिस उपायुक्त की जिम्मेदारी मिली है। अभिषेक भारती को प्रयागराज कमिश्नरेट का पुलिस उपायुक्त बनाया है। लखन सिंह यादव को कानपुर से गौतमबुद्धनगर भेजा गया। उन्हें पुलिस उपायुक्त की जिम्मेदारी दी गई। यूपीएसएसएफ के सेनानायक ओम प्रकाश यादव को सीतापुर पीटीसी का पुलिस अधीक्षक बनाया गया है।

सीतापुर पीएसी के सेनानायक दयाराम को सीबीसीआईडी लखनऊ का पुलिस अधीक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यूपी में मंगलवार को यूपी के 17 आईपीएस अफसरों के तबादले कर दिए गए। अलीगढ़ रेंज के आईजी का ट्रांसफर किया गया है। शाहजहांपुर, लखनऊ, अलीगढ़, रायबरेली समेत 8 जिलों के पुलिस कप्तान भी बदले गए हैं। शासन ने सभी अफसरों को तत्काल नई जगहों पर जॉइनिंग के आदेश दिए हैं।

महिला ने ट्रेन में दिया बच्ची को जन्म, डिलीवरी के दौरान रुकी रही ट्रेन जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ

पटना, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक ट्रेन में ही महिला ने बच्ची को जन्म दिया है। गनीमत ये रही कि जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। रेलवे हॉस्पिटल की डॉक्टर पायल मिश्रा की वजह से ये डिलीवरी सफलतापूर्वक की गई। बरौनी-समस्तीपुर रेलखंड पर डिब्रूगढ़-चंडीगढ़ एक्सप्रेस (15903) में सफर कर रही एक महिला ने बच्चे को जन्म दिया। समस्तीपुर स्टेशन पर ट्रेन के पहुंचने पर रेलवे हॉस्पिटल की डॉक्टर पायल मिश्रा के नेतृत्व में सुरक्षित प्रसव कराया गया। डॉक्टर पायल मिश्रा ने बताया कि जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। मिली जानकारी के अनुसार, बरौनी से ट्रेन में सवार होकर महिला रजनी देवी मुजफ्फरपुर के लिए निकली थी।

अतीक अहमद के बेटे समेत 10 लोगों पर गैंगस्टर लगाने की तैयारी, गैंग चार्ट तैयार इनपर होगा एक्शन

प्रयागराज, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मौत के घाट उतारे जा चुके माफिया अतीक अहमद से जुड़ी बड़ी खबर सामने आई है। अतीक अहमद के प्रयागराज की नैनी सेंट्रल जेल में बंद बेटे अली अहमद समेत 10 लोगों पर गैंगस्टर लगेगा दिया गया है। प्रयागराज की करेली थाना पुलिस ने गैंग चार्ट तैयार कर पुलिस कमिश्नर को रिपोर्ट भेज दी गई है। अतीक अहमद के करीबी रिश्तेदार जीशान उर्फ जानू ने 31 दिसंबर 2021 को माफिया के दूसरे नंबर के बेटे अली के खिलाफ करेली थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। एफआईआर में 5 करोड़ की रंगदारी मांगने और जानलेवा हमले सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज किया गया था। इस मामले में अब बड़ा एक्शन लिया जा सकता है।

जानू ने अली अहमद के साथ ही मोहम्मद असाद कालिया, आरिफ उर्फ कछौली, संजय सिंह, इमरान उर्फ गुड्डू, सैफ उर्फ मामा, अमन, कुल्लू , अली अब्बास समेत 15 अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। पुलिस ने इस मामले में जिन आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है, अब पुलिस उन आरोपियों पर गैंगस्टर कार्रवाई की तैयारी कर रही है।

राजद विधायक की गुंडागर्दी, शिक्षक को जेल में दी जान से मारने की धमकी

पटना, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार में राजनीति हो या गुंडीगर्दी दोनों ही खुलकर होती है। ये एक दूसरे के पूरक हैं। खासकर बिहार की राजनीति में ऐसा जरूर देखने को मिलता है। इस बीच अब लालू प्रसाद यादव के एक विधायक का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। दरअसल राजद विधायक इजहार आसफी की यह वीडियो है, जिसमें वह एक टीचर को जेल में जान से मरवाने की धमकी दे रहे हैं। ये वीडियो किसी और ने नहीं बल्कि खुद विधायक के बेटे ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। इसपर जदयू ने एक्शन लेने की मांग की है, लेकिन राजद विधायक को इस धमकी या वीडियो को लेकर कोई पछतावा नहीं है।

विधायक ने दी जान से मारने की धमकी

दरअसल जो वीडियो वायरल हो रहा है, उसमें राजद विधायक इजहार आसफी धमकी देते दिख रहे हैं। वीडियो में विधायक ने कहा, सोचते हो, हमारा क्या होगा। हम पर केस होगा तो हम जेल जाएंगे, दो दिन में बेल हो जाएगा। इसी दो दिन में जेल के अंदर ही तुमहारा गत करवा देंगे। 90 फीसदी आदमी जेल में हमारा है, जिसमें चोर है, बदमाश है, लुच्चा है, हत्यारा है। तुमको बाहर कुछ नहीं होगा जेल में ही तुम्हारा गत गरवा देंगे। बता दें कि विधायक अपने वीडियो में सरेआम धमकी देते दिख रहे है। ये वीडियो कोचाधामन प्रखंड के अंतर्गत आने वाले अहमदनगर के स्कूल का है।

क्या है पूरा मामला?

दरअसल 31 जुलाई 2024 को स्कूल टीचर ने एक छात्रा को पीट दिया था। इसके बाद आरजेडी विधायक आरोपी शिक्षक को धमकाने पहुंच गए। दबंगई का आलम ये है कि इस वीडियो को विधायक के बेटे मोहम्मद इम्तियाज आसफी ने अपने फेसबुक अकाउंट से अपलोड किा है और अपने पिता को टैग भी किया है। इस वीडियो में इजहार आसफी को दबंग नेता के तौर पर दिखाया गया है।

वीडियो वायरल होने के बाद राजद विधायक की खूब किरकिरी हुई तो राजद विधायक ने वीडियो को ठीक से देखने की सलाह दे दी। इजहार आसफी ने सफाई देते हुए कहा कि क्या बोले हैं हम और क्या सुनाई दे रहा है। उसमें डिपरेंश समझ आ जागा। कोई खास बात नहीं है।

2 सगे भाइयों ने आंध्रा आश्रम में लगाई फांसी 28 अगस्त को आंध्र प्रदेश से पहुंचे थे काशी

वाराणसी, 11 सितंबर (एजेंसियां)। वाराणसी के भेलूपुर थाना अंतर्गत आंध्रा आश्रम में आज दो सगे भाइयों के शव मिलने से हड़कंप मच गया। आश्रम के कमरे में दोनों सगे भाइयों के शव फंदे से लटकते मिले। कई घंटे से कमरे का दरवाजा न खुलने की वजह से बदबू आने लगी जिसके बाद इसकी सूचना आश्रम के मैनेजर ने निकटतम थाने को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर जैसे ही दरवाजे को खोला दोनों शव फंदे से लटकते दिखाई दिए। इस दौरान मौके से कोई भी सुसाइड नोट नहीं मिला है। फिलहाल शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और स्थानीय पुलिस प्रशासन की तरफ से इस मामले की हर बिंदुओं के आधार पर जांच की जा रहीं है। मिली जानकारी के अनुसार वाराणसी के भेलूपुर अंतर्गत मानसरोवर क्षेत्र स्थित आंध्रा आश्रम में आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी के रहने वाले दो सगे भाइयों ने फांसी पर लटककर अपनी जान दे दी। इनमें से एक का नाम पी। लक्ष्मी नारायण बताया जा रहा है जिसकी उम्र 34 वर्ष थी, और दूसरे का नाम विनोद लोक था जिनकी उम्र 32 वर्ष थी।

उनके हाव भाव से ऐसी कोई भी स्थिति नहीं लग रही थी कि वह किसी भी तनाव में है। मंगलवार को कमरे का दरवाजा नहीं खुला, दोपहर के समय सफाई के लिए पहुंचे सफाईकर्मी को बदबू आने लगी। जिसके बाद मैनेजर द्वारा इसकी सूचना निकटतम थाना भेलूपुर को दी गई। मौके पर पहुंच कर जब पुलिस ने दरवाजा खोला तो दोनों फंदे पर लटकते दिखाई दिए।

बीडीओ के बताते ही नाराज हो गई डीएम सचिव के खिलाफ एफआईआर दर्ज

गोंडा, 11 सितंबर (एजेंसियां)। डीएम नेहा शर्मा ने सदर तहसील अंतर्गत विकासखंड रूपईडीह का निरीक्षण किया। इस दौरान डीएम ने विकासखंड स्तर पर संचालित सभी अधिकारियों से योजनाओं के संचालन एवं उनके प्रगति के संबंध में जानकारी ली। डीएम ने ब्लॉक कैम्पस में संचालित सभी विभागों के कार्यालय का निरीक्षण किया।

उनकी कार्यवाही करते हुए निस्तारित किया जाय। वहीं निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने पंचायती राज विभाग, कृषि विभाग, समाज कल्याण विभाग, कृषि रक्षा विभाग, मनरेगा विभाग, एनआरएलएम विभाग, स्थापना लिपिक, ग्राम रोजगार सेवक, वेतन निर्धारण, विकासखंड के अकाउंट के संबंध में, ग्रान्ड रजिस्टर, ब्लॉक मुख्यालय पर वाहन के संबंध में, क्षेत्र समिति की बैठक के संबंध में, कार्य विभाजन पत्रावली, गार्ड फाइल, मोमेंट रजिस्टर सहित अन्य सभी विभागों एवं पटलों के संबंध में जिलाधिकारी ने समीक्षा की। बीडीओ ने डीएम को बताया कि ग्राम पंचायत सचिव अजय कुमार पांडेय का स्थानांतरण विकासखंड करनैलगंज में हो गया है। संबंधित सचिव ने स्थानांतरण के बाद विकासखंड में ज्वाइन भी कर लिया है। इसके बावजूद यहां पर उनके द्वारा चार्ज नहीं दिया रहा जा रहा है। जिस पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए डीएम ने खंडविकास अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा है कि संबंधित सचिव को तीन दिवस का समय देते हुए अवगत कराया जाय। इसके बावजूद यदि उनके द्वारा चार्ज नहीं दिया जाता है तो संबंधी सचिव के खिलाफ तत्काल एफआईआर कराकर अवगत करायें। डीएम ने बीडीओ को निर्देश दिए हैं

शिमला मस्जिद विवाद

प्रदर्शन कर रहे लोगों ने तोड़ी बैरिकेडिंग, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

शिमला, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राजधानी शिमला के उपनगर संजौली में मस्जिद में अवैध निर्माण के मामले में बुधवार को हिन्दू समाज के लोगों का भारी आक्रोश नजर आया। संजौली में धारा 163 लागू होने के बावजूद हिंदू संगठनों ने सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया। इससे यहां माहौल तनावपूर्ण हो गया। प्रदर्शनकारियों ने संजौली से सटे ढली टनल में पुलिस द्वारा की गई बेरिकेडिंग तोड़ दी और वे विवादित मस्जिद स्थल की ओर बढ़ रहे हैं। इस दौरान प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प भी हुई और पुलिस ने लाठीचार्ज भी की। प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच हुई झड़प में एक पुलिस जवान घायल हुआ है। मस्जिद स्थल के आसपास पहुंच रहे प्रदर्शनकारियों को खदेड़ने के लिए पुलिस भरकस कोशिश कर रही है। इसके लिए पानी की बौछारें छोड़ीं। प्रदर्शनकारियों के जुटने से संजौली क्षेत्र में माहौल तनावपूर्ण हो गया है। ड्रोन कैमरों के जरिये प्रदर्शनकारियों पर नजर रखी जा रही है। पुलिस ने विवादित मस्जिद स्थल को पूरी तरह सील कर दिया है। संजौली में तनाव को देखते हुए कारोबारियों ने संजौली बाजार में दुकानें बंद कर दी हैं।

आज सुबह 11 बजे कुछ प्रदर्शनकारियों ने संजौली पहुंचकर भारत माता की जय और जय श्रीराम के नारे भी लगाए। हालांकि पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को खदेड़ दिया था। अपने समर्थकों संग संजौली पहुंचे हिंदू जागरण मंच के पूर्व महामंत्री कमल गौतम को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। कमल गौतम ने कहा कि हिंदू समाज की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उनके समर्थन में संजौली पहुंचा हूं और हिंदूओं की आवाज को दबाने की कोशिश की जा रही है। सिविल सोसायटी के बैनर तले कुछ लोग संजौली पहुंचकर नारेबाजी करने लगे लेकिन पुलिस ने उन्हें खदेड़ दिया।

हरियाणा बीजेपी की उपाध्यक्ष संतोष यादव ने पार्टी छोड़ी, लगाया ये बड़ा आरोप

सोनीपत, 11 सितंबर (एजेंसियां)। अगले माह(अक्टूबर) हरियाणा में विधानसभा का चुनावी रण होना है। ऐसे में सभी राजनीतिक पार्टियां इस रण में अपनी विजय पताका फहराने के लिए जोर-शोर से तैयारियां कर रही हैं। इस बीच बीजेपी को एक बड़ा झटका लगा है। हरियाणा बीजेपी की उपाध्यक्ष संतोष यादव ने बीते पार्टी का दामन छोड़ा दिया। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि वफादार रहे नेताओं की उपेक्षा की जा रही है। जानकारी के अनुसार विधानसभा चुनाव के लिए टिकट न मिलने से नारज होकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश इकाई के उपाध्यक्ष संतोष यादव ने 'कमल' का साथ छोड़ा है। साथ ही उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाया कि पार्टी के प्रति वफादार रहे जमीनी नेताओं की उपेक्षा की जा रही है।

जानकारी दे दें कि राज्य विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष यादव अटेली निर्वाचन क्षेत्र से टिकट की उम्मीद कर रहे थे, जहां बीजेपी ने केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह की बेटी आरती सिंह राव को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। उनसे पहले हरियाणा के मंत्री रणजीत सिंह चौटाला और विधायक लक्ष्मण दास नापा ने भी टिकट न मिलने के बाद पार्टी छोड़ दी थी। वहीं, नगर परिषद, सोनीपत के पूर्व चैयरमेन अशोक छाबड़ा और भाजपा नेता प्रदीप गौतम मंगलवार को अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ बीजेपी छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए। इन सभी लोगों ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की मौजूदगी में कांग्रेस का 'हाथ' पकड़ा।

मणिपुर हिंसा के जिम्मेदार केवल नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू: संजय राउत का बड़ा बयान

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मणिपुर में बीते कई दिनों से हिंसा की खबरें आ रही है। इस मुद्दे को लेकर विपक्ष ने केंद्र सरकार की तीखी आलोचना की है। इस बीच उद्धव गुट के सांसद और शिवसेना (यूबीटी) प्रवक्ता संजय राउत ने भी इस मुद्दे पर केंद्र सरकार, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को निशाने पर लिया है।

क्या बोले सांसद संजय राउत?

संजय राउत ने आरोप लगाते हुए कहा, देश के गृहमंत्री 2 दिनों से मुंबई में है। उन्होंने चुनाव का जायजा लिया, सब किया पर मणिपुर नहीं जा पा रहे हैं। वहां का जायजा नहीं ले पा रहे हैं। ये अपने आपको भगवान बताते हैं, तो भगवान केवल लाशों को देख रहा है। इस दौरान संजय राउत ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू को लेकर भी बड़ा बयान दिया। राउत ने मणिपुर हिंसा का जिक्र करते हुए कहा, इसके जिम्मेदार केवल और केवल नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू हैं, वो ऐसे लोगों के हाथों में देश की सत्ता दी है।

पीएम मोदी पर बोला हमला

राउत ने यह भी सवाल उठाया कि जब मणिपुर जल रहा है, तो राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार कहां हैं? उन्होंने प्रधानमंत्री पर भी गंभीर आरोप लगाए और कहा कि प्रधानमंत्री मोदी मणिपुर को बर्बाद करना चाहते हैं। बता दें, मणिपुर में हिंसा के बढ़ते मामलों को देखते हुए सरकार ने पांच जिलों में कर्फ्यू और इंटरनेट सेवा को पांच दिनों के लिए बंद कर दिया है। मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने कहा कि हिंसा को बढ़ावा देने वाले नफरती भाषणों और सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए यह कदम उठाया गया है। इंटरनेट सेवा 15 सितंबर को दोपहर 3 बजे तक बंद रहेगी।

गुजरात में ऐसा होता तो आप दुखी नहीं होते? मणिपुर के सांसद ने अमित शाह को लिखा पत्र, 1947 के हालातों से की तुलना

अहमदाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मणिपुर में पिछले साल मई से जारी हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। एक बार फिर से हिंसा भड़क उठी है, जिसे देखते हुए मणिपुर सरकार ने 5 जिलों में इंटरनेट सेवा को निलंबित कर दिया है और इंफाल ईस्ट और इंफाल वेस्ट जिलों में कर्फ्यू लगा दिया है, जबकि थौबल जिले में बीएनएसएस की धारा 163 (2) लागू की गई है। कांग्रेस के इन्नर मणिपुर के सांसद ए बिमोल अकॉइजाम ने गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर मांग की है कि केंद्र सरकार तुरंत प्रभावी कदम उठाए और मणिपुर में शांति बहाल करने का प्रयास करे।

उन्होंने गृह मंत्री से अनुरोध किया है कि वे इस बात की जांच करें कि क्या इस हिंसा में प्रवासी, विदेशी तत्व या ड्रग माफिया भी शामिल हैं। अपने पत्र में अकॉइजाम ने मणिपुर की स्थिति की तुलना 1947 के विभाजन से की। उन्होंने लिखा कि मणिपुर की वर्तमान स्थिति आज 1947 की तरह ही है। उन्होंने सवाल उठाया कि अगर ऐसी घटना मुख्यधारा भारत में होती, तो क्या इसे इतनी देर तक चलने दिया जाता? यदि गुजरात में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती, तो क्या आप भी दुखी नहीं होते? उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार मणिपुर के लोगों की कोई परवाह नहीं कर रही है। उन्होंने लिखा, यह दुखद है कि वर्तमान प्रशासन की निगरानी में इतना गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है।

चुनाव में न रैलियों पर रोक लगे न बूथ बदले जाएं

चुनाव आयोग ने जारी किया सख्त निर्देश

जम्मू , 11 सितंबर (एजेंसियां)। विधानसभा चुनावों में जनता की भागीदारी बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग ने प्रशासन और सुरक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। चुनाव आयोग ने कहा है कि नेताओं और कार्यकर्ताओं को बेवजह एहतियातन हिरासत में ना लिये जाएं,सुरक्षा कारणों का हवाला देकर मतदान केंद्रों को न बदलें, दो केंद्रों को मिलाकर एक ना करें, साथ ही अंतिम समय में या अचानक रैलियों को रद्द न करें। निर्वाचन आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक पिछले चुनावों में अचानक रैलियों को रद्द करने या एहतियातन राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया था। ऐसा कई बार हुआ था। आयोग ने माना है कि इससे वोटर भ्रमित हो जाते थे। चुनाव प्रक्रिया प्रभावित होती थी। इसी के चलते मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने पूर्ण कमीशन के साथ जम्मू-कश्मीर का दौरा करने के बाद यह निर्देश दिया है।

आपराधिक पृष्ठभूमि वालों के खिलाफ आयोग सख्त

चुनाव आयोग के अधिकारी के मुताबिक मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार, चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू ने जम्मू-कश्मीर के अपने दौरे में अधिकारियों को साफ तौर पर निर्देश दिया था।

उन्होंने कहा था कि किसी भी प्रकार की एहतियाती कार्रवाई पक्षपातपूर्ण नहीं होनी चाहिए। हिरासत में केवल उन्हीं लोगों को लिया जाए, जो आपराधिक पृष्ठभूमि के हैं। पूर्व मुख्यमंत्री और पीडीपी अध्यक्ष ने भी इस मुद्दे को उठाया था। पिछले चुनावों में मतदान से पहले राजनीतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को एहतियाती रूप से हिरासत में लिया गया था। इसके बाद महबूबा मुफ्ती ने मई में लोकसभा चुनाव के दौरान इस मुद्दे को उठाया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि उनके पार्टी कार्यकर्ताओं और पोलिंग एजेंटों को हिरासत में लिया गया था।

मतदान केंद्रों को जोड़ने या बदलने पर भी रोक

चुनाव आयोग ने मतदान केंद्रों को जोड़ा या दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित नहीं करने का भी निर्देश दिया है। यह एक अहम बदलाव माना जा रहा है। इस गतिविधि पर आयोग ने पूरी तरह से रोक लगा दी है। पिछली चुनावी प्रक्रियाओं में ऐसा कई बार हुआ था। इससे मतदाताओं में भ्रम की स्थिति हो जाती थी। साथ ही उम्मीदवारों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग ने प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि वे अंतिम समय में रैलियों और अन्य कार्यक्रमों को रद्द न करें और समय पर इन कार्यक्रमों के लिए अनुमति दें।

भारी बारिश से हालात बिगड़े, बान सुजारा बांध के सभी 12 गेट खुले, बक्सवाहा में बाढ़ की स्थिति

छतरपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के छतरपुर एवं टीकमगढ़ में लगातार तेज बारिश हो रही है इससे दोनों जिलों की सीमा पर बना बानसुजारा बांध का जल स्तर बढ़ जाने के कारण एवं कैचमेंट एरिया में भारी बारिश की वजह से धसान नदी में पानी की आवक बहुत तेजी से बढ़ रही है। बांध की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए आज करीब 8:30 बजे बांध के सभी 1.50-1.50 गेट खोलकर दिए गए हैं। नदी में लगभग 2000 से 2500 क्यूमैक्स पानी सुरक्षित रूप से छोड़ दिया गया है। इससे बांध के नीचे धसान नदी में लगभग 15 से 20 फुट जलस्तर बढ़ गया। प्रशासन द्वारा आमजन से अपील की गई है, नदी क्षेत्र से दूर रहें और नदी के आसपास बिल्कुल नही आएं।

वहीं जिले के बक्सवाहा थाना क्षेत्र के बम्हौरी ग्राम पंचायत में तेज बारिश के चलते गंभीर बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है। बम्होरी से शाहगढ रोड पर स्थित डॉक्टर खरे की पुलिया के पास भारी बारिश के कारण जल भराव हो गया, जिससे लगभग एक दर्जन घर पूरी तरह से पानी से लबरेज हो गए हैं। वर्तमान में जन जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। सड़कें और गलियां जलमग्न हो गई हैं, और स्थानीय निवासी इस स्थिति से जूझ रहे हैं। बाढ़ के बीच में फंसे लोगों की सुरक्षा के लिए प्रशासन ने तत्परता दिखाई है। मौके पर पहुंची पुलिस, प्रशासन, और एसडीआरएफ (आपदा प्रबंधन बल) की टीम ने राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया है।

बचपन का प्यार, लिव-इन रिलेशन पर कोर्ट का फैसला, वयस्क ही बस हिफाजत के हकदार

गुरूग्राम, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कम उम्र के प्यार और साथ रहने के फैसला लेने वाले नाबालिगों की सुरक्षा को लेकर कोर्ट ने बड़ा सुनाया है। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने साफ किया है कि लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले नाबालिग अदालत से कानूनी सुरक्षा नहीं मांग सकते। जस्टिस सुरेश्वर ठाकुर और जस्टिस सुदीप्ति शर्मा की बेंच ने कहा कि ऐसे संबंध, चाहे दो नाबालिगों के बीच हों या नाबालिग और वयस्क के बीच, कानूनी सुरक्षा के दायरे से बाहर हैं। नाबालिगों के फैसले लेने की क्षमता पर वैधानिक सीमाओं का हवाला देते हुए बेंच ने जोर देकर कहा, 'किसी वयस्क के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाला नाबालिग या जहां लिव-इन रिलेशनशिप में केवल नाबालिग ही भागीदार हैं, तो वह व्यक्ति अदालतों से सुरक्षा नहीं मांग सकता। इस निष्कर्ष पर पहुंचने का कारण इस तथ्य में दृढ़ता से निहित है कि किसी भी धार्मिक संप्रदाय से जुड़ा नाबालिग कॉन्ट्रैक्ट करने में अक्षम है। अगर ऐसा है, तो उसके पास चुनाव करने या अपनी स्वतंत्रता व्यक्त करने की भी क्षमता नहीं है।' हाईकोर्ट ने अपने विस्तृत आदेश में कहा कि कानूनी ढांचे नाबालिगों को चुनाव करने से रोकते हैं, जिसमें लिव-इन रिलेशनशिप में प्रवेश करने का गलत निर्णय भी शामिल है, चाहे वह किसी दूसरे नाबालिग के साथ हो या किसी वयस्क के साथ... ऐसे रिश्तों में नाबालिगों को सुरक्षा प्रदान करना वैधानिक प्रतिबंधों का खंडन करेगा जो नाबालिग के विवेक को सीमित करते हैं। अदालत ने कहा कि ऐसे लिव-इन रिश्तों में नाबालिग भागीदारों को सुरक्षा प्रदान करना, जहां या तो एक या दोनों नाबालिग हों, नाबालिग के निर्णय लेने की क्षमताओं पर कानूनी प्रतिबंधों के साथ टकराव होगा।

'मुख्यमंत्री ने कानून का उल्लंघन किया', शिवसेना नेता के ट्रस्ट को जमीन आवंटित करने पर घिरे शिंदे

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने महाराष्ट्र सरकार पर बंजारा लोगों के लिए सामुहिक केंद्र स्थापित करने के लिए शिवसेना नेता संजय राठौड़ के ट्रस्ट को नवी मुंबई में जमीन आवंटित करने के लिए कानूनों को नजरअंदाज करने का आरोप लगाया। महाराष्ट्र विधानसभा में भाजपा नेता ने इसका पलटवार किया। उन्होंने कहा कि भूमि पार्सल के बारे में चिंता करने के बजाय वडेट्टीवार को अपनी विधानसभा सीट (ब्रह्मापुरी) को बचाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वडेट्टीवार महाराष्ट्र कांग्रेस के ओबीसी चेहरों में से एक हैं। राज्य में बंजारा ओबीसी समुदाय के अंतर्गत आते हैं। मंगलवार को कांग्रेस नेता वडेट्टीवार ने कहा, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कानून का उल्लंघन किया। बंजारा लोगों के लिए एक सामुदायिक केंद्र स्थापित करने के लिए कैबिनेट मंत्री संजय राठौड़ के स्वामित्व वाले ट्रस्ट को नवी मुंबई में जमीन का पार्सल दिया गया। इसे लेकर जब भाजपा एमएलसी प्रवीण दरेकर से बात की गई, तो उन्होंने कहा, मुंबई या नवी मुंबई में जमीन पार्सल को लेकर चिंता करने की बजाय वडेट्टीवार को चंद्रपुर जिले में अपनी विधानसभा सीट पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा, आपके अपने संसद सदस्य ने आपके निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवार बदलने की मांग की। बता दें कि वडेट्टीवार विदर्भ क्षेत्र के चंद्रपुर जिले में ब्रह्मपुरी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने इस क्षेत्र से प्रतिभा धानोरकर को उतारा था। सूत्रों के अनुसार, वडेट्टीवार अपनी बेटी के लिए इस क्षेत्र से टिकट मांग रहे थे। चंद्रपुर में एक कार्यक्रम के दौरान धानोरकर ने लोगों से ब्रह्मपुरी विधानसभा सीट से कुनबी की जीत सुनिश्चित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा, झूठे आश्वासनों का शिकार न बनें। कुछ नेता कुनबी समाज का शोषण करते हैं। हमें एक साथ होकर समुदाय का समर्थन करना चाहिए। ब्रह्मापुरी और गढ़चिरौली से गैर कुनबियों के चुने जाने की परंपरा बदलनी चाहिए। भाजपा एमएलसी परिणय फुके ने कहा कि वह यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास करेंगे कि उनकी पार्टी ब्रह्मपुरी से कुनबी उम्मीदवार को मैदान में उतारे।

'हम तो सीना ठोक कर कह रहे हमसे गलती हुई', जेडीयू का तेजस्वी यादव पर हमला

पटना, 11 सितंबर (एजेंसियां)। जेडीयू ने बिहार के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर एक बार फिर हमला बोला है। बुधवार को जेडीयू नेता नीरज कुमार ने कहा कि बिहार में एनडीए पूरी तरह से एकजुट है। 2025 का विधानसभा चुनाव सीएम नीतीश कुमार के ही नेतृत्व में लड़ेंगे। उन्होंने आरजेडी पर भी पलटवार किया। कहा कि हम तो सीना ठोक कर कह रहे हैं कि हां हमसे गलती हुई। नीरज कुमार ने कहा, तेजस्वी यादव में अगर हिम्मत है तो अपने पिता से घोषणा कराएं कि 15 वर्ष तक पति-पत्नी (लालू-राबड़ी) के शासनकाल में 118 नरसंहार, चरवाहा विद्यालय, समाज के दलित अति पिछड़ा समुदाय के लोगों के वाजिब हक पर जैसे राजनैतिक वज्रपात किया गया था उस गलती को आप नहीं आपके पिता में नैतिक बल अगर है तो उन्हें कहिए कि वह सार्वजनिक बयान दें कि मैं गुनहगार हूं। मैंने बिहार को रसातल में पहुंचाने में अपनी भूमिका अदा की है।

आप तो स्वीकार कर ही चुके हैं कि नीतीश कुमार बिहार के शिल्पकार रहे हैं। बता दें कि बिहार के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव बीते मंगलवार से 'कार्यकर्ता संवाद यात्रा' पर हैं। इस बीच वह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर जमकर हमला भी कर रहे हैं। बिहार में बढ़ते अपराध को लेकर भी तेजस्वी यादव लगातार सवाल उठा रहे हैं। हाल ही में सीएम नीतीश कुमार ने कहा था कि उनसे दो बार गलती हो गई है अब वह आरजेडी के साथ नहीं जाएंगे।

हरियाणा चुनाव: जेजेपी और एएसपी की 18 उम्मीदवारों की तीसरी लिस्ट जारी, बीजेपी के बागी रणजीत चौटाला को दिया समर्थन

गुरूग्राम, 11 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) और आज़ाद समाज पार्टी (एएसपी) ने 18 उम्मीदवारों की तीसरी लिस्ट बुधवार (11 सितंबर) को जारी की। जेजेपी के 15 और एएसपी के तीन उम्मीदवारों की घोषणा की गई है। दोनों दलों ने रानियां में निर्दलीय उम्मीदवार रणजीत चौटाला का समर्थन किया है। पूर्व मंत्री रणजीत चौटाला ने टिकट नहीं मिलने पर पिछले दिनों बीजेपी से इस्तीफा दे दिया था और निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान किया था। बता दें कि रणजीत सिंह चौटाला रिश्ते में दुष्यंत चौटाला के चाचा है। इससे जाहिर हो अब अजय चौटाला और रणजीत चौटाला एक हो गए हैं, लेकिन दूसरी तरफ चौटाला परिवार का दूसरा खेमा इनकी खिलाफत कर रहा है। यमुनानगर से इंतजार अली गुर्जर, थानेसर से सूर्य प्रताप सिंह राठौड़, इंद्री से कुलदीप मदान, पानीपत ग्रामीण से रघुनाथ कश्यप, टोहाना से हवा सिंह खोबड़ा, रतिया से रमेश कुमार ओड, कालांवाली से गुरजंट तिगड़ी पार्षद, आदमपुर से कृष्ण गंगवा, हिसार से रवि आहुजा, रोहतक से जितेंद्र बल्हारा, कलानौर से महेंद्र सुडाना, बादली से कृष्ण सिलाना, झज्जर से नसीब सोनू वाल्मीकि, हथीन से रविंद्र सहरावत, फरीदाबाद एनआईटी से हाजी करामत अली को मैदान में उतारा गया है। वहीं आज़ाद समाज पार्टी (एएसपी) की तरफ से रादौर से मंदीप टोपरा, रेवाड़ी से मोती यादव और फरीदाबाद से निशा वाल्मीकि को टिकट दिया गया है।

टोहाना सीट से जेजेपी ने हवा सिंह खोबड़ा को मैदान में उतारा है वे एक दिन पहले जेजेपी में शामिल हुए थे। निशान सिंह और देवेंद्र बबली के पार्टी छोड़ने के बाद टिकट के दावेदारों में उनका नाम सबसे ऊपर था। हवा सिंह खोबड़ा मार्केट कमेटी के जोनल मार्केटिंग इन्फोर्समेंट आफिसर पद पर रिटायर हो चुके है। वहीं उनके बेटे रणबीर सिंह खोबड़ा निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर लोकसभा चुनाव लड़ चुके हैं।

कनाडा की फ्लाइट पकड़ने से पहले नशा तस्कर काबू, पंजाब पुलिस ने दिल्ली एयरपोर्ट पर धर दबोचा

जालंधर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। (पंजाब) नशा तस्करी का धंधा करने वाले एक तस्कर को लुधियाना देहात की पुलिस ने उस समय दिल्ली एयरपोर्ट पर दबोच लिया जब वह कनाडा जाने के लिए फ्लाइट पकड़ने पहुंचा था। इससे पहले कि आरोपी जहाज में बैठता, पुलिस ने गुप्त सूचना के अधार पर उसे घेराबंदी कर पकड़ लिया। आरोपी की पहचान चमकौर सिंह निवासी गांव रछीन के रूप में हुई है। पुलिस आरोपी को अदालत में पेश कर आगे की पूछताछ कर रही है। थाना सदर के अधीन पड़ती चौकी लोहटबद्दी के इंचार्ज गुरसेवक सिंह ने बताया कि पुलिस ने करीब चार महीने पहले नशा तस्करी के आरोप में तीन तस्करों को पकड़ा था।

पुलिस ने आरोपियों से हेरोइन बरामद कर थाना सदर में मामला दर्ज कर आगे की पूछताछ की तो आरोपियों ने चमकौर सिंह का नाम बताया और कहा कि वह उससे हेरोइन लेकर आते हैं। इसके बाद पुलिस ने चमकौर सिंह का नाम भी मामले में डाल दिया था। इस बारे में पता चलते ही आरोपी फरार हो गया था, जिसकी पुलिस तलाश कर रही थी। इसी दौरान आरोपी कनाडा जाने की तैयारी में जुट गया। आरोपी ने इसके लिए पुलिस विभाग से पीसीसी तक हासिल कर ली थी। हालांकि आरोपी कनाडा फरार हो जाता, इससे पहले पुलिस को इसकी भनक लग गई और पुलिस ने आरोपी को एयरपोर्ट पर जाकर पकड़ लिया।

मध्य प्रदेश के मंत्री का दावा

भारतीयों ने की थी अमेरिका की खोज, वसुलिन आठवीं सदी में वहां पहुंचे थे

भोपाल, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री, इंदर सिंह परमार अमेरिका को लेकर एक बड़ा बयान दिया है। उनका दावा है कि भारतीय पूर्वजों ने अमेरिका की खोज की थी। उनका बयान व्यापक रूप से स्वीकृत कहानी को चुनौती देता है कि क्रिस्टोफर कोलंबस ने खोज की थी। परमार ने भोपाल के बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय में एक दीक्षांत समारोह के दौरान ये दावे किए। अपने संबोधन में, परमार ने कहा, कोलंबस ने अमेरिका की खोज की। भारतीय छात्रों का इससे कोई लेना-देना नहीं था। अगर उन्हें पढ़ाया जाना था, तो उन्हें यह भी सिखाया जाना चाहिए कि कोलंबस के बाद के समय में लोगों ने मूल निवासियों को कैसे प्रताड़ित किया और वहां की आदिवासी समाज को नष्ट कर दिया क्योंकि समाज प्रकृति का उपासक था, सूर्य का उपासक था। परमार ने वर्तमान ऐतिहासिक शिक्षाओं की आलोचना करते हुए सुझाव दिया कि छात्रों को कोलंबस के बाद मूल आबादी के खिलाफ किए गए अत्याचारों के बारे में सीखना चाहिए। उनका तर्क था कि इन घटनाओं को इतिहास को सही ढंग से समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। परमार ने आगे दावा किया कि भारत के महान नायक वसुलीन आठवीं शताब्दी में अमेरिका पहुंचे थे और उन्होंने सैंटियागो में मंदिर बनवाए थे। उन्होंने कहा, ये तथ्य अभी भी वहां एक संग्रहालय में लिखे हुए हैं। ये तथ्य अभी भी वहां एक पुस्तकालय में रखे हुए हैं।

उम्र में बड़ी युवती से शादी के लिए तैयार नहीं हुए परिजन, प्रेमी जोड़े ने खाया जहर, प्रेमिका की मौत

जबलपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में एक प्रेमी जोड़े ने जहर खा लिया। युवती की उम्र अधिक होने के कारण युवत के परिजन शादी के लिए तैयार नहीं थे। यह बार प्रेमी जोड़े को रास नहीं आई और उन्होंने जहर खा लिया।

जहर खाने से प्रेमिका की मौत हो गई, जबकि प्रेमी की हालत गंभीर बनी हुई है। एसडीओपी सिहोरा पारूल शर्मा के अनुसार ग्राम दिनारी खमरिया निवासी 17 वर्षीय किशोर और कटनी जिले की बहोरीबंद निवासी संगीता पटेल (19) के बीच करीब तीन साल से प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों शादी करना चाहते थे, इसे लेकर दोनों ने अपने-अपने परिजनों को जानकारी थी। लेकिन, दोनों की उम्र के कारण परिजन शादी के लिए तैयार नहीं थे और उनके प्रेम संबंध का विरोध कर रहे थे। इससे प्रेमी जोड़ा परेशान था। शाम करीब 5 बजे किशोर ने प्रेमिका को मिलने के लिए अपने गांव बुलाया था।

इसके बाद दोनों ने खेत में जाकर किसी जहरीली वस्तु का सेवन कर लिया। ग्रामीणों ने उन्हें बेहोशी की हालत में देखा तो परिजनों को सूचना दी। परिजन उन्हें उपचार के लिए सिहोरा अस्पताल ले गए, जहां जांच के बाद डॉक्टर ने युवती को मृत घोषित कर दिया।

गाजियाबाद के कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय से तीन छात्राएं लापता

गाजियाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले से एक बेहद शॉकिंग खबर सामने आई है। जिले में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के छात्रावास से तीन लड़कियां के लापता होने की बात सामने आई है। इस घटना से वहां हड़कंप मच गया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार मामला गाजियाबाद जिले के सिहानी गेट थाने के नेहरू नगर इलाके में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के छात्रावास का है। पुलिस ने बताया कि लड़कियों की तलाश की जा रही है। पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) राजेश कुमार ने बताया कि लापता लड़कियों का पता लगाने के लिए पुलिस टीमें लगाई गई हैं। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि वे गाजियाबाद से बाहर घूमने गई हों, लड़कियों के बारे में जल्द ही पता चल जाएगा। पुलिस के मुताबिक स्कूल की सभी छात्राएं सोमवार रात करीब 11 बजे खाना खाने के बाद अपने कमरों में सोने चली गईं। मंगलवार को जब हॉस्टल का गेट खोला गया तो 14 से 16 साल की तीन लड़कियां अपने रूम से गायब मिलीं। छात्रावास में वे काफी करीबी दोस्त थीं। जानकारी के मुताबिक लड़कियां गाजियाबाद की सुदामा पुरी कॉलोनी, लोनी और दिल्ली की कृष्णा नगर कॉलोनी की रहने वाली हैं।

स्वतंत्र वार्ता

गुरुवार, 12 सितंबर- 2024

राजनीति की तेज गति

देश की राजनीति भी अजीब ही है। समाज की अगुवाई करने वाले नेता लोगों से कहते हैं कि समय की गति बहुत तेज होती है इसलिए संभलकर धीरे चलो, लेकिन वे खुद दुनिया से आगे निकलने की दौड में शामिल होते हैं। नेताओं की चाल देखना हो तो हरियाणा और जम्मू-कश्मीर इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जहां नेता दिन रात पूरी ताकत झोंक कर चुनाव लड रहे हैं। दोनों जगह विधानसभा का चुनाव है। हरियाणा में तू डाल-डाल, मैं पात-पात की कशमकश चल रही है। विनेश फौगाट और बजरंग पहलवान को शामिल करके कांग्रेस खुशियां मना रही थी, लेकिन 'आप' से समझौता टूटते ही कांग्रेस की रंगत फीकी पडती दिखाई देने लगी है। समझौता टूटने से हरियाणा इकाई के कांग्रेसी नेता अभी तो खुश हो रहे हैं लेकिन इसका फायदा निश्चित रूप से भाजपा को ही मिलेगा। वजह साफ है कि आप जितने भी वोट पाएगी वह सब कांग्रेस का ही होगा। हरियाणा में देखा जाए तो जातीय गणित से केजरीवाल की आप पार्टी कुछ हद तक भाजपा को भी नुकसान पहुंचा सकती है। कम वोटों के अंतर से होने वाली जीत-हार में 'आप' पार्टी का फैक्टर साफ दिखेगा। देर से ही सही, हो सकता है कांग्रेस नेतृत्व को यह बात समझ में आ जाए, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होगी। अब तो चुनाव परिणाम आने पर ही असल माजरा समझ में आएगा, लेकिन यह तय है कि भाजपा दस साल के राज के बावजूद अपनी मजबूती बनाए हुए है। कांग्रेस यहां एज पर तो है लेकिन उसके वोट टूटने के कई कारण हैं। जेजेपी का समझौता चंद्रशेखर आजाद से है, वे एससी-एसटी व मुस्लिम वोट लेकर कांग्रेस को नुकसान पहुंचाएंगे। इनेलो का समझौता बसपा से है, वह भी कांग्रेस को ही कमजोर करेगी। 'आप' से समझौता टूटने से कुछ नुकसान वह भी पहुंचाएगी। दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पहला विधानसभा चुनाव हो रहा है। पहला बदलाव यहां पिछले लोकसभा चुनाव में आया था, जिसमें अब तक की सर्वाधिक वोटिंग हुई थी। वरना इससे पहले तो 25 से 30 प्रतिशत वोट में ही चुनाव हो जाया करता था। नेशनल कॉन्फ्रेंस जैसी राजनीतिक पार्टियों के लम्बे राज का यही राज था। भाई लोग 10-12 हजार वोट पाकर ही चुनाव जीत जाया करते थे। इस चुनाव में कश्मीर में अनुच्छेद 370 ही प्रमुख मुद्दा बना हुआ है। भाजपा इस अनुच्छेद को हटाने का श्रेय लेकर चुनाव जीतना चाहती है। उसका दावा है कि अब यहां शांति है। पर्यटकों की संख्या बढ़ बढ़ी है, जिसका लाभ स्थानीय लोगों को मिल रहा है। नेशनल कॉन्फ्रेंस अनुच्छेद 370 को वापस लागू करने को मुख्य मुद्दा बनाए हुए है। उसका दावा है कि वह सत्ता में आई तो कश्मीर में अनुच्छेद 370 फिर से लागू करवा देगी। देखा जाए तो नेशनल कॉन्फ्रेंस का यह दावा सिर्फ लोगों को बरगलाने के लिए है। यह सच है कि कश्मीर घाटी में नेशनल कॉन्फ्रेंस का अच्छा दबदबा है। लम्बे समय तक उसने यहां शासन भी किया है। पहले शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, फिर उनके बेटे फारूख अब्दुल्ला के नेतृत्व में और एक बार फारूख के बेटे उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में भी। हिंदू बहुल जम्मू क्षेत्र में जरूर भाजपा का प्रभाव है। नेशनल कान्फ्रेंस ने कांग्रेस से समझौता शायद इसीलिए किया है कि वह कांग्रेस के बल पर जम्मू क्षेत्र की कुछ सीटें भाजपा से छीन सके। कौन, कितनी ताकत से उभर पाएगा यह तो चुनाव परिणाम आने पर ही पता चलेगा, लेकिन फिलहाल कश्मीर और हरियाणा दोनों जगह चुनाव प्रचार चरम पर है। सभी दल अपनी-अपनी पूरी ताकत झोंके हुए हैं। उनकी ताकत का क्या असर पडता है यह तो आठ अक्टूबर को ही दिखाई देगा।

अगला फर्जी बाबा कौन

सुरेश मिश्रा

धूप जोरां की पड़ री थी, और नन्दू खाट पे पैर लटकाए पंखी के नीचे बीड़ी सुलगावण लाग रहा था। गांव की चहल-पहल तो न रई पर खबरां में हर रोज़ कुछ ना कुछ नया गुल खिला ही रहा था। आज कल खबरें देख-सुन के आदमी सोच में पड़ जा सै कि के हो रे है। पहले तो यह आलम था कि बस खेत-खलियाण की बातें, अब तो गांव के लौंडे तक पॉलिटिक्स की गुत्थी सुलझावण की बातां करै।

आज नन्दू का ध्यान एक नए तरह की लुगाई पे अटका सै – फर्जी बाबा। गांव में तो सुण्या सै कि बाबा सच्चा और ज्ञान का पिटारा होवै, पर आज कल हर नुक्कड़ पे फर्जी बाबे मिलैं। अबके ही अखबार में देख्या, गांव में नया बाबा प्रकट, तीन दिन में चमत्कार दिखाएगा। तावड़े राम, चमत्कार देखण की भी कोई फ़ीस लगेगी। नन्दू हंसण लाग गया, हां भाई, पैसा फेंको और आशीर्वाद लो। अबके गांव में भी बाबागिरी का कारोबार बढ़ता जा रया सै। नन्दू ने बताया, पिछली हफ्ते अपने ही काका, जिनने कभी मंदिर का रस्ता न देख्या, वो अब बाबा बनग्या। बोले, 'मुझे भगवान का आशीर्वाद मिला सै, सब दुख दूर कर दूंगा।'काका ने क्या किया? वो पहले बगड़वा में दुकान करदा था, पर कर्जा हो गया। लुगाई छोड़ गई, फिर काका ने सोचा बाबा बन लेता हूँ, बाबा की चोंगी लगा, भव्य दरबार सजाया। गांव के लोग भी लाइन लगाके बैठण लाग गए। सब चाहते थे चमत्कार। जो आदमी खुद की जिंदगी में कुछ न कर पाया, अब दूसर्यां की जिंदगी सुधारण चला। बस बाबा का जलवा चालू हो गया। गांव के लोग भी एकदम अंधभक्त। कोई बाल बच्चा ठीक करावण आया, तो कोई नौकरी की बात लेके। और बाबा के पास हर सवाल का जवाब। ऊपर से अंधेरे में दीपक जला के बाबा जी बोले, बस, मेरे चरणों में बैठ जा, सब ठीक होगा। और असली चमत्कार तो यारा ये सै कि बाबे के पास जेब खाली होवै और भक्तां के जेब का माल धीरे-धीरे उसकी थैली में चल्या आवै। गांव के हाकिम तक बाबे की शरण में आगए। ताऊ बोला, बेटा जी, ईमानदारी से तो कुछ होवै न सै, बाबे के आशीर्वाद से सब कुछ हो जागा। और उधर से नेता जी, बाबे के साथ तस्वीरा खिंचवा रहे थे। सोचो भाई, बाबे का आशीर्वाद लिया, अब अगला चुनाव पक्का। अब तो नेतागिरी भी बाबागिरी से चलती सै। बाबा जी बोले, मैं देखता हूं, आज कल नेता भी मेरे आशीर्वाद के बिना कुछ न कर पावैं। सबकी डोर मेरे हाथ में सै। बाबा जी के भक्त झट से बोले, बिलकुल जी, आपकी लीला अपरम्पार सै।

नन्दू तो बस अपना सिर धुनता रया। अरे भाई, सबको सबकुछ दिख रया सै, पर कोई आंख खोलण को तैयार न सै।

फिर गांव में फर्जी बाबे की चर्चा और जोर पकड़ गई। कोई बोला, बाबा जी ने गंगाजल छिड़क के खेतों में पानी बरसाया सै, तो कोई बोला, बाबा ने मेरी बीमार गाय को ठीक कर दिया। नन्दू तो सोच में पड़ गया, अरे भाई, बाबे ने तो डॉक्टरों की नौकरी ही खा ली। इतने में गांव में नए बाबे का आगमन होया, और उसने गांव के बीचों बीच अखाड़ा बना दिया। अजीब लटके-झटके। हुक्का पीते-पीते बाबा जी बोले, मैं ध्यान लगाऊं, और सब दुख दूर करूं। लोग लाइन में खड़े हो गए – सिरदर्द ठीक कराणा हो, या नोकरी लगवाणा हो। बाबा के पास हर समस्या का हल था।

पर एक दिन अजब बात होई। बाबे का असली चेहरा तब सामने आया जब उसने गांव की चौधरी की जमीन पे हाथ मारा। चौधरी ने बोले, अबे बाबा, तूं भगवान सै तो सब कुछ तेरे नाम करे देऊँ क्या?

क्यों रिहायशी इलाके की ओर आ रहे हैं जंगली जानवर ?

अशोक भाटिया

उत्तर प्रदेश के बहराइच में आदमखोर भेड़ियों के हमले खत्म होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यहां लगातार आदमखोर भेड़िये लोगों को अपना निशाना बना रहे हैं। इसी बीच मंगलवार रात को भेड़िये ने एक सोती हुई बच्ची को अपना निशाना बनाया और उस पर हमला कर दिया। भेड़िया बच्ची को अपने साथ ले जा ही रहा था कि अचानक शोर मचाने पर घरवालों ने बच्ची को भेड़िये के चंगूल से बचाया और इलाज के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे। एक ही रात में बहराइच के दो अलग-अलग गांव में बच्चियों पर आदमखोर भेड़िये ने देर रात हमला किया। बता दें कि भेड़ियों द्वारा किए गए हमलों में अब तक 9 लोगों की मौत हो चुकी है। इसमें से 8 बच्चे ही थे और एक व्यक्ति था, जिसकी भेड़िये के हमला करने के कारण मौत हो गई है। बता दें कि अब तक 5 भेड़ियों को पकड़ा जा चुका है। इनमें से एक भेड़िये को मंगलवार सुबह ही वन विभाग के अधिकारियों द्वारा पकड़ा गया था। हालांकि, इसके बाद भी मंगलवार रात को ही एक भेड़िये ने बच्ची पर हमला कर दिया।

इतना सब होने के बाद विचार करने योग्य बात यह है कि क्यों रिहायशी इलाके की ओर आ रहें हैं जानवर । आखिर क्यों कभी गुजरात की सड़कों पर मगरमच्छ घूमता दिखता है, तो कभी तेंदुआ मेरठ के किसी घर में घुस जाता है, तो कभी दिल्ली की सड़कों पर मंडराता है। इस तरह जंगली जानवरों के रिहायशी इलाकों में आने से हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि अब जंगली जानवरों और इंसानों के बीच संघर्ष कितना ज्यादा बढ़ गया है। जंगलों के पास गांवों और शहरों में अंधाधुंध विकास और तेजी से फैलते कंक्रीट के जंगल ने जंगली जानवरों को बुरी तरह प्रभावित किया है। शहर जंगलों तक फैल रहे हैं और जानवरों के रहने की जगह कम होती जा रही है। हम मुंबई की ही बात करें तो अँधेरी के वर्सोवा , गोरेगांव के आरे कालोनी , बोरीवली के नेशनल पार्क इलाके के जंगलों को काट कर सीमेंट कंक्रीट के मकान खड़े कर दिए है तो अब जंगली जानवर कहाँ जाएंगे । गोरेगांव स्थित फिल्म सिटी में तो मैंने स्वयं 5 फीट की दूरी से जंगली शेर को देखा है । खोजने जाएंगे तो ऐसे उदाहरण सैकड़ों मिलेंगे ।

इंडियन फॉरेस्ट सर्विस के उत्तराखंड कैडर के अधिकारी और जिम कॉर्बेट के पूर्व डायरेक्टर सुरेंद्र मेहरा कहते हैं कि सबसे बड़ी बात तो यह है कि आबादी बढ़ी है. पहले जहां सौ गाड़ियां क्रॉस करती थीं अब उसी रास्ते पर उतनी ही देर में हजार गाड़ियां क्रॉस कर रही हैं ज़ाहिर तौर पर इससे जानवर के दिखने, टकराने का चांस बढ़ जाएगा। दूसरी बात बहुत सारे वाइल्ड लाइफ़ एरिया में जानवरों के एक जगह से दूसरी जगह जाने की जगह घट गई है. एक जंगल से दूसरे जंगल तक जाने का रास्ता घट गया है जैसे महाराष्ट्र के फ़ॉरेस्ट एरिया है, उनका कनेक्शन आपस में टूट गया है, कॉरिडोर सिकुड़ गए हैं।

तीसरी बात, पहले जंगल, खेत और आबादी बीच में एक बफर एरिया होता था जिसे गोचर या वेटलैंड कहा जाता था. अब वो एरिया भी ख़त्म हो रहे हैं जिससे सीधे सीधे खेत के बाद जंगल आ गया है. इसलिए आप देखेंगे कि उत्तरप्रदेश के तराई क्षेत्र में टाइगर और लेपर्ड आम तौर पर दिख जाया करते हैं।

भेड़िया हो या तेंदुआ, भालू हो या मगरमच्छ सभी जंगली जानवरों के शहरों में भटकने के पीछे हम और आप बराबर जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिंग, जंगलों की कटाई, जंगली जानवरों के रहने की जगहों पर गांवों का अतिक्रमण इसे बढ़ा रहा है। भोजन और सेफ जोन की तलाश में जंगली जानवर इंसानी बस्तियों तक पहुंच रहे हैं। जीने की जरूरत और रहने के लिए सुरक्षित जगह की तलाश उन्हें उन जगहों पर जाने को मजबूर कर रहा है जहां पर रिहाइश है।आसपास सफाई रखने के मामले में भी लोग लापरवाह हो गए हैं। बचा हुआ खाना, मांसाहारी खाने के बाद बची हड्डियां हम इधर-उधर फेंक देते हैं, जिसे खाने के लिए कुत्ते और सूअर जैसे जानवर आकर्षित होते हैं। ये जानवर तेंदुओं को भी आकर्षित करते हैं और उनके लिए फूड चेन बनाने का काम करते हैं। इसलिए देश के अलग-अलग हिस्सों से आ रही जंगली जानवरों के आतंक की तस्वीरें जानवरों के प्रति हमारी लापरवाही की ही गवाही है। वाइल्ड स्क्रीन पांडा पुरस्कार विजेता और वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर नरेश बेदी बताते हैं कि हर जगह एनक्रोचमेंट तो है लेकिन कुछ जानवरों को जंगल में खाने के लिए कुछ नहीं है। नरेश जी का हरिद्वार के पास एक फार्म है जिसका एक हिस्सा राजाजी नेशनल पार्क तक चला जाता है। गर्मियों में तो खाना नहीं होने की वजह से जानवरों को दिक्कत होती है लेकिन बारिश में तो घास और कई तरह के उनके भोजन हैं। उसके बाद भी जानवर खाने के लिए इंसानों के बीच ही आ रहे हैं। इस तरह के कॉनफ्लिक्ट पहले की तुलना में बढ़ें हैं और उससे बचने के लिए बहुत सारे उपाय भी किये जा रहे हैं लेकिन ये सब काफी नहीं हैं। इसके पीछे कई कारण हैं जैसे- पेड़-पौधे कम लग रहे हैं और जंगल कम होते जा रहे हैं। जानवर जंगल के बाहर अपनी नई टेरिटरी बनाने के लिए नये इलाकों की तलाश में रहते हैं। ऐसे में वह गांवों की ओर जाते हैं और इससे संघर्ष बढ़ता है. अपने ही फॉर्म हाउस के आसपास उन्हें दिन भर में करीब 4 से 5 तेंदुए टहलते हुए दिख जाते हैं जो इंसानों पर तो हमला करते ही हैं और कुत्ते भी उठा ले जाते हैं।

नरेश बेदी कहते हैं कि इसके दोषी तो सबसे पहले हम हैं क्योंकि हमारी जरूरतें बढ़ती जा रही हैं।पर्यावरण का नुकसान तो है ही, जानवरों पर भी उसका बुरा असर पड़ रहा है। जब जंगल काटेंगे, भारी मात्रा में खनन होगा, ट्रक चलेंगी, उसकी मिट्टी उड़ेगी। उसका जानवरों के मूवमेंट पर भी बहुत असर पड़ेगा। ट्रक के चपेट में आने से कई जानवर मर जाते हैं और हाईवे पर ट्रक खड़े होने की वजह से वह सड़क भी नहीं पार कर पाते हैं।

इंडिया के मैनेजर ऑफ इमरजेंसी रिस्पांस टीम के दीपक चौधरी कहते हैं बहराइच वाले केस में पुलिस को साज़िश की तहकीकात अवश्य करनी चाहिए. ऐसी दुखद घटनाएं जानवरों के प्राकृतिक आवासों में लगातार बढ़ते मानव अतिक्रमण के खतरनाक नतीजों की ओर इशारा करती हैं. इंसान और वन्यजीवों के बीच इस प्रकार के बढ़ते संघर्ष के लिए,जंगलों में मनुष्यों का बढ़ता अतिक्रमण जिम्मेदार हैं. वन्यजीवों के पास रहने,खाने और अपना जीवन शांतिपूर्ण ढंग से व्यतीत करने के लिए कोई जगह नहीं बचती है। दीपक चौधरी कहते हैं जंगल अनगिनत प्रजातियों का प्राकृतिक घर है और इंसान इंडस्ट्री बिल्डिंग और और खेती के लिए जंगल को लगातर सिस्टमैटिक ढंग से लगातार खत्म कर रहा है. पशुओं एवं मनुष्यों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि नगर नियोजन में वन संरक्षण को शामिल किया जाए।

दुनिया भर में जंगलों को काटने की मुख्य कारण मांस,अंडा और डेयरी के लिए पशुओं को रखने के लिए जमीन की जरूरत हैं । उनके लिए फसलें उगाने के लिए नयी ज़मीन की ज़रूरत है। दुनिया में मांस,अंडे और डेयरी के लिए धरती का 45 फीसदी हिस्सा इस्तेमाल किया जाता है जिससे जंगल कट रहे हैं जानवरों को उनके नेचुरल हैबिटेट से बेदखल किया जा रहा है वो खाने पीने के लिए इंसानी रिहाइश के नजदीक आने को मजबूर हैं। इससे जंगली जानवरों के विलुप्त होने का खतरा भी है।

वन्यजीव विशेषज्ञ फैयाज खुदसर कहते हैं जब जानवरों की संख्या बढ़ती है तो वो अपने नए आशियाने की तलाश में निकलते हैं। उसके लिए वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर की आवश्यकता होती है और उन कॉरिडोर में शहर बसे हैं। इसी वजह से शहरों के आसपास जानवर नजर आने लगते हैं।

आधी आबादी से बर्बरता की संस्कृति

जयप्रकाश जय

(गतांक से आगे)

कुछ मनोविज्ञानी इसे मनोरोग का अनुकूलन मानते हैं, जो प्रजनन शक्ति विकसित करने की इच्छा से उत्पन्न होता है। अधिकांश समाज वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और नारीवादी कार्यकर्ता लगभग पूरी तरह से बलात्कार का संबंध सत्ता और हिंसा से जोड़कर देखते हैं। इसके पीछे वासना नहीं, महिलाओं के प्रति घृणा, शत्रुता और प्रभुत्व की बदमिजाजी होती है। अपराधी ज्यादातर महिलाओं को सेक्स ऑब्जेक्ट के रूप में देखता है, जिसे वह अपनी मर्दानगी के लिए चुनौती मानता है। उसको लगता है कि जैसे उसे कुछ ऐसा मिल गया, जिसका वह हकदार था। कुछ संस्कृतियों में पितृसत्ता और प्रभुत्व को ऐसे अमानवीयकरण के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, जिसमें महिलाओं को कमतर माना जाता है। इससे आक्रामकता का निशाना बनना आसान हो जाता है। ऐसी संस्कृतियों में पुरुष अपनी भावनाओं से संपर्क खो देते हैं। बलात्कारियों और नार्सिसिस्टों की एक प्रमुख विशेषता दूसरों को अमानवीय बनाने की प्रवृत्ति होती है। वे कई प्रकार के होते हैं, पीड़ितों को अपमानित करने वाले, प्रतिशोधी, अवसरवादी, नशेड़ी, गुस्सैल, आक्रामक, परपीड़क आदि। पुरुष होने की कुंठा में वे अपने धत्कर्म को उचित ठहराने की कोशिश करते हैं। एक रिसर्च में सांस्कृतिक संरचनाओं की जांच के दौरान पाया गया कि वर्चस्ववादी पुरुषों की सुसुप्त वृत्ति में स्थायी रूप से यौन हिंसा और प्रतिशोध की भावनाएं होती हैं। मुख्यतः समर्थ सामाजिक हैसियत वाले व्यक्तियों में इसका, खूंख्वार शिकारी की तरह अपने से कमजोर के प्रति भयावह अंतर्गुंफन होता रहता है। बहुत गहरे समाज में ऐसे कुअवसरवादी पुरुषों के बीच यौन ईर्ष्या और निराशाजनक धत्कार्मिक प्रतिद्वंद्विताएं भी चलती रहती हैं। ऐसे व्यक्तियों की मानसिक बनावट में परिचित लड़कियों, महिलाओं के प्रति यौन क्रूरता का स्थायी भाव होता है। इसकी जड़ें बाल्यावस्था से अपने आसपास से पोषित होने लगती हैं। किशोर वय में पारिवारिक माहौल विभिन्न प्रकार की हिंसा के संचरण, खुलेपन और अभिव्यक्ति के सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्ति के आत्मनियंत्रण की कमी जैसे असामाजिक कारक उसके भीतर अपसंस्कृति के प्रति लोमहर्षित करते रहते हैं। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि ऐसे दोहरे आचरण वाले छिपेरुस्तम व्यक्तियों की बहुत आसानी से पहचान की जा सकती है। वे अतिविनम्रता और मृदुभाषिता का हर समय बड़ी नाटकीयता के साथ स्वांग करते रहते हैं। आत्मसंयम की कमी, पाशविक प्रवृत्ति और सेक्स के प्रति मिथकीय दृष्टिकोण के चलते ऐसे अपराधी व्यक्ति पोर्नोग्राफ़ी के संपर्क में आने के बाद बलपूर्वक यौन कल्पनाएं साधने की फ़िराक में रहते हैं। इसका सीधा संबंध यौन आक्रामकता से होता है। आज़कल इसी तरह की लत, बहुतायत में पाए जाने वाले न केवल ऐसे व्यक्ति, बल्कि पूरे समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हो रही है। यौन क्रूरता की शिकार पीड़िताएं, सामाजिक कलंक के भय से प्रायः आपबीती व्यक्त करने से परहेज करती हैं और, इससे चरित्रहीनों की कुचेष्टा बनी रहती है, जबकि पीड़िताओं को ऐसे मानसिक आघात, आजीवन पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी) के कारण उसे बारबार आत्महंता अवसाद की स्थितियों से उबरने नहीं देते हैं। इसका उनके शारीरिक और मानसिक, दोनों ही तरह के स्वास्थ्य (प्रजनन आदि) पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। ऐतिहासिक रूप से लैंगिक कुंठाएं भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में जड़ें जमाए हुए हैं, जिसके चलते रिश्तों के प्रति एक विचित्र तरह का दृष्टिकोण पीछा करता रहता है। सदियों से बंद समाज के नाते आधुनिक चमक-दमक में जबर्दस्ती के लादे हुए बाजारवादी खुलेपन ने आग में घी का काम किया है। भारत में विवाहेतर संबंधों के बारे में कानूनी अस्पष्टता भी वर्जनाओं को हवा देती है, जहां आमतौर से शादी से पहले या बाद के अन्यान्य शारीरिक रिश्ते अमान्य और अनुचित माने जाते हैं। बौद्धिक वर्गों में भी हार्मोनल परिवर्तनों की दुहाई देते हुए आम तौर से बिना शादी के वयस्कों का साथ रहना भी स्वीकार्य नहीं है। ज्यादातर ऐसे संबंध परिवारों के अनुशासन और निर्णयों के मुखापेक्षी होते हैं। सामाजिक मानदंडों, मान्यताओं, नैतिकताओं की सामूहिक संस्कृति के घटाटोप में किधर से भी सहानुभूति न मिलते देख दबाव में, स्वायत्तता और यौन स्वतंत्रता के लिए वयस्क भावनाएं कुढ़ते-कुढ़ते विस्फोटक हो जाती हैं। गिने-चुने महानगरों के सीमित पहुंच वाले पब जैसे सीमित पाश्चात्य ठिकानों को छोड़ दें तो ऐसी यौन कुंठाओं से त्राण पाने का और कहीं सुरक्षित ठिकाने नहीं होना भी बलात्कार की संस्कृति का संश्रय बन जाता है। यह बात भी कितनी विरोधाभासी है कि हमारी ही संस्कृति ने कामसूत्र का आविष्कार किया है। हो सकता है कि पुराने दिनों में शारीरिक संपर्क की अवधारणा अनौपचारिक थी और समय के साथ लोग 'सुसंस्कृत' होते गए। अब के समय में वैसी स्वतंत्रताओं का ह्रास हो चुका है। वैसे भी कोई व्यक्ति जन्म से व्यभिचारी नहीं होता है। समाज और संस्कृति में ही किसी व्यक्ति के भीतर ऐसी जघन्यताएं उपजती हैं। जब संस्कृति स्वयं पुरुष प्रधान हो, तो उत्पीड़न और प्रभुत्व प्रदर्शित करने की शक्ति भी एकांगी हो जाती है। हमारी संस्कृति में शुरू से ही स्थापित सी मान्यता रही है कि पुरुष काम पर जाएगा और महिला द्वितीयक है तो घर का काम संभालेंगी। यहीं से उसकी समानता का दर्जा खत्म कर दिया जाता है। यह रवैया बचपन से ही विकसित हो जाता है। बलात्कार प्रभुत्वबोधक अपराध होता है तो समाज महिलाओं को घोषित तौर पर अधीनस्थ और कमतर ठहराता है।

भारतीय संस्कृति में लोग खुले कपड़े देखने के आदी नहीं हैं। विदेशों में लोग जो चाहें पहनने के लिए स्वतंत्र होते हैं। अपनी संस्कृति में वे स्वभावतः उसे बचपन से देखने के लिए अभ्यस्त होते हैं। जो लोग किसी लड़की की ड्रेसिंग स्टाइल से आकर्षित होते हैं, कलुषता पहले से उनके अंदर होती है। पश्चिमी संस्कृति के रुझानों का अनुसरण करना भी पुरुषों की यौन इच्छाओं को एक प्रभावित करने वाला कारक रेखांकित किया गया है। एक सर्वे में लगभग 20 प्रतिशत प्रतिभागियों का कहना था कि ज्यादातर महिलाएं रात में अकेले घूमने, पब में जाने आदि से पुरुषों को उकसाती हैं, जिसके कारण उनके खिलाफ यौन अपराध बढ़ जाते हैं। चमकदार लिपस्टिक और क्लीवेज का प्रदर्शन, क्या इसका मतलब यह नहीं है कि उसने पुरुषों को आकर्षित करने के लिए जानबूझकर ऐसा किया है। बलात्कार की संस्कृति का एक प्रभावी कारक ड्रग्स का सेवन भी माना गया है। अक्सर अतृप्त यौन इच्छाएं भी विस्फोटक हालात का सबब बन जाती हैं। यौन इच्छा लगाव और आकर्षण को प्रभावित करती है और बनाए रखती है। मनोवैज्ञानिक विचलन को तंत्रिकाओं की समस्या के रूप में भी रेखांकित किया गया है।**(समाप्त)**

मोबाइल जितना उपयोगी उतना ही विनाशक

संजीव ठाकुर

बच्चों एवं बुजुर्गों के लिए मोबाइल,इंटरनेट वर्तमान युग में जितना उपयोगी है उतना ही उनकी आंखों, शरीर एवं मानसिक विकारों के लिए विनाशक भी है। आज इसके बिना शिक्षा स्वास्थ्य तकनीकी में कार्य नहीं किया जा सकता है पर दूसरी तरफ मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव भी मोबाइल इंटरनेट और कंप्यूटर से पड़ने लगा है। टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट के अविष्कार के बाद मानवीय संचार माध्यम के अविष्कार के बाद संचार विज्ञान के इतिहास में अत्यंत समीचीन तथा भविष्य का एक तूफानी विकास है। विभिन्न संचार माध्यमों के आपस में जुड़े कंप्यूटर एवं विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का समूह कंप्यूटर नेटवर्क कहा जाता है, और इन्हीं कंप्यूटर नेटवर्क का विश्व स्तरीय अंतरजाल को अंग्रेजी में इंटरनेट कहा जाता है। अमेरिका में एक दूसरे के सूचना माध्यमों को जोड़कर जानकारी गुप्त रूप से आदान-प्रदान करने के लिए 1969 में अमेरिका में कंप्यूटर में 'अपारनेट' की स्थापना की गई थी। इसी परिकल्पना के साथ कंप्यूटर नेटवर्क, आगे चलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्क इंटरनेट के रूप में परिवर्तित हो गया। इंटरनेट का सार्थक उपयोग समाज में शिक्षा संगठन और भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पॉजिटिव ट्रैक होने के साथ एक चमत्कारिक परिवर्तन समाज में आया है।

आज लोगों के शौक खेलना, पढ़ना ,संगीत सुनना, चित्र बनाना ,फोटोग्राफी परिवर्तित होकर 90% लोगों के इंटरनेट सर्फिंग, संगीत सुनना और चित्र बनाने जैसे शौक इंटरनेट से मोबाइल अथवा कंप्यूटर के माध्यम से पूरे किए जा रहे हैं। विश्व में जनसंख्या के हिसाब से 4 अरब लोग इंटरनेट कंप्यूटर तथा मोबाइल के माध्यम से सुबह शाम इस्तेमाल कर रहे हैं। भारतीय परिपेक्ष में 140 करोड़ की अनुमानित जनसंख्या वाले देश में लगभग 60% लोग मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग कर एक दूसरे से जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इंटरनेट एक ऐसा सेवक है जो मोबाइल के माध्यम से आपके सभी आदेशों का पालन करने के लिए दिन रात उपलब्ध है। मोबाइल और कंप्यूटर में उपयोग होने वाला इंटरनेट एक ऐसा अंतरजाल है जिस का आविष्कार सूचनाओं को साझा करने के उद्देश्य किया गया था और अब सूचना प्रौद्योगिकी के इस वर्तमान काल में दस्तावेजों एवं धोनी माध्यम के साथ वीडियो का आदान प्रदान करना भी इंटरनेट के माध्यम से संभव हो गया है। हवाई जहाज की, होटल की, किताबों की और व्यापार बढ़ाने की योजनाओं की बुकिंग इंटरनेट द्वारा घर बैठे कंप्यूटर या मोबाइल से किया जा सकता है। सरकार की प्रशासनिक कार्यों से लेकर व्यापार ,शिक्षा के नव अवसर भी इंटरनेट के माध्यम से पूर्ण किए जाने लगे हैं।

इंटरनेट ने पूरे विश्व को एक दूसरे के एकदम करीब लाने के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी में एक चमत्कारिक परिवर्तन लाया है।

भारत में इस इंटरनेट या अंतरजाल ने जहां पूरे भारत को एक करके रख दिया है वहीं दूसरी तरफ इंटरनेट की सेवाएं जो एयरटेल आइडिया, डोकोमो, टाटा,जिओ और बीएसएनएल जैसी कंपनियां भारतीय उपभोक्ताओं को शहर से लेकर गांव तक अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। दूसरी तरफ पूर्व में जहां गरीब उपभोक्ता 10 से लेकर 100 तक आसानी से रिचार्ज करा लिया करता था ,अब इंटरनेट की कंपनियां 200 से लेकर 1000 तक बात करने की सुविधा के साथ इंटरनेट की सुविधा भी साथ में उपलब्ध करा रहे हैं जो सीधे-सीधे आम उपभोक्ता के लिए उनकी आर्थिक स्थिति में सेंध मारने जैसा कार्य है। हालांकि यह सेवाएं स्वैच्छिक हैं, उपभोक्ता इंटरनेट की सेवाएं लेना चाहे तो ले अन्यथा केवल बातचीत करने की सेवाएं सी ले सकता है,पर एक बार इंटरनेट इस्तेमाल करने की आदत पड़ने के बाद उपभोक्ता इसका आदी होने लगता है।अब स्थिति यह है कि सीधा 28,58,89 दिनों के लिए इंटरनेट के साथ बात करने की सुविधा महंगी दरों में उपलब्ध कराई जा रही है। जिससे गरीब उपभोक्ता की जेबों में हमला कर उनका मासिक बजट बिगाड़ने का काम हो रहा है, इस तरह से बात करने की सुविधा के साथ इंटरनेट भी दिया जाना भारत के ग्रामीण क्षेत्र में गरीब व्यक्ति को और भी गरीबी के दलदल में धकेलने जैसा ही है। यह सभी कंपनियों का गरीब उपभोक्ता के जेबों में सीधे-सीधे पैसे निकालने का सुनियोजित षड्यंत्र की तरह कर रहीं है।

भारत के हर तीसरे व्यक्ति के पास एंड्राइड या स्मार्टफोन उपलब्ध है और यह बड़ी कंपनियां हर माह इन उपभोक्ताओं को आवश्यक रूप से इंटरनेट उपलब्ध कराने के पैकेज देकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास कर रही है, इस पर प्रभावी नियंत्रण अति आवश्यक है। इस तरह के मोबाइल रिचार्ज पर सरकार को कड़ा कानून बनाकर इस के नियमन पर नियंत्रण रखना होगा।

यह एक तरह की उपभोक्ताओं की परोक्ष तथा अदृश्य भावनाओं से खेल कर उनके बजट से आर्थिक लाभ लेने की सुनियोजित योजनाएं हैं ,जिनमें तत्काल नियंत्रण की आवश्यकता होगी। भारत में इंटरनेट सेवा की शुरुआत भारत संचार निगम लिमिटेड ने वर्ष 1995 की थी अब एयरटेल, रिलायंस, टाटा इंडीकॉम, वोडाफोन, जैसी दूरसंचार कंपनियां इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती है। विज्ञान की प्रकृति के साथ-साथ सूचना संचार माध्यम में आशातीत वृद्धि हुई है। इंटरनेट के माध्यम से न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त की जा सकती बल्कि रोजगार प्राप्ति के लिए सहायक होते हैं।

कहीं दाग़ न लग जाए

डॉ टी महादेव राव

आपको अपने मुंह मियां मिट्ठू मालूम ही होगा और जानकारी यह भी होगी कि लंबे हाथ अपनी पीठ भी बेहतर ढंग से थपथपा सकते हैं, शाबाशी में। वैसे दिया नहीं जान पाता की उसके तले में अंधेरा है, ठीक वैसे ही जैसे लाल गूंजा या रत्ती अपने कालिख या कालेपन को नजर अंदाज कर अपने को साफ सुथरा और गोरा समझता है। बिल्कुल इसी तरह सारी कौवों के बीच बैठा एक भूरा कौवा अपने आपको अगर गोरा दूध का धुला समझे तो क्या किया जा सकता है? बस आजकल यही बात हो रही है। चारणभाटों की बातें उन्हें शायद उतनी भाती नहीं जितना अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने से भाती होंगी। उन्होंने बयान दे दिया मैं बेदाग हूं। सारे साथी अपने अपने गिरेबान झांकने लगे कि बेदाग वे भी तो होंगे जब बड़े भैया बेदाग हैं। लेकिन सबके सब गिरेबान दागदार निकले सिर्फ बड़े भैया का नहीं। एक साथी ने कहा हम तो कई कई दिन कपड़े मतलब गिरेबान नहीं बदलते जबकि भैया दिन में दस बार लिबास वही गिरेबान चेंज करते हैं तो दाग कैसे होगा? सभी ने सोचा ₹दिल बहलाने के लिए ग़ालिब ये खयाल अच्छा है। वे दागदार कैसे हो सकते हैं? सुबूत मिटाना, बात बात में बात बदलना, लोगों का ध्यान दूसरी तरफ करने में माहिर जो हैं। किसी ने चूं चपड की तो बस उनके पीछे अपने कुत्ते दौड़ा देना कि बेटा अब बचके कहां जाओगे।

अवसर कोई भी हो पुराने इतिहास और कुछ खास लोगों को गरियाने में वे इन सालों में माहिर हो चुके हैं। लिबासों की तरह नाम बदलना, अपने चमचों के भजन में मगन होकर स्वयं को लगभग भगवान मान लेना उनके दागदार चरित्र के कुछ नमूने हैं। वैसे उनका पूरा जीवन काल ही कई दाग़ों का इतिहास है। कोई एक सच्ची बात उनके मुंह से नहीं निकलती। वे स्वयं को कभी विद्वान, कभी बिलकुल अनपढ़, कभी याचक और कभी हिमालय का तपस्वी तो कभी व्यापारी कहते नहीं थकते। अलग अलग संदर्भों के लिए उनकी मजेदार व्याख्यान हैं जिनमें सचाई बिलकुल उतनी ही है जितनी आजकल के किसी नेता में ईमानदारी।

एक बार चेहरे पर काला दाग़, शायद काजल का हो, दिख गया। उन्हें जब बताया गया तो वे बगले झांकने लगे। बोले भीड़ भाड़ में लग गया होगा। लेकिन उनके आसपास एक आदमी का फटकना मुश्किल है, भीड़ कैसी होगी ? दूर एक महिला मंत्री कजरारे आंखों से मंद मंद मुस्कुरा रही थी।झटपट जेब से रूमाल निकालकर वे बेदाग भैया दाग़ पोंछने लगे।

आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में है 700 साल पुराना गणेश मंदिर

धीरे-धीरे बढ़ रहा है गणेश जी की मूर्ति का आकार

आंध्रप्रदेश में चित्तुर जिले के इरला मंडल नाम की जगह पर गणेश जी का मंदिर है। इस मंदिर को पानी के देवता का मंदिर भी कहा जाता है। लोगों का ऐसा मानना है की यहां भगवान गणेश की मूर्ति धीरे धीरे आकार में बढ़ती जा रही है। ऐसा कहा जाता हैं बाहुदा नदी के बीच बने इस मंदिर के पवित्र जल के कारण कई बीमारियां खत्म हो जाती है। तिरुपति जाने से पहले भक्त इस विनायक मंदिर में आकर भगवान गणेश के दर्शन करते है। मान्यता के अनुसार, यहां आने वाले भक्तों के कष्ट दूर हो जाते हैं।

11 वीं शताब्दी में बना मंदिर इस मंदिर का निर्माण 11 वीं शताब्दी में चोल राजा कुलोठुन्गा चोल प्रथम ने करवाया था। इसके बाद फिर विजयनगर वंश के राजा ने सन 1336 में इस मंदिर का जिर्णोद्धार कर इसे बड़ा मंदिर बनाने का काम किया था। ये तीर्थ एक नदी के किनारे बसा है। इस कारण इसे कनिपक्कम नाम दिया गया था। गणेश चतुर्थी से 20 दिनों तक चलता है ब्रह्मोत्सव इस मंदिर में सितंबर या अक्टूबर में आने वाली गणेश चतुर्थी से ब्रह्मोत्स शुरू हो जाता है। ऐसा माना जाता है की एक बार खुद ब्रह्मदेव पृथ्वी पर आए थे और तभी से इस मंदिर में 20 दिन का ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। ब्रह्मोत्सव के दौरान यहां पर भक्तों के बीच रथ यात्रा निकाली जाती है। इस त्यौहार के दौरान दूसरे दिन से ही रथयात्रा सुबह में एक बार और शाम में एक बार निकाली जाती है। रथ यात्रा में हर दिन भगवान गणेश अलग-अलग वाहनों पर भक्तों को दर्शन देने निकलते हैं। रथ को कई तरह के रंगीन कपड़ों से सजाया जाता है। इस तरह का उत्सव बहुत कम मंदिरों में मनाया जाता है। रोज बढ़ रही है भगवान गणेश की मूर्ति कहते हैं कि इस मंदिर में मौजूद गणेश की मूर्ति का आकार हर दिन बढ़ता ही जा रहा है।

इस बात का प्रमाण उनका पेट और घुटना है, जो बड़ा आकार लेता जा रहा है। कहा जाता है कि करीब 50 साल पहले भगवान गणेश की एक भक्त श्री लक्ष्माम्मा ने उन्हें एक कवच भेंट किया था, लेकिन मूर्ति का आकार बढ़ने की वजह से अब वह कवच भगवान को नहीं पहनाया जाता।

मान्यताः मंदिर की कहानी मंदिर के निर्माण की कहानी रोचक है। कहा जाता है कि तीन भाई थे। उनमें से एक गूंगा, दूसरा बहरा और तीसरा अंधा था। तीनों ने मिलकर जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा खरीदा। जमीन पर खेती के लिए पानी की जरुरत थी। इसलिए, तीनों ने उस जगह कुआं खोदना शुरू किया। बहुत अधिक खुदाई के के बाद पानी निकला। उसके बाद थोड़ा और खोदने पर उन्हें गणेशजी की प्रतिमा दिखाई दी, जिसके दर्शन करते ही तीनों भाई जो कि गूंगे, बहरे और अंधे थे वे एकदम ठीक हो गए। ये यह चमत्कार देखने के लिए उस गांव में रहने वाले लोग इकट्ठे होने लगे। इसके बाद सभी लोगों ने वहां प्रकट हुई भगवान गणेश की मूर्ति को वहीं पानी के बीच ही स्थापित कर दिया।

दर्शन से खत्म हो जाते हैं पाप कहा जाता है कि कोई इंसान कितना भी पापी हो यदि वह कनिपक्कम गणेश जी के दर्शन कर ले तो उसके सारे पाप खत्म हो जाते हैं। इस मंदिर में दर्शन से जुड़ा एक नियम है। माना जाता है कि इस नियम का पालन करने पर ही पाप नष्ट होते हैं। नियम यह है कि जिस भी व्यक्ति को भगवान से अपने पाप कर्मों की क्षमा मांगनी हो। उसे यहां स्थित नदी में स्नान कर ये प्रण लेना होगा कि वह फिर कभी उस तरह का पाप नहीं करेगा, जिसके लिए वह क्षमा मांगने आया है। ऐसा प्रण करने के बाद गणेश जी के दर्शन करने से सारे पाप दूर हो जाते हैं।

कैसे पहुंचे यहां सड़क के रास्ते - यह मंदिर तिरुपतिबस स्टेशन से करीब 72 किमी दूर है। यहां से बस और कैब मिल सकती है। ट्रेन से - ये मंदिर तिरुपति रेलवे स्टेशन से करीब 70 किमी की दूरी पर है। एयर वे - तिरुपति हवाईअड्डा इस मंदिर से केवल 86 किमी की दूरी पर है।

लखनऊ के श्री सिद्धिगणेश मन्दिर में हाजिरी लगाने से होती है हर मुराद पूरी

लखनऊ के सभी प्रमुख गणेश मंदिरों की साज-सज्जा देखने लायक होती है, लेकिन बीबीडी स्थित श्री सिद्धिगणेश मन्दिर की इस मौके पर कुछ अलग ही छटा होती है। भक्त यहाँ अपने भगवान गणेश के दर्शन के लिए उमड़ पड़ते हैं।

लखनऊ में भी लोग अपने घरों में गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करते हैं तो वहीँ गणेश चतुर्थी के दिन लोग मंदिरों में हाज़िरी लगा कर भगवान गणेश की पूजा करते हैं और मनचाहा वर मांगते हैं। वैसे तो इस अवसर पर लखनऊ के सभी प्रमुख गणेश मंदिरों की साज-सज्जा देखने लायक होती है, लेकिन बीबीडी स्थित श्री सिद्धिगणेश मन्दिर की इस मौके पर कुछ अलग ही छटा होती है। भक्त यहाँ अपने भगवान गणेश के दर्शन के लिए उमड़ पड़ते हैं।

श्री सिद्धिगणेश मन्दिर

यह मंदिर लगभग 14 साल पुराना है लेकिन अपने धार्मिक महत्व के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। यह भगवान गणेश की पूजा का एक प्रमुख स्थान है, और भक्त आशीर्वाद लेने और प्रार्थना करने के लिए आते हैं। मंदिर में सुंदर और पारंपरिक उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला है। इसमें एक गर्भगृह है जहां भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित है।

भगवान गणेश की प्रतिमा के सामने उनकी ओर मुंह कर के उनकी सवारी बैठी हैं। गणेश चतुर्थी के त्यौहार के दौरान श्री सिद्धिगणेश मन्दिर विशेष रूप से जीवंत हो जाता है। इस दौरान, मंदिर को सजाया जाता है, और विशेष प्रार्थनाएँ और उत्सव होते हैं। मंदिर तक सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है और यह स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है। मंदिर प्रांगण में और भी देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

कैसे पहुंचें श्री सिद्धिगणेश मन्दिर

अगर आप लखनऊ में रहते हैं तो श्री सिद्धिगणेश मन्दिर पंहुचना बहुत ही आसान है। यह मंदिर प्रसिद्ध बाबू बनारसी दास कॉलेज के प्रांगण से सटे हुए है। यह मंदिर लखनऊ-अयोध्या मार्ग पर ही स्थित है। अभी हाल ही में मंदिर ने अपनी स्थापना का 14वां वर्ष मनाया था। मंदिर का वातावरण बहुत ही शांत रहता है। यहाँ बहुत भीड़ भाड़ भी नहीं होती है।

महाराष्ट्र के इन 8 गांवों में स्थापित 'अष्टविनायक' गणपति

गणेशोत्सव भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख और आनंददायक त्योहार है, जो हर साल भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से शुरू होता है और 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल गणेश चतुर्थी 7 सितंबर को होगी और गणेश विसर्जन 17 सितंबर 2024 को होगा। इस दौरान, घरों, मंदिरों और पूजा पंडालों में गणेश जी की मूर्तियां स्थापित की जाती हैं और उनकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है। देशभर में इस त्योहार का उत्साह और खुशी का माहौल रहता है, खासकर महाराष्ट्र में, जहां इसे बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

इस पर्व पर विशेष रूप से अष्टविनायक मंदिरों की यात्रा की जाती है, जहां भगवान गणेश के आठ स्वरूप प्रतिष्ठित हैं। ये मंदिर स्वयंभू माने जाते हैं, यानी यहां भगवान गणेश की प्रतिमाएं स्वंय प्रकट हुई हैं। गणेश चतुर्थी के अवसर पर इन मंदिरों की यात्रा विशेष महत्व रखती है। यहां प्रमुख अष्टविनायक मंदिरों की जानकारी दी गई हैः

विघ्नेश्वर अष्टविनायक मंदिरः

पुणे-नासिक रोड पर स्थित इस मंदिर का विशेष महत्व है। भक्त यहां आकर अपने दुखों का निवारण प्राप्त करते हैं। यह मंदिर लगभग 85 किलोमीटर की दूरी पर है।

बल्लालेश्वर मंदिरः

रायगढ़ के पाली गांव में स्थित यह मंदिर भगवान गणेश के परम भक्त बल्लाल के नाम पर प्रसिद्ध है। भक्त यहां आकर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

वरदविनायक मंदिरः

रायगढ़ के कोल्हापुर में स्थित इस मंदिर में एक नंददीप है, जो कई वर्षों से प्रज्वलित है। भक्त यहां आकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

मयूरेश्वर मंदिरः

पुणे के मोरगांव में स्थित इस मंदिर में चार द्वार हैं, जो चार युगों का प्रतीक माने जाते हैं। गणपति बप्पा यहां बैठी मुद्रा में हैं, और उनकी पूजा करने से भक्तों की इच्छाएं पूरी होती हैं।

सिद्धिविनायक मंदिरः

पुणे से लगभग 200 किलोमीटर दूर स्थित इस मंदिर में गणेश जी की तीन फीट ऊंची प्रतिमा है। इस मंदिर का मानना है कि यहां मांगी गई मन्नत पूरी होती है।

महागणपति मंदिरः

राजणगांव में स्थित इस मंदिर का मुख्य द्वार आकर्षक है। भक्त यहां आकर भगवान गणेश का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

गिरिजात्मल अष्टविनायकः

लेण्याद्री गांव में स्थित इस मंदिर में 18 गुफाएं हैं, जिसमें से आठवीं गुफा में गणेश जी विराजमान हैं। यह मंदिर पुणे से लगभग 90 किलोमीटर दूर है और भक्त यहां आकर गणेश जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

चिंतामणी मंदिरः

इस मंदिर में जाकर भक्त अपनी चिंताओं और समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं। अगर आपकी कोई समस्या है, तो आप यहां दर्शन कर सकते हैं और समाधान की प्राप्ति की आशा कर सकते हैं।

गणेशोत्सव के अवसर पर इन अष्टविनायक मंदिरों की यात्रा विशेष रूप से पुणे और उसके आस-पास के क्षेत्र में धार्मिक महत्व रखती है।

विहान ने अभिनेत्री अनन्या को लेकर कहा वह पूरी तरह तैयार हो कर आती थीं

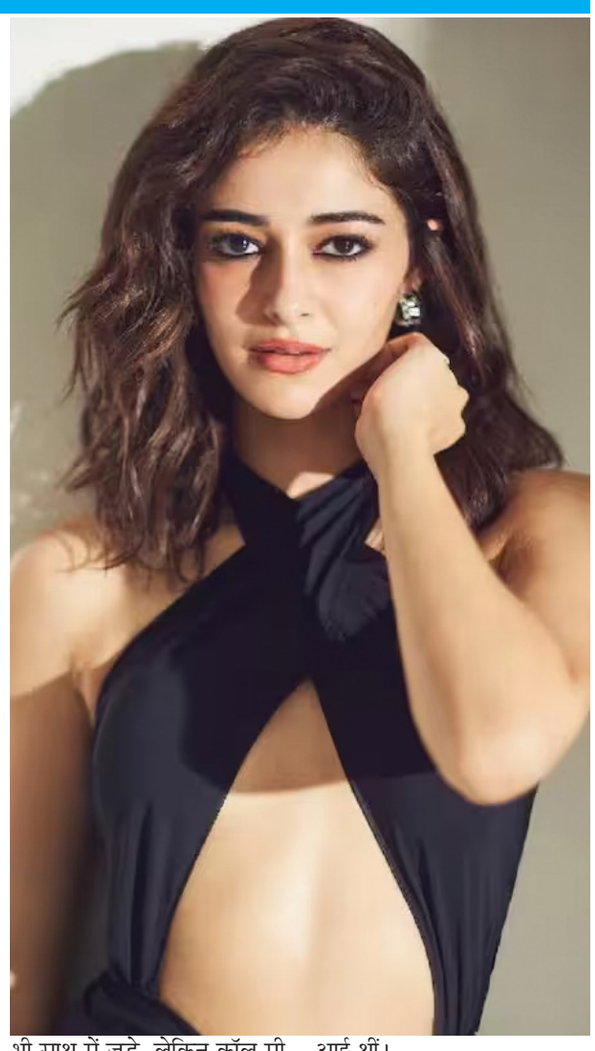

अनन्या पांडे इन दिनों काफी चर्चा में हैं। उन्होंने हाल में ही 'कॉल मी बे' से अपना ओटीटी डेब्यू किया है। इस सीरीज में एक अरबपति पिता की बेटी के किरदार में नजर आई हैं, जिसे घर से निकाल दिया जाता है और फिर वह अपने अस्तित्व की तलाश करती है। इसके बाद वह अपनी आगामी फिल्म 'सीटीआरएल' में नजर आएंगी। इस दोनों ही प्रोजेक्ट में एक चीज कॉमन है, वो हैं उनके सह-कलाकार विहान समत। विहान समत 'कॉल मी बे' के बाद 'सीटीआरएल' में भी अनन्या पांडे के साथ नजर आएंगे। हाल में ही विहान ने अभिनेत्री की तारीफ करते हुए उन्हें पूरी तरह पेशेवर बताया है।

अनन्या पूरी तरह तैयार हो कर आती थीं- विहान समत

विहान समत जल्द ही विक्रमादित्य मोटवानी की साइबर थ्रिलर सीटीआरएल में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में वह एक बार फिर से अनन्या पांडे के साथ काम करते दिखेंगे। अभिनेता ने इसे लेकर कहा,"मैंने अनन्या के साथ सीटीआरएल की शूटिंग की थी और फिर हम कॉल मी बे में भी साथ में जुड़े, लेकिन कॉल मी बे बिल्कुल अलग गेम था। इसलिए, हमें रीसेट करना पड़ा। अनन्या पेशेवर कलाकार हैं और उनके साथ काम करना काफी आसान है। वह अपने अभिनय को लेकर पूरी तरह से तैयार होकर आई थीं।

विक्रमादित्य के साथ काम करने का था सपना- विहान समत

विक्रमादित्य मोटवानी एक मशहूर और सम्मानित निर्देशक हैं। उनकी फिल्मों में काम करना किसी भी कलाकार के लिए एक बड़ा सपना होता है। बॉलीवुड में डेब्यू के चार साल के अंदर ही उनके साथ काम करना किसी भी कलाकार के लिए बहुत बड़ी बात है। इस पर अभिनेता ने कहा, मैंने उड़ान तब देखी, जब मैं स्कूल में था। मैं जब कॉलेज के लिए जा रहा था, तब मैंने फ्लाइट में ट्रैप्ड देखी। फिर अमेरिका में पढ़ने के दौरान मैंने सेक्रेड गेम्स देखी। साल 2021 में, मैंने एक इंटरव्यू में कहा था कि विक्रम उन पांच लोगों में से हैं, जिनके साथ मैं काम करना चाहता था। मैंने सुना कि उनका ऑडिशन हो रहा है, तो मैं तुरंत उसमें कूद पड़ा। मैंने सुनिश्चित किया कि मैं फिल्म में अपना सबकुछ दूं, क्योंकि यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा मौका था।"

बॉलीवुड की तीन बड़ी फिल्म फ्रेंचाइजी में काम कर चुके हैं अक्षय कुमार

कलाकारों को आजादी देते हैं विक्रमादित्य मोटवानी

विहान समत ने कहा कि उनके लिए मोटवानी की फिल्म में काम करना दो चीजों का मिश्रण था। उन्होंने कहा कि पहला ये था कि निर्देशक के विजन को समझना और दूसरा था खुद को एक अभिनेता के रूप में खोजना। अभिनेता ने कहा."एक बार जब वह आपको चुन लेते हैं, तो वह आप पर पूरा भरोसा जताते हैं।

वह आपको नोट्स देते हैं, लेकिन वह आपको अपने हिसाब से चलने पर भी बंदिशे नहीं लगाते।

वह आपको बहुत ज्यादा तकनीकी नोट्स से परेशान नहीं करते। इसके साथ ही वह कम बोलने वाले व्यक्ति भी है, इसलिए शुरू में मैं उन्हें सुनने के लिए कान खड़ा रखता था, लेकिन वह आपको काफी सहज कर देते हैं।"

मलाइका अरोड़ा के पिता ने की खुदकुशी

घर की छत से कूदकर अनिल अरोड़ा ने दे दी जान

एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा के पिता अनिल अरोड़ा ने बुधवार सुबह खुदकुशी कर ली । खबर है कि उन्होंने बांद्रा वाले अपने घर से कूदकर जान दे दी। इस घटना के तुरंत बाद मलाइका के एक्स हडबैंड अरबाज खान भी वहां पहुंच गए हैं। मलाइका अरोड़ा के घर एक बड़ी अनहोनी हो गई है। बताया जा रहा है कि मलाइका अरोड़ा के पिता अनिल अरोड़ा ने बुधवार सुबह खुदकुशी कर ली। ये दुखद घटना सुबह 9 बजे घटी है। खबर है कि अनिल ने बांद्रा वाले सातवीं मंजिल से अपने घर की छत से कूदकर जान दे दी। इस घटना के तुरंत बाद मलाइका अरोड़ा के एक्स हसबैंड अरबाज खान भी पहुंच गए हैं। उन्होंने खुदकुशी क्यों की इसका पता नहीं लग पाया है। इस घटना ने हर किसी को हैरान कर दिया है। इस दुखद घटना ने घरवालों और इंडस्ट्री के लोगों को बड़ा धक्का दिया है।

घटनास्थल पर मलाइका के एक्स हस्बैंड अरबाज खान पहुंचे

जानकारी के मुताबिक, सबसे पहले घटनास्थल पर मलाइका के एक्स हस्बैंड अरबाज खान पहुंच गए। मलाइका को जब पिता के निधन की खबर मिली तब वो पुणे में थीं और इस घटना जानकारी मिलते ही वो तुरंत मुंबई के लिए रवाना हो गईं।

घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला

रिपोर्ट्स के मुताबिक, पुलिस को शुरुआती जांच में घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। उनकी बॉडी को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। खबर है कि अनिल अरोड़ा का शव भाभा हॉस्पिटल में रखा गया है।

पिछले साल हॉस्पिटलाइज हुए थे अनिल अरोड़ा

बता दें कि पिछले साल अनिल को हॉस्पिटल में एडमिट होना पड़ा था। हालांकि, उन्हें क्या दिक्कत थी इसकी जानकारी नहीं मिली थी, लेकिन मलाइका अपनी मां के साथ हॉस्पिटल में नजर आई थीं।

मलाइका जब 11 साल की थीं, तब हुआ था पैरेंट का तलाक

यहां बता दें कि मलाइका के पैरेंट्स तब से एक-दूसरे से अलग रह रहे थे जब एक्ट्रेस केवल 11 साल की थीं। मलाइका ने अपने पैरेंट्स के अलग होने का दर्द भी शेयर किया था। उन्होंने अपने पुराने इंटरव्यू में कहा था- 11 साल की उम्र में पेरेंट्स के सेपरेशन ने मुझे अपनी मां को नए चश्मे से देखने की राहें खोल दीं। मलाइका ने कहा था कि उन्होंने मां को खूब काम करते हुए देखा है। उन्होंने कहा कि उनसे उन्होंने वर्क एथिक सीखा और ये भी सीखा कि जिंदगी में कितनी भी मुश्किलें आएं, सुबह सबकुछ भूलकर कैसे उठा जाता है ।

एक इंडियन आर्मी ऑफिसर रह चुके थे मलाइका के पिता

यहां बता दें कि मलाइका अरोड़ा के पिता अनिल अरोड़ा पंजाबी हिंदू परिवार से थे और इंडियन आर्मी ऑफिसर रह चुके थे। वह भारतीय सेना में एक सीनियर ऑफिसर के तौर पर काम कर चुके थे।

हालांकि, भले अनिल अरोड़ा और उनकी वाइफ जॉयस पॉलीकार्प अलग हो चुके थे, लेकिन पारिवारिक मौकों और त्योहारों पर दोनों अपने बच्चों के साथ होते थे और सेलिब्रेट करते थे।

परदे पर आ रही है कमाल अमरोही और मीना कुमारी की लव स्टोरी

मीना कुमारी और कमाल अमरोही ! सिनेमा जगत की इस चर्चित जोड़ी की मोहब्बत के किस्से आज भी चाव से सुने और सुनाए जाते हैं। इनकी प्रेम कहानी अब परदे पर आ रही है। फिल्म 'कमाल और मीना' का एलान हो गया है। इस फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ पी मल्होत्रा करने वाले हैं, जिन्होंने हाल ही में फिल्म 'महाराज' के निर्देशन की कमान संभाली। सारेगामा इंडिया लिमिटेड और लॉयन हार्ट सिनेमा मिलकर यह फिल्म बनाएंगे।

मीना कुमारी और कमाल अमरोही की लव स्टोरी फिल्म का एलान आज सारेगामा ने एक्स पोस्ट से एक वीडियो साझा करके की है। इसके साथ लिखा है, 'एक सपना, जिसने मरने से

इनकार कर दिया... वह मोहब्बत जिसका साथ कब्रिस्तान तक रहा'। बता दें कि कमाल अमरोही को निधन के बाद उसी कब्रिस्तान में दफनाया गया था, जहां मीना कुमारी की कब्र थी। संजय दत्त ने भी इस फिल्म की एनाउंसमेंट वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से साझा की है। उन्होंने लिखा है, 'प्यारे सची और बिलाल, आपके नए वेंचर के लिए शुभकामनाएं। ये फिल्म सफल रहे। आपको संजय मामू की तरफ से खूब सारा प्यार। इस फिल्म का इंतजार है। बता दें कि बिलाल अमरोही, जो कि कमाल अमरोही के पोते हैं। उनकी शादी संजय दत्त की बहन नम्रता दत्त की बेटी सची से हुई है। कहा जा रहा है कि 'कमाल और मीना' फिल्म में कमाल अमरोही और मीना कुमारी की 20 साल की यात्रा परदे पर दिखाई जाएगी। मीना कुमारी जब कमाल अमरोही से पहली बार मिली थीं, तब वह 18 साल की थीं और उस मुलाकात का किस्सा भी फिल्म का अहम हिस्सा होगा। पहली मुलाकात से लेकर 'पाकीजा' के बनने तक मीना कुमारी और कमाल अमरोही किन उतार-चढ़ावों से गुजरे यह इस फिल्म में देखने को मिलेगा। इस फिल्म का एलान होने पर फैंस के बीच भारी खुशी है।

शनिवार को 'फनीवार' बनाने आ रही कपिल की टोली, 21 सितंबर से शो होगा शुरू

कपिल शर्मा के प्रशंसकों के लिए खुशखबरी है। एक बार फिर कॉमेडियन अपने चुटकुलों से सभी को गुदगुदाने के लिए 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' के दूसरे सीजन के साथ वापस आ रहे हैं। इस बार इस शो को और भी मजेदार बनाने का वादा किया जा रहा है, उनके हिसाब से हर शनिवार एक मजेदार शनिवार बन जाएगा। 21 सितंबर से नेटफ्लिक्स पर शुरू हो रहे इस शो के दूसरे सीजन में कई बड़ी हस्तियां शा मि ल होंगी।

पिछले सीजन में कई दिग्गजों के साथ 13 हफ्तों तक हंसी-मजाक चलता रहा और इस बार सीजन 2 में कपिल, सुनील ग्रोवर, कृष्णा अभिषेक, कीकू शारदा, अर्चना पूरन सिंह और राजीव ठाकुर के साथ और भी ज्यादा हंसी, पागलपन का मिलने का दावा किया जा रहा है।

कपिल और उनकी टोली 21 सितंबर से हर शनिवार को एक बार फिर दर्शकों को हंसाने के लिए तैयार है। जैसे-जैसी इसके प्रसारित होने की तारीख नजदीक आ रही है प्रशंसकों की उत्सुकता बढ़ती जा रही है कि इस सीजन में उन्हें क्या नया और मजेदार देखने को मिलेगा।

कुछ दिनों पहले निर्माताओं ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा कर दूसरे सीजन का एलान किया था। वीडियो के कैप्शन में उन्होंने लिखा था, 'अब शनिवार होगा फनीवार क्योंकि कपिल और गैंग डबल मस्ती और हंसी के साथ आ रहे हैं। सीजन 2 जल्द ही आ रहा है। बने रहें।'

अब बुधवार को शो का टीजर वीडियो जारी करते हुए निर्माताओं ने कैप्शन में लिखा, 'फन से आपके शनिवार को फनीवार बनाने हम आ रहे हैं 21 फरवरी से 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' देखने के लिए तैयार हो जाइए हर शनिवार सिर्फ नेटफ्लिक्स पर।'

मैं जवान दिखने की कोशिश नहीं कर रही : करीना कपूर खान

अपनी उम्र वाले रोल करने पर गर्व है

फिल्म इंडस्ट्री में अभिनेत्रियों के बोटॉक्स कराने और प्लास्टिक सर्जरी को लेकर काफी बातचीत होती है। हाल ही में, करीना कपूर ने

भी इस मामले पर चर्चा की है और इस तरह के ट्रीटमेंट कराने पर अपने विचार साझा किए है। करीना कपूर जल्द ही फिल्म 'द बकिंघम मर्डर्स' में भी नजर आने वाली हैं।

करीना कपूर ने कहा कि उन्हें कभी बोटॉक्स या किसी अन्य कॉस्मेटिक बदलाव की जरूरत महसूस नहीं होती है और वो उनकी उम्र वाली भूमिकाएं ही अदा करती हैं। करीना ने यह भी कहा कि उनके पति सैफ अली खान को वो वैसे ही आकर्षक लगती हैं, जैसी वो हैं। करीना ने कहा उनके दोस्त भी तारीफ में कहते हैं कि वो अच्छी दिखती हैं।

करीना ने साक्षात्कार में कहा कि उनकी फिल्में अच्छी चल रही हैं और उन्हें अपनी उम्र वाले रोल करने पर गर्व हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वो जवान दिखने की कोशिश नहीं कर रही हैं। उन्होंने कहा कि वो चाहती हैं कि लोग उन्हें उसी तरह देखें, जैसे वो हैं और तारीफ करें।

बेबो ने सेल्फ केयर का मतलब समझाते हुए कहा कि खुद के लिए वक्त निकालना ही सेल्फ केयर होता है। फिर चाहे सैफ के साथ खाना बनाना हो, दोस्तों के साथ अच्छा समय बिताना हो या कसरत करना हो। उन्होंने कहा कि उनके लिए दिल खोलकर बात करना और अच्छा खाना खाना काफी जरूरी है।

'द बकिंघम मर्डर्स' की बात करें तो ये 13 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसका निर्देशन हंसल मेहता ने किया है। फिल्म में ऐश टंडन, रणवीर बरार और कीथ एलन ने भी काम किया है। इसके बाद करीना दिवाली पर रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स की पांचवी फिल्म सिंघम अगेन और मेघना गुलजार की 'दायरा' में भी दिखाई देंगी।

बादशाह और हनी की तकरार को मिली हवा! आखिर क्या है माफिया मुंडीर?

बॉलीवुड के सबसे चर्चित विवादों में रैपर बादशाह और हनी सिंह का विवाद भी शामिल है। लंबे समय से दोनों के बीच अनबन चल रही है। अब कुछ साक्षात्कारों के बाद दोनों का विवाद फिर से सुर्खियों में आ गया है। दोनों ने अप्रत्यक्ष रूप से खुद को एक-दूसरे से श्रेष्ठ बताया है। यहां तक की गाना भी गा दिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक हनी सिंह खुद को रोल्स रॉयस और बादशाह को नैनो कार बता चुके हैं। वहीं, बादशाह ने भी 'मैंने सीन चेंज कर दिया...और कुछ लोगों का कमबैक ही नहीं हो रहा...' गाना गाकर हनी सिंह को निशाने पर लिया। इन दोनों के विवाद के सुर्खियों में आने के बाद 'माफिया मुंडीर' भी चर्चा में आ गया है। कहा जाता है कि दोनों के बीच 14 साल से चल रहे झगड़े की वजह भी 'माफिया मुंडीर' ही है।

क्या है सुर्खियों में बना माफिया मुंडीर?

हनी सिंह और बादशाह के कुछ हालिया साक्षात्कारों के बाद 'माफिया मुंडीर' काफी चर्चा में है। चलिए जानते हैं आखिर ये माफिया मुंडीर क्या है? दरअसल 'माफिया मुंडीर' एक बैंड था, हनी सिंह और बादशाह दोनों ही इसका हिस्सा थे। दोनों ने मिलकर बैंड के लिए कई गाने निकाले। बाद में जब दोनों की दोस्ती में दरार आ गई तो बैंड भी टूट गया। वहीं, हनी सिंह ने हाल ही में दिए एक साक्षात्कार में बताया कि 'माफिया मुंडीर' कोई ग्रुप नहीं था, बल्कि एक प्लेटफार्म था, जो नई प्रतिभाओं और गायकों को मौका देता था और हनी सिंह इसके संस्थापक थे। बादशाह भी खुद को कई बार इस बैंड का हिस्सा बता चुके हैं।

हालांकि, हनी सिंह ने उनके इस दावे को झूठ ठहराया और कहा है कि बादशाह कभी 'माफिया मुंडीर' का हिस्सा थे ही नहीं। हनी सिंह ने दावा किया कि उनके पिता बहुत पैसे वाले थे और उन्होंने हनी सिंह को बादशाह की एक एल्बम का म्यूजिक देने के लिए पैसे दिए थे। हनी ने साक्षात्कार में कहा जिसके पास पहले से पैसे हो उसे इस

प्लेटफार्म की क्या जरूरत? हालांकि, बादशाह ने इस बात को गलत बताते हुए कहा है कि वह माफिया मुंडीर का हिस्सा थे।

क्यों हुई बादशाह और हनी की लड़ाई?

बादशाह और हनी सिंह संगीत उद्योग का बहुत बड़ा नाम हैं। दोनों के नाम बहुत सारे हिट गाने और एल्बम हैं। एक दौर ऐसा आया जब हनी सिंह लाइमलाइट से दूर हो गए। इस समय बादशाह के करियर का उदय शुरू हुआ। दोनों ने एक साथ कई गाने और एल्बम किए हैं। 'ब्राउन रंग', 'अंग्रेजी बीट ते' जैसे कई गाने हैं जिसके रैप लिखने का दावा बादशाह और हनी दोनों करते हैं। वहीं, बादशाह ने वर्षों पहले एक साक्षात्कार में माना था कि दोनों ने एक साथ मिलकर कई गाने लिखे थे, हालांकि वह रिलीज ही नहीं हुए, क्योंकि हनी सिंह सिर्फ अपने करियर पर ध्यान देते थे।

बादशाह ने हनी पर यह भी आरोप लगाया था कि उन्होंने उनसे कई दस्तावेजों पर साइन करवा लिया था। हनी सिंह के मुताबिक बादशाह उनसे कई बार माफी मांगी और फिर भी उनके खिलाफ गाने निकाले। हाल-फिलहाल में हुए कुछ साक्षात्कारों ने इस विवाद को फिर से हवा दे दी है।

जसलीन रॉयल ने गुरु रंधावा के खिलाफ दायर किया मुकदमा

गुरु रंधावा पंजाबी मनोरंजन जगत का एक बड़ा नाम हैं। वह गायक, गीतकार और संगीतकार हैं, जिनके गाने अक्सर चार्टबस्टर साबित होते हैं। उन्हें 'लाहौर', 'पटोला', 'हाई रेटेड गबरू' आदि गानों के लिए जाना जाता है। मशहूर गायक के लिए मुश्किलें पैदा होती नजर आ रही हैं। हाल में ही गायिका जसलीन रॉयल ने उनके खिलाफ कॉपीराइट से जुड़ा एक मुकदमा दायर किया है।

'रनवे 34' के प्रचार के दौरान बनाई थी रचनाएं

जसलीन ने अपने संगीत के कॉपीराइट को लेकर टी-सीरीज, गीतकार राज रणजोध और गायक गुरु रंधावा के खिलाफ बॉम्बे हाई कोर्ट में मुकदमा दायर किया है। एक बयान के अनुसार, गायिका द्वारा इन पर एल्बम 'जी थिंग' के गीत ऑल राइट में उनके संगीत से जुड़ी रचनाओं के अनधिकृत उपयोग का आरोप लगाया गया है। बयान में कहा गया है कि जसलीन ने अजय देवगन अभिनीत 'रनवे 34' के प्रचार कार्यक्रमों के लिए साल 2022 में कुछ मूल

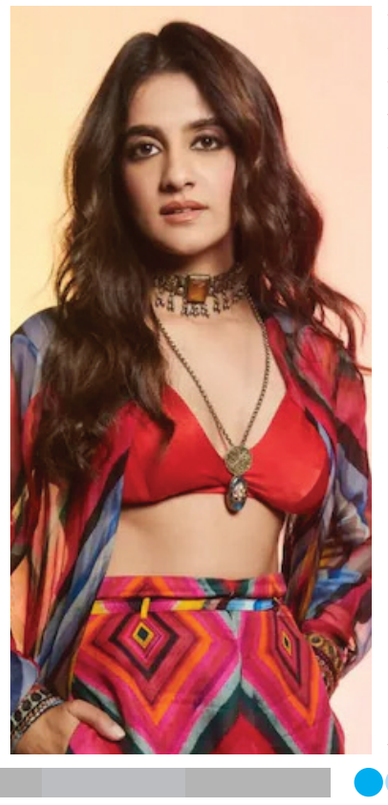

संगीत रचनाए बनाई थीं। इन रचनाओं को गीतकार राज रणजोध के साथ ऑडियो-वीडियो कॉल और मैसेजों के जरिए साझा किया गया था। बाद में इन रचनाओं को गाने के स्क्रैच वर्जन में शामिल किया गया था।

सहमति के बिना रचनाओं के इस्तेमाल का जसलीन ने किया दावा

इस गाने को लेकर गुरु रंधावा से बातचीत की गई थी। हालांकि, उनके द्वारा रिकॉर्ड किया गया गाना जसलीन को पसंद नहीं आया, जिसके कारण सभी इस गाने के लिए जुड़ नहीं पाए। जसलीन के पास इस संगीत के सभी अधिकार थे। साल 2023 में, जसलीन को एहसास हुआ कि टी-सीरीज द्वारा रिलीज किया गए गाने 'ऑल राइट' में उनकी मूल रचनाओं का उपयोग किया गया है। इस गाने को गुरु रंधावा ने अपनी आवाज दी है। गायिका ने उनकी सहमति के बिना उनके मूल संगीत रचनाओं का उपयोग करने और उन्हें श्रेय न देने को लेकर मुकदमा दायर किया है।

सभी स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म से हटाना होगा गाना

जारी किए गए बयान के अनुसार, मुकदमे में कॉपीराइट उल्लंघन और नैतिक अधिकारों के उल्लंघन का दावा किया गया है। जसलीन के वकीलों ने अदालत से एक अंतरिम आदेश प्राप्त किया है, जिसमें टी-सीरीज को सभी स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म से गाना हटाना पड़ेगा। राज रंजोध और गुरु रंधावा को भी किसी भी तरह से गीत का उपयोग करने से प्रतिबंधित किया गया है।

कंटेस्टेंट ने पूछा क्या आप गर्ल्स कॉलेज के पास जाते थे?

बिग बी बोले- बताने से पोल खुल जाएगी

अमिताभ बच्चन इन दिनों लोकप्रिय टीवी क्विज रिएलिटी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' के 16वें सीजन को होस्ट कर रहे हैं। शो के हर एपिसोड में दर्शकों को कुछ न कुछ मजेदार बातें सुनने को मिलती रहती है।

कभी प्रतिभागियों के मुंह से तो कभी शो के होस्ट बिग बी के मुंह से। इसी बीच, शो के नए एपिसोड का प्रोमो सामने आया है, जिसमें एक बार फिर से बिग बी को मजे की बात बताते हुए सुना जा सकता है।

देवी जी, हम अब शादीशुदा हो गए हैं

केबीसी 16 के नए एपिसोड में आई एक प्रतिभागी ने अमिताभ बच्चन ने पूछा कि क्या वो अपने कॉलेज के दिनों में गर्ल्स कॉलेज लेडी श्रीराम, गार्गी या कमला नेहरू कॉलेज के पास आया करते थे। इस पर बिग बी ने अपने अनोखे अंदाज में जवाब देते हुए

कहा कि देखिए देवी जी, क्या है कि हम अब शादीशुदा हो गए हैं और नाती-पोता भी हो गए है।

अमिताभ ने आगे कहा कि वो जमाना जवानी का था। उसके बारे में आपको क्या बताए। बताने से हमारी पूरी पोल खुल जाएगी और ये सार्वजनिक कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि लोग थोडा सा सोचेंगे कि अच्छा ऐसा था वो। हमारा इंप्रेशन खराब हो जाएगा। बता दें कि अमिताभ बच्चन ने किरोड़ीमल कॉलेज से पढ़ाई की है।

'वेट्टैयन' में रजनीकांत के साथ नजर आएंगे अमिताभ बच्चन

अमिताभ बच्चन जल्द ही रजनीकांत के साथ फिल्म 'वेट्टैयन' में नजर आएंगे। इसका निर्देशन टीजे ज्ञानवेल ने किया है। बिग बी को पिछली बार कल्कि 2898 एडी में देखा गया था, जिसमें उन्होंने अश्वत्थामा का किरदार निभाया था। दर्शकों ने उनके काम को काफी पसंद किया था। फिल्म को नाग अश्विन ने डायरेक्ट किया था।

चश्मा लगाने से चेहरे पर पड़ गए हैं निशान, तो हटाने के लिए करें इन चीजों का इस्तेमाल

एक समय था, जब एक उम्र के बाद ही आंखों पर चश्मा लगता था। उसकी वजह थी, अच्छा खानपान और व्यवस्थित लाइफस्टाइल लेकिन आज समय बदल गया है। आज के वक्त में बिगड़ी हुई लाइफस्टाइल और बाहर के उल्टे-सीधे खाने की वजह से लोगों की आंखों पर सीधा असर पड़ रहा है। इसके साथ ही लगातार मोबाइल चलाने की वजह से आंखों दृष्टि और ज्यादा कमजोर होती जा रही है।

मोबाइल से निकलने वाली किरणों की वजह से कम उम्र में ही बच्चों की नजर कमजोर हो रही है, जिसके चलते छोटी उम्र में ही बच्चे चश्मा लगाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जब चश्मा लगातार लगाना पड़ता है तो उससे चेहरे पर निशान पड़ने लगते हैं। एक समय के बाद ये निशान काफी भद्दे लगने लगते हैं। ऐसे में आज हम आपको इन निशानों को मिटाने के कुछ घरेलू तरीके बताने जा रहे हैं ताकि आप भी घर बैठे चेहरे के इन निशानों से छुटकारा पा सके।

आलू

चश्मे से होने वाले इन निशानों को हटाने के लिए आपको बस कच्चे आलू की जरूरत होगी। इसके इस्तेमाल के लिए एक कच्चे आलू को पीस कर रस निकाल लें। इस रस को कॉटन बॉल से निशान वाली जगह पर अप्लाई करें। कुछ ही दिनों में आपको फायदा जरूर मिलेगा।

खीरा

चश्मे का निशान हटाने के लिए खीरे का रस काफी फायदेमंद होता है। आपको बस खीरे का रस निकाल कर उंगली से इसे निशान पर लगाना है।

गुलाब जल

स्किन से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में गुलाब जल काफी मदद करता है। इसके इस्तेमाल से आप अपने चेहरे पर चश्मे से हुए निशान को हटा सकती हैं। इसके लिए आपको बस रोज सोने से पहले कॉटन बॉल को गुलाब जल में भिगो कर आधे घंटे के लिए चेहरे के निशान पर रखना है।

संतरे का छिलका

संतरे के छिलके के पेस्ट में कुछ बूंदे गुलाब जल की मिलाकर आप इसे निशान पर अप्लाई करें। कुछ ही दिन में आपको फायदा दिखने लगेगा।

टमाटर का रस

चेहरे पर ग्लो लाने के लिए टमाटर का रस काफी फायदा करता है। आप इसकी मदद से चेहरे पर पड़े निशान को भी हटा सकते हैं। इसके इस्तेमाल के लिए आपको बस टमाटर का जूस निशान वाली जगह पर अप्लाई करके आधा घंटे के लिए छोड़ना है।

एलोवेरा

अगर आपके चेहरे पर कई तरह की परेशानियां हैं तो रोजाना रात को सोने से पहले एलोवेरा जेल को कॉटन बॉल में लेकर इसे निशान वाली जगह पर अप्लाई करें। कुछ ही दिन में चेहरे के निशान गायब हो जाएंगे।

मेलजोल से होता है बच्चों का विकास कैसे सिखाएं घुलना-मिलना

कई बच्चे स्वभाव से शर्मीले होते हैं और बाहरी दुनिया से दूर रहते हैं। कई बच्चे मोबाइल, लैपटॉप को ही अपनी दुनिया समझते हैं और पड़ोसी का नाम भी नहीं जानते। उन्हें लगता है कि वे मोबाइल के जरिये पूरी दुनिया के साथ सोशल हैं। माता-पिता के लिए यह एक चुनौती होती है, जब बच्चे दोस्त नहीं बना पाते या उन्हें सोशल होने में कठिनाई आती है। पढ़ाई, खेल-कूद के साथ बच्चों को सोशल वैल्यू देना भी जरूरी है। अगर वे चुपचाप और अकेले रहते हैं तो उनका विकास रुक जाता है। मेल-जोल से उनका प्रोत्साहन बढ़ता है, हिम्मत खुलती है और नई चीजें जानने का मौका मिलता है। इसलिए बच्चों को यह समझना जरूरी है कि मोबाइल के बाहर भी एक दुनिया है, जो जिंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आत्मसम्मान के लिए सामाजिक संबंध जरूरी हैं, लेकिन नए लोगों से घुलना-मिलना और बातचीत करना बच्चे के लिए काफी कठिन होता है। ऐसे में आप क्या करती हैं?

आस-पास क्या चल रहा है

कई बच्चे पहले से ही सोशल होते हैं। उन्हें लोगों से मिलना अच्छा लगता है। कई बच्चे घर में रिश्तेदार आते ही कमरे में चले जाते हैं। ऐसे में माता-पिता उनको सामाजिक गतिविधियों में शामिल करें, जैसे कि उन्हें पानी का ग्लास लाने को कहें या बड़ों का अभिवादन करना सिखाएं, ताकि उन्हें पता रहे कि आस-पास क्या चल रहा है। सामाजिक होने से बच्चे खुद को खुलकर अभिव्यक्त कर पाते हैं, जिससे आस-पास के लोग भी उनसे हमेशा खुश रहते हैं।

नए लोगों से बातचीत

कई बच्चे माता-पिता या नजदीकी लोगों के अलावा किसी अन्य से ज्यादा खुलते नहीं हैं। ऐसे में वे अंतर्मुखी रह जाते हैं और बाहरी दुनिया से उनका जुड़ाव नहीं हो पाता। आज के समय में बच्चों को एक्टिव और इंटरेक्ट होना बेहद जरूरी है। इसलिए माता-पिता, बच्चों को बात करना सिखाएं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा और अकेलापन दूर होगा। बच्चों को दूसरे लोगों के साथ खुलने के लिए दोस्त बनाना सिखाएं। इसके लिए उन्हें सांस्कृतिक, एथलेटिक, धार्मिक और मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होने को प्रेरित करें।

शेयरिंग-केयरिंग

बच्चों का मन कोरा होता है और सरल भी, मगर कई बच्चों का स्वभाव शेयरिंग-केयरिंग का नहीं होता। ऐसे में माता-पिता उन्हें दोस्तों के बीच शेयरिंग- केयरिंग करना सिखाएं। बुरे वक़्त में दोस्तों की मदद करने से बच्चों में सहयोग, सद्भावना की भावना पनपेगी। बच्चों को दोस्ती की प्रेरक कहानियां सुनाएं।

सवाल करना

कई बच्चे जो सुनते हैं, चुपचाप उसे अंदर समा लेते हैं। लेकिन अगर

वे सवाल नहीं करेंगे तो उनका विकास रुक जाएगा। इसलिए माता-पिता, बच्चों को सवाल करना सिखाएं। इससे उनके अंदर जिज्ञासा उत्पन्न होगी और वे नई चीजें जान पाएंगे, किसी भी प्रतियोगिता में भाग ले पाएंगे।

ताकत को पहचानें

हर बच्चे के अंदर एक खास गुण होता है। वही उसकी ताकत है। इसलिए बच्चों से जबरदस्ती कुछ भी न कराएं। उनकी प्रतिभा को समझकर, बच्चे की ताकत क्या है, उसे जानकर ही आगे बढ़ें। माता-पिता बच्चे के गुणों को पहचानें।

बच्चों के लिए रोल मॉडल

पहले खुद सोशल बनें। माता-पिता काम के अलावा भी वक्त निकालें, बच्चों के साथ बैठें और सोशल हों, ताकि बच्चे उन्हें देखकर ये सारे गुण सीख सकें।

बच्चों के सोशल न बन पाने के पीछे माता-पिता भी उतने ही जिम्मेदार होते हैं, जितने कि बच्चे, क्योंकि एकल परिवार में पेरेंट्स के पास ही बच्चों के लिए वक्त नहीं है, वे खुद बच्चों के साथ सोशल नहीं हैं। दूसरी ओर, मोबाइल ने बच्चों को वर्चुअली तो सोशल बना दिया, लेकिन अपनों से दूर कर दिया। माता-पिता के लिए जरूरी है कि वे हफ्ते में एक दिन बच्चों के लिए निकालें, उन्हें बाहर की दुनिया से रूबरू कराएं। इससे उनके अंदर रिश्तों की समझ बढ़ेगी और वे सोशल बनेंगे।

कॉलर पर मौजूद जिद्दी दाग को सिर्फ 5 मिनट में साफ करता है यह घरेलू नुस्खा

साफ-सुथरा कपड़ा पहनना लगभग हर किसी को पसंद होता है। इसलिए कई लोग शर्ट से लेकर अन्य कपड़े साफ और प्रेस करके पहनने का शौक रखते हैं। लेकिन यह कई बार देखा जाता है कि शर्ट के अन्य हिस्से तो चमकते हैं, पर शर्ट के कॉलर पर जिद्दी दाग मौजूद ही रहता है। बार-बार की सफाई के बाद भी कॉलर से तेल, पाउडर आदि के दाग साफ नहीं होते हैं। इसलिए शर्ट का कॉलर सबसे अधिक और सबसे तेजी से गंदा होता है। हम आपको एक ऐसी चीज के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसके इस्तेमाल से शर्ट के कॉलर पर मौजूद जिद्दी से जिद्दी दाग को चंद मिनटों में साफ करके चमका सकते हैं।

शर्ट के कॉलर को साफ करने से पहले करें ये काम

शर्ट के कॉलर पर मौजूद जिद्दी से जिद्दी दाग को साफ करना कोई मुश्किल काम नहीं है, लेकिन सफाई करने के लिए आपको कुछ चीजों की जरूरत पड़ेगी। जैसे- सिरका, बेकिंग सोडा, नींबू का रस, अमोनिया पाउडर और स्टार्च। इसके अलावा आप ब्लीच पाउडर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

विनेगर के इस्तेमाल से कॉलर को साफ करें

सफेद शर्ट लेकर रंगीन शर्ट के कॉलर में लगे जिद्दी से जिद्दी दाग को साफ करने के लिए जिस एक चीज का जिक्र कर रहे हैं उसका नाम विनेगर (सिरका) है। सिरके के इस्तेमाल से कुछ ही देर में कॉलर को साफ करके चमका सकते हैं। इसके लिए आपको अधिक मेहनत भी करने की जरूरत नहीं है। फॉलो करें ये स्टेप्स-

सबसे पहले शर्ट को नॉर्मल पानी में डुबोकर 20 मिनट के लिए छोड़ दें। इससे गंदगी नरम जाएगी।

इधर एक बाउल में 2-3 चम्मच विनेगर और 2 चम्मच नींबू के रस को डालकर मिक्स कर लें।

अब मिश्रण ले आधे हिस्से को शर्ट के कॉलर पर डालकर करीब 5 मिनट के लिए छोड़ दें।

5 मिनट बाद बचे हुए आधे मिश्रण में ब्रश को डुबोकर कॉलर को रगड़े।

इस प्रक्रिया को 5 मिनट लगातार करते रहे। दाग साफ करने के बाद शर्ट को पानी से साफ कर लें।

विनेगर और बेकिंग सोडा का मिश्रण इस्तेमाल करें

शायद आपको मालूम होगा, अगर नहीं मालूम है तो आपको बता दें कि विनेगर और बेकिंग सोडा का मिश्रण शर्ट के किसी भी हिस्से में लगे दाग को आसानी से साफ कर सकता है। इनके इस्तेमाल से सब्जी का दाग, चाट, चटनी, हल्दी आदि का दाग भी कुछ ही देर में साफ सकते हैं। फॉलो करें ये स्टेप्स-

सबसे पहले एक बाउल में 2-3 चम्मच विनेगर को डालें।

अब इसमें 1-2 चम्मच बेकिंग बेकिंग सोडा को डालकर गाढ़ा मिश्रण तैयार कर लें।

इसके बाद मिश्रण में ब्रश को डुबोकर कॉलर पर लगा दें और 5 मिनट मिनट के लिए छोड़ दें।

5 मिनट बाद क्लीनिंग ब्रश से रगड़कर कॉलर को साफ कर लें।

विनेगर और स्टार्च के इस्तेमाल से कॉलर को साफ करें

विनेगर और स्टार्च का मिश्रण भी शर्ट के कॉलर पर मौजूद तेल, साबुन, पाउडर आदि के दाग को साफ करने के लिए एक बेस्ट विकल्प हो सकता है। इसका इस्तेमाल से सफेद शर्ट की सफाई करने से लेकर रंगीन शर्ट की भी सफाई कर सकते हैं। फॉलो करें ये स्टेप्स-

सबसे पहले एक बर्तन में 2-3 चम्मच विनेगर को डालें।

इसके बाद इसमें 2 चम्मच स्टार्च और 2-3 चम्मच पानी को दलकर अच्छे से मिक्स कर लें।

अब मिश्रण को हल्का गुनगना कर लें और मिश्रण में ब्रश को डुबोकर कॉलर पर 5 मिनट के लिए लगाकर छोड़ दें।

5 मिनट बाद क्लीनिंग ब्रश से रगड़कर साफ कर लें।

तौलिए से नहीं आएगी फंफूद जैसी बदबू, अपनाएं ये हैक्स

तौलिए से बदबू दूर करने के लिए आपको महंगे डिटर्जेंट की जरूरत नहीं है। गर्म पानी से लेकर नींबू तक के उपयोग से आप इस समस्या से छुटकारा पा सकती हैं। नहाने के बाद हाथ-मुंह और शरीर को पहुंचने के लिए तौलिए का इस्तेमाल किया जाता है।

क्या आपने यह महसूस किया है कि तौलिए को धोने के बाद इसमें से फफूंद जैसी बदबू आती है? जिसके कारण तौलिए का इस्तेमाल करने का मन भी नहीं करता है। आज इस आर्टिकल में हम आपको तौलिए से आ रही है फंफूद की बदबू से छुटकारा पाने के आसान तरीका बताएंगे। साथ ही यह भी बताएंगे कि किन कारणों से तौलिए से बदबू आती है।

तौलिए से बदबू आने के कारण

अक्सर हम सभी यह गलती करते हैं कि बाथरूम में गीला तौलिया छोड़ देते हैं। गीले तौलिए में नमी रह जाती है, जिसके कारण तौलिए से फफूंद जैसी बदबू आने

लगती है। टॉयलेट बंद होने के कारण तौलिया सही तरीके से सूख भी नहीं पाता है।

अक्सर लोग तौलिए को सही तरीके से सुखाते नहीं हैं। गीले तौलिए को सुखाने के लिए पहले ड्रायर का इस्तेमाल करना चाहिए। इसके बाद धूप में सुखाना चाहिए। ऐसा करने से तो तौलिया पूरी तरह से ड्राई हो जाता है और इसमें से बदबू नहीं आती है।

बेकिंग सोडा से कैसे दूर करें तौलिए की बदबू?

बेकिंग सोडा का इस्तेमाल घर में कई तरीकों से किया जाता है। कपड़ों से दाग-धब्बे हटाने से लेकर बाथरूम से आने वाली बदबू से छुटकारा पाने के लिए बेकिंग सोडा फायदेमंद होता है।

क्या आपके साथ भी ऐसा होता है कि तौलिया धोने के बाद भी उसमें फंफूद की बदबू आती है? जिसके कारण आप उस तौलिए का इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं? ऐसे में तौलिए से बदबू दूर करने के लिए बेकिंग सोडा का इस्तेमाल कर सकती हैं-

पानी को अच्छे से गर्म कर लें।

अब गर्म पानी में एक कप बेकिंग सोडा डालें। बेकिंग सोडा के इस घोल में कुछ देर तौलिए को भिगो कर रख दें।

आप चाहें, तो मशीन में भी तौलिए को धो सकती हैं। मशीन में धोने के लिए हॉट वाटर साइकिल का इस्तेमाल करें। करीब आधे घंटे बाद तौलिए को डबल रिंस करें, ताकि तौलिए में बेकिंग सोडा का कोई भी अवशेष ना रहे।

एक बार बेकिंग सोडा के घोल में तौलिए को धोने से आप आएंगे कि इसमें से बदबू नहीं आ रही है।

तौलिए को धोने के लिए कैसे करें सिरका का इस्तेमाल?

अगर आपके तौलिए से बदबू आती है, तो इसे सामान्य पानी और डिटर्जेंट से धोने के बजाय सिरके का इस्तेमाल करें। सिरका नेचुरल क्लीनर डिओडराइजर है। इसलिए सिरके से कपड़ा धोने से बदबू नहीं आती है। सबसे पहले आपको पानी को गर्म करना होगा। अब तौलिए को गर्म पानी में भिगो लें। गर्म पानी में एक कप व्हाइट विनेगर डालें।

तौलिए को इस सॉल्यूशन में करीब 1 घंटे तक भिगने के लिए छोड़ दें। करीब 1 घंटे बाद एक कप सिरका में लॉन्ड्री डिटर्जेंट डालकर तौलिए को अच्छे से धो लें।ऐसा करने से तौलिए से बदबू नहीं आएगी। तौलिए को तुरंत सुखाना ना भूलें। तौलिए को सुखाने के लिए आप मशीन का इस्तेमाल कर सकती हैं, क्योंकि इसमें आसानी से तौलिया पूरी तरीके से सूख जाता है।

तौलिए को साफ रखने के तरीके?

तौलिए को गीली जगह पर न रखें। इसके कारण तौलिए से बदबू आने लगेगी। आप तौलिए को फोल्ड करके रख सकती हैं। इसके अलावा, हैंगर में टांगकर रखें। तौलिए को सुखाना जरूरी है। तौलिए को स्टैंड पर डालकर सुखाएं। आप चाहें, तो तार में भी सुखा सकती हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। कई बार ज्यादा काम की वजह से तौलिए को धोने का समय नहीं मिलता है। ऐसे में तौलिए पर बैक्टीरिया न पैदा हो, इसके लिए आप एंटी- बैक्टीरियल लिक्विड स्प्रे का इस्तेमाल कर सकती हैं। इसे स्प्रे करने से बैक्टरिया मर जाते हैं और बदबू भी नहीं आती है।

बिस्तर पर लेटकर करें ये योगासन, सेहत को होंगे फायदे

बटरफ्लाई पोज

गलत लाइफस्टाइल और खानपान से लोगों की सेहत पर प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण लोग कई बीमारियों से ग्रसित होने लगते हैं। इन में मोटापा, थकान, शरीर दर्द और तनाव आदि शारीरिक और मानसिक समस्या शामिल हैं। इस तरह की शारीरिक समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए योगासन लाभकारी होता है। योगासन का नियमित अभ्यास गलत जीवन शैली और पौष्टिक आहार की कमी से होने वाली समस्याओं से राहत दिलाता है। हालांकि भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल में लोगों के पास योग या व्यायाम करने तक का समय नहीं मिल पाता। लेकिन सेहत को दुरुस्त रखने के लिए कुछ ऐसे योगासन हैं जो रोज सुबह नींद खुलने के बाद आप बेड पर ही कर सकते हैं। सुबह सुबह योगासन का अभ्यास मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है। योगासन से शारीरिक समस्याएं कम होने के साथ ही तनाव और चिंता भी कम होती है। जानिए उन पांच योगासनों के बारे में, जिन्हें रोजाना सुबह आसानी से आप बिस्तर पर कर सकते हैं।

भुजंगासन

रोजाना भुजंगासन का अभ्यास करने से भुजाएं मजबूत होती हैं। मांसपेशियों में खिंचाव आता है, जिससे बेली फैट कम होता है और रीढ़ में लचीलापन आता है। भुजंगासन का अभ्यास करने के लिए बिस्तर पर पेट के बल सीधा लेटकर दोनों हाथों को कंधे के सामने ले आएं। फिर दोनों हाथों को कंधे पर सामने लाते हुए पूरा शरीर एक सीध में रखें। अब ऊपरी हिस्से को भुजाओं से उठाएं और पैर सीधे रखते हुए कमर से ऊपर का हिस्सा हवा में रखें। कुछ देर इसी अवस्था में रहने के बाद सामान्य अवस्था में आ जाएं।

बटरफ्लाई पोज

बद्धकोणासन को बटरफ्लाई पोज कहते हैं, जिसके अभ्यास से हिप्स और जांघों की मांसपेशियों में खिंचाव आता है और चर्बी कम होती है। पैरों में मजबूती और हिप्स शेप के लिए भी यह योगासन फायदेमंद है। इस योगासन को करने के लिए बिस्तर पर सीधा बैठकर दोनों पैरों के घुटनों को अंदर की तरह मोड़ें। अब पैरों के दोनों तलवे आपस में जोड़ते हुए दोनों हाथों से पैरों को पकड़ लें। अब जांघों को हिलाएं। इसी अवस्था में रहने के बाद सामान्य अवस्था में आ जाएं।

पवनमुक्तासन

पवनमुक्तासन करने के लिए बिस्तर पर लेटकर पैरों को दीवार से सटाएं। फिर पैर को सीधा रखते हुए शरीर को भी सीधा कर लें। कुछ देर इसी अवस्था में रहें फिर सामान्य हो जाएं।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन

अर्ध मत्स्येन्द्रासन के अभ्यास से हिप्स और जांघ की मांसपेशियों का फैट कम होता है। ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होने के साथ ही कमर की चर्बी कम होती है। अर्ध मत्स्येन्द्रासन को करने के लिए बिस्तर पर पहले दंडासन की मुद्रा में बैठ जाएं। अब शरीर को सीधा रखते हुए बाएं पैर के घुटनों से मोड़कर दाएं पैर को उठाकर बाएं घुटने पर ले लाएं। अब दाएं हाथ की कोहनी को दाएं पैर के घुटने के ऊपर रखें। इसी अवस्था में रहने के बाद दूसरी तरफ से यह आसन दोहराएं।

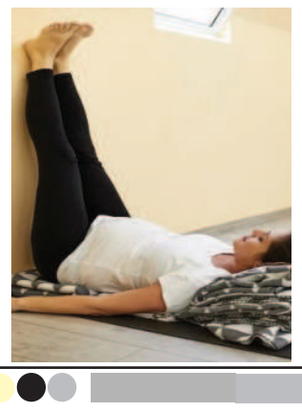

विपरीत करणी

इस आसन को करने से ब्लड सर्कुलेशन सीधा मस्तिष्क तक पहुंचता है और दिमाग तेजी से चलता है। मस्तिष्क तनाव मुक्त होता है और डार्क सर्कल सही होकर त्वचा ग्लो करती है। विपरीत करणी लचीलेपन और रीढ़ की हड्डी मजबूत करने के लिए पवनमुक्तासन करें। पवनमुक्तासन से शरीर की थकान दूर होती है। इस आसन को करने के लिए बिस्तर पर लेटकर दोनों पैरों को आपस में मोड़ लें। फिर घुटनों को छाती पर लगाने हुए दोनों हाथों से पैरों को समेटें। इसी अवस्था में रहते हुए लंबी-लंबी सांस लें और छोड़ें।

नींद की कमी बना सकती है आपको हृदय रोगी

इसके कारण समय से पहले मौत का भी खतराक्या आप रात में अच्छी नींद ले पा रहे हैं? स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, यह वैश्विक स्तर पर चर्चा में काफी बड़ा प्रश्न है, क्योंकि नींद पूरी न हो पाने की समस्या बड़ी चिंता बनकर उभरती हुई देखी जा रही है। विशेषकर कोरोना महामारी के बाद यह जोखिम और भी बढ़ गया है, लगभग हर उम्र के लोगों में इसका खतरा देखा जा रहा है।

अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि जिन लोगों की नींद पूरी नहीं हो पा रही है, उनमें समय के साथ कई प्रकार की गंभीर और क्रोनिक बीमारियों के विकसित होने का खतरा हो सकता है। यह आपमें हृदय रोगों के साथ, डायबिटीज की जटिलताओं को बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करने वाली समस्या हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि हम सभी रात में निर्बाध नींद लेना जरूर सुनिश्चित करें।

हृदय की गंभीर समस्याओं का जोखिम

क्या आप रात में 6 घंटे से कम सोते हैं? अगर हां तो आपको हृदय रोग होने की अधिक आशंका है। डॉक्टर निश्चित नहीं हैं कि यह कैसे काम करता है, लेकिन माना जाता है कि नींद की कमी से रक्तचाप और तनाव बढ़ जाता है जो सीधे तौर पर हृदय के लिए दिक्कतें बढ़ाने वाली स्थिति हो सकती है। इसके अलावा शोधकर्ताओं ने सोने में परेशानी और हार्ट फेलियर के जोखिमों के बीच संबंधों को लेकर भी अलर्ट किया है। शोध के मुताबिक अनिद्रा की समस्या शरीर की तनाव प्रतिक्रिया को ट्रिगर करती है, जो समय के साथ आपके दिल को कमजोर कर सकती है।

हार्ट फेलियर का खतरा

जर्नल में छपी अध्ययन की रिपोर्ट में वैज्ञानिकों का कहना है कि हृदय विफलता एक दीर्घकालिक समस्या है जो अनुमानित 60 लाख अमेरिकी लोगों को प्रभावित करती है। हार्ट फेलियर से पीड़ित लोगों की संख्या 2030 तक 46% (8 मिलियन से अधिक) बढ़ने का अनुमान है। इसके लगभग 75% रोगियों में निदान के दौरान नींद की गड़बड़ी (एसडी) या अनिद्रा जैसी समस्याओं का पता लगाया गया है। नींद पूरी होने की समस्या उन स्थितियों को भी बढ़ाने लगती है जिसके कारण हृदय की गंभीर बीमारियों के विकसित होने का भी जोखिम रहता है।

बढ़ सकता है आपका वजन

एक अन्य शोध में पाया गया कि यदि आप रात में 6 घंटे से कम सोते हैं, तो इसके कारण शरीर में वसा की मात्रा अधिक हो सकती है। इसे व्यवस्थित रखने के लिए आपको रोजाना कम से कम 8 घंटे सोना चाहिए। जब आप कम नींद लेते हैं तो आपका शरीर बहुत अधिक इंसुलिन बनाता है, जिससे वजन बढ़ सकता है।

समय से पहले मृत्यु का खतरा

यदि आप रात में 5 घंटे से कम सोते हैं तो यह स्थिति आपमें समय से पहले मृत्यु के खतरों को भी बढ़ाने वाली हो सकती है। नींद की समस्याएं कई प्रकार की क्रोनिक बीमारियों के जोखिम को बढ़ाने वाली मानी जाती हैं। जिन लोगों की नींद पूरी नहीं होती है उनमें हृदय रोगों की समस्या के साथ डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और तंत्रिकाओं की दिक्कत भी होने लगती है, जो समय से पहले मृत्यु के कारणों में से एक हैं।

सुप्रीम कोर्ट : बायजू के खिलाफ दिवालियापन कार्यवाही से जुड़ी याचिका पर 17 सितंबर को सुनवाई

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट बायजू मामले में एनसीएलएटी के फैसले के खिलाफ अमेरिका स्थित ऋणदाता ग्लास ट्रस्ट की अपील पर 17 सितंबर को सुनवाई करेगा। अदालत ने बुधवार को इस पर सहमति दी। बता दें कि एनसीएलएटी ने एड-टेक कंपनी बायजू के खिलाफ दिवाला कार्यवाही पर रोक लगा दी थी और बीसीसीआई के साथ 158.9 करोड़ रुपये के बकाये के निपटान को मंजूरी दे दी थी। मुख्य न्या या धी श डी.वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ से वकीलों के एक समूह ने आग्रह किया कि मामले में बाद के घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए याचिका पर तत्काल सुनवाई की जाए। बायजू की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एनके कौल ने याचिका का उल्लेख करते हुए कहा कि मामले की जल्द से जल्द सुनवाई की जानी चाहिए। बीसीसीआई की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और एड-टेक फर्म की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने इस दलील का समर्थन किया। कौल ने कहा कि मामले में एक अन्य याचिका भी दायर की गई है और उस पर 17 सितंबर को सुनवाई होगी, इसलिए या तो मौजूदा याचिका पर उसी दिन सुनवाई की जाए या फिर दोनों मामलों की सुनवाई इस शुक्रवार को की जाए। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, 'हम दोनों याचिकाओं पर 17 सितंबर को सुनवाई करेंगे।' अमेरिकी आधारित ऋणदाता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान ने कहा कि इन मामलों की सुनवाई 17 सितंबर को एक साथ की जाए। इससे पहले 22 अगस्त को पीठ ने यह सुनिश्चित करने के लिए अंतरिम आदेश पारित करने से इनकार कर दिया था कि संकटग्रस्त एड-टेक फर्म के खिलाफ दिवालियेपन की कार्यवाही के सिलसिले में ऋणदाताओं की समिति (सीओसी) कोई बैठक नहीं करेगी। इसने याचिका पर अंतिम सुनवाई 27 अगस्त को तय की थी। पीठ ने कहा था कि इस बीच जो भी घटनाक्रम घटित हो सकते हैं, उन्हें नकारा जा सकता है, यदि उसे लगता है कि अपीलीय दिवाला न्यायाधिकरण एनसीएलएटी के फैसले के खिलाफ अमेरिका स्थित ऋणदाता की अपील में कोई दम नहीं है। इस याचिका का उल्लेख इससे पहले 20 अगस्त को भी बायजू और बीसीसीआई द्वारा किया गया था और शीर्ष अदालत ने तब भी एड-टेक फर्म के खिलाफ दिवाला कार्यवाही में लेनदारों की समिति (सीओसी) गठित करने से दिवाला समाधान पेशेवर (आईआरपी) को रोकने के लिए अंतरिम आदेश पारित करने से इनकार कर दिया था।

सेंसेक्स 398 अंक की गिरावट के साथ 81,523 पर बंद

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। शेयर बाजार में आज यानी 11 सितंबर को गिरावट रही। सेंसेक्स 398 अंक की गिरावट के साथ 81,523 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी में भी 122 अंक की गिरावट रही, ये 24,918 के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 20 में गिरावट और 10 में तेजी रही। निफ्टी के 50 शेयरों में से 34 में गिरावट और 16 में तेजी रही। निफ्टी एफएमसीजी छोड़कर सभी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली रही। टाटा मोटर्स, लार्सन एंड टुब्रो, रिलायंस और एसबीआई ने बाजार को नीचे खींचा।

बाजार को गिराने में सबसे ज्यादा टाटा मोटर्स के 108.70 पॉइंट का कॉन्ट्रिब्यूशन है। जबकि, एशियन पेंट्स, बजाज फाइनेंस और सन फार्मा ने बाजार को ऊपर खींचा। एशियाई बाजार में जापान के निक्केई में 1.49% और कोरिया के कोस्पी में 0.40% की गिरावट रही। वहीं हॉन्गकॉन्ग का हैंगसेंग 0.73% और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.82% गिरा।

पीएम मोदी ने पूरी दुनिया को किया प्रेरित

कंपनियों के सीईओ बोले-भारत को आत्मनिर्भर बनाना उद्देश्य

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सेमीकंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में दुनिया की दिग्गज कंपनियों के सीईओ ने पीएम मोदी के साथ बैठक की। बैठक के बाद तमाम सीईओ ने पीएम के दूरदर्शी नेतृत्व और सेमीकंडक्टर तकनीक के बारे में उनकी समझ की तारीफ की। उन्होंने कहा, सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी ओर से उठाए गए कदम असाधारण हैं। उनका नेतृत्व सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को पावरहाउस बनाने के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

एसईएमआई के सीईओ अजीत मनोचा ने कहा कि पीएम मोदी के असाधारण नेतृत्व की कोई सानी नहीं है। इसने न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया को प्रेरित किया है। एनएक्सपी के सीईओ कर्ट सिवर्स ने कहा कि उनकी अब तक पीएम मोदी जैसे सेमीकंडक्टर उद्योग में गहन विशेषज्ञता रखने वाले किसी राजनीतिक नेता से मुलाकात नहीं हुई। जैकब्स के सीईओ बॉब प्रागाडा ने कहा कि पीएम मोदी भारत को वैश्विक स्तर पर ऊपर उठाने के लिए जो कर रहे हैं, वह न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्व के लिए भी आवश्यक है। आईएमईसी के सीईओ ल्यूक वान डेन होव ने कहा कि वे पीएम के नेतृत्व से बहुत प्रभावित हैं। उनका नेतृत्व सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को पावरहाउस बनाने के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

सीईओ के विचार भारत के भविष्य को देंगे आकार

सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के सीईओ के साथ बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि उनके विचार भारत के भविष्य को आकार देंगे। पीएम ने बैठक में विकास के विभिन्न स्तंभों के बारे में बात की, जिसमें सामाजिक, डिजिटल और भौतिक बुनियादी ढांचे का विकास, समावेशी विकास को बढ़ावा देना, अनुपालन बोझ को कम करना और विनिर्माण एवं नवाचारों में निवेश आकर्षित करना शामिल है। सेमीकंडक्टर परियोजनाओं के लिए पैसे की कोई समस्या नहीं है। सरकार ने इनके लिए 62,000 करोड़ रुपये के प्रोत्साहन की प्रतिबद्धता जताई है।

दुनिया के शीर्ष 25 हवाई अड्डों में भारत से सिर्फ एक एयरपोर्ट

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। अंतरराष्ट्रीय विमानन विश्लेषण फर्म ओएजी के अनुसार, दिल्ली का इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (आईजीआईए) वैश्विक 'मेगाहब' हवाई अड्डों की नवीनतम रैंकिंग में 24वें स्थान पर पहुंच गया है। यह पिछली बार इस रैंकिंग 25वें स्थान पर था। यह हवाई अड्डों रैंकिंग है जहां से सबसे अधिक अंतरराष्ट्रीय उड़ान संचालित होते हैं। इस रैंकिंग के अनुसार शीर्ष 50 में दिल्ली के अलावे मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा (सीएसएमआईए) शामिल है। हालांकि, मुंबई का हवाई अड्डा पिछले वर्ष की तुलना में 10 स्थान नीचे खिसक कर 44वें स्थान पर आ गया है। हालांकि, दिल्ली और मुंबई दोनों हवाई अड्डे कम लागत वाली एयरलाइन (एलसीसी) संचालन के लिए मेगाहब हवाई अड्डों की ओएजी की रैंकिंग में बेहतर प्रदर्शन किया है।

सोना 432 रुपये बढ़कर 72,022 पर पहुंचा

चांदी 747 रुपये महंगी होकर 82,954 प्रति किलो बिक रही

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सोने-चांदी की कीमतों में आज यानी 11 सितंबर को बढ़त है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार, बुधवार को 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव 432 रुपए बढ़कर 72,022 रुपए पर पहुंच गया है। इससे पहले मंगलवार को इसके दाम 71,590 रुपए प्रति दस ग्राम थे। वहीं चांदी 747 रुपए बढ़कर 82,954 रुपए प्रति किलो हो गई है। इससे पहले चांदी 82,207 रुपए प्रति किलो पर थी। इस साल सोना मई में 74,222 प्रति 10 ग्राम के ऑल टाइम हाई पर पहुंच चुका है। वहीं, चांदी 29 मई को अपने ऑल टाइम हाई 94,280 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई थी। आईबीजेए के अनुसार, इस साल अब तक सोने के दाम 8,670 रुपए बढ़ चुके हैं। 1 जनवरी को सोना 63,352 रुपए पर था, जो अब 72,022 रुपए प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। वहीं एक किलो चांदी के दाम 73,395 रुपए से बढ़कर 82,954 रुपए पर पहुंच गए हैं।

सुप्रीम कोर्ट : डीआरआई अफसरों को आयातित वस्तुओं पर शुल्क वसूली का भी अधिकार

कस्टम विभाग ने कोर्ट को दी जानकारी

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सीमा शुल्क विभाग ने बुधवार को उच्चतम न्यायालय को बताया कि राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) के अधिकारियों को सीमा शुल्क अधिनियम के तहत आयात के लिए पहले से मंजूरी प्राप्त वस्तुओं पर शुल्क वसूली की मांग करने का भी अधिकार है। सीमा शुल्क विभाग ने 9 मार्च, 2021 के फैसले की समीक्षा की मांग की है।

जिसमें तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे की अध्यक्षता वाली तीन-न्यायाधीशों की पीठ ने माना था कि डीआरआई अधिकारियों को सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत सीमा शुल्क विभाग द्वारा आयात के लिए पहले से मंजूरी दे दी गई वस्तुओं पर शुल्क की वसूली का अधिकार नहीं है। शीर्ष अदालत ने मेसर्स कैनन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड सहित निजी फर्मों को डीआरआई द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस को खारिज कर दिया था, जिसमें शुल्क का भुगतान करने, नहीं करने पर माल जब्त करने, ब्याज की मांग करने और सीमा शुल्क अधिनियम के तहत जुर्माना लगाने की मांग की गई थी। विभाग की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एन वेंकटरमन ने मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ को बताया कि फैसले में रिकॉर्ड के आधार पर छह स्पष्ट त्रुटियां हैं, जो इस निष्कर्ष पर पहुंचने के दौरान कानून के अपेक्षित प्रावधानों को संबोधित करने में विफल रहीं कि डीआरआई अधिकारी सीमा शुल्क अधिकारी नहीं हैं जो माल पर शुल्क की वसूली की मांग कर सकते हैं। विधि अधिकारी ने पीठ से कहा, आज का डीआरआई अधिकारी कल सीमा शुल्क अधिकारी हो सकता है। पीठ में न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे।

अमेरिका में आठ महीने में 452 बड़ी कंपनियों का निकल गया दिवाला

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी वाले देश अमेरिका के लिए यह साल अच्छा नहीं जा रहा है। देश में हजारों छोटी-बड़ी कंपनियां दिवालिया हो चुकी हैं। साल के पहले आठ महीनों में ही देश में 452 बड़ी कंपनियों का दिवाला निकल चुका है। यह पिछले 14 साल में दूसरा सबसे बड़ा नंबर है। साल 2020 में जब कोरोना महामारी ने दस्तक दी थी तो लॉकडाउन के कारण साल के पहले आठ महीने यानी अगस्त तक 466 कंपनियां दिवालिया हुई थीं। इस साल अगस्त में 63 कंपनियां दिवालिया हो गई जबकि जुलाई में 49 कंपनियों का दिवाला निकला था। अमेरिकन इंडस्ट्री के लिए अगस्त पिछले चार साल में चौथा सबसे खराब महीना रहा।

सेक्टरवाइज बात करें तो अमेरिका में इस साल सबसे ज्यादा मार कंज्यूमर डिस्क्रेशनरी सेक्टर पर पड़ी है। इस सेक्टर की 69 बड़ी कंपनियों ने अपना बोरिया-बिस्तर समेट लिया है। इसके बाद इंडस्ट्रियल सेक्टर का नंबर है। इस सेक्टर की 53 कंपनियों का दिवाला निकल चुका है जबकि हेल्थकेयर सेक्टर की 45 कंपनियां भी बैंकरप्ट हुई हैं। महामारी के बाद यह पहला मौका है जब ऐसा लग रहा है कि अमेरिका की इकॉनमी सुस्त पड़ रही है। देश में मंदी की आशंका के साथ ही रेकॉर्ड संख्या में कंपनियों के दिवालिया होने की आशंका है। देश में बेरोजगारी बढ़ी है और उपभोक्ता खर्च में कमी आई है।

दैनिक पंचांग

ग्रह	स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	सिंह	मे	सिंह-	04-22 बजे
चंद्र-	धनु	मे	कन्या-	06-29 बजे
मंगल	मिथुन	मे	तुला-	08-35 बजे
बुध-	सिंह	मे	वृश्चिक-	10-45 बजे
गुरु-	वृष	मे	धनु-	12-58 बजे
शुक्र-	कन्या	मे	मकर...	15-05 बजे
शनि-	कुंभ.	मे	कुंभ-	16-56 बजे
राहु-	मीन	मे	मीन-	18-33 बजे
केतु-	कन्या	मे	मेष--	20-09 बजे
			वृष..	21-54 बजे
			मिथुन..	23-54 बजे
			कर्क..	02-07 बजे

श्री कालयुक्त संवत्सर-विक्रम संवत-2081
शक संवत- 1946 सूर्य -दक्षिणायन- ऋतु -शरद
महावीर निर्वाण संवत -2550,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-07
भोग्य कलि वर्ष-426875 सूर्यास्त. -18-18
कलियुग संवत -5125 वर्ष,
कल्पारंभ संवत -1972949125
सृष्टि ग्रहारंभ संवत-1955885125
दिशाशूल -- दक्षिण - जीरा खाकर घर से निकले
तिथि- नवमी 23-33 तक उपरान्त दशमी
मास - भाद्रपद शुक्ल , गुरुवार 12 September
नक्षत्र - मूल 21-52 तक उपरान्त पूर्वाषाढा
योग - आयुष्मान 22-40 तक उप सौभाग्य
करण- बालव 11-46 तक उप कौलव
विशेष:- श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
व्रत -त्योहार -

विशेष:- राशिफल "हों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए ।

राहुकाल 13:44 से 15:16 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो.9247132654,8309517693

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
शुभ.	06:07 - 07:37 शुभ	अमृत	18:18 - 19:48 शुभ
रोग.	07:37 - 09:08 अशुभ	चंचल	19:48 - 21:16 शुभ
उत्पात	09:08 - 10:40 अशुभ	रोग.	21:16 - 22:44 अशुभ
चंचल	10:40 - 12:12 शुभ	काल	22:44 - 00:12 अशुभ
लाभ	12:12 - 13:44 शुभ	लाभ	00:12 - 01:40 शुभ
अमृत.	13:44 - 15:16 शुभ	उत्पात	01:40 - 03:09 अशुभ
काल	15:16 - 16:48 अशुभ	शुभ	03:09 - 04:37 शुभ
शुभ	16:48 - 18:18 शुभ	अमृत.	04:37 - 06:07 शुभ

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,

काम का दबाव आप पर बढ़ेगा और आप उन चीजो से दूर हो सकते है जिन को करने में आपको आनंद आता था । आपको आराम करने के लिए ज्यादा समय नहीं मिल पायेगा इसलिए आपको जीवन की छोटी बातों से आनंद लेना होगा । ये बहुत ही संतोषजनक और आपके सामान्य प्रयास की तुलना में कम खर्चीला साबित होगा।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,

आज का दिन आपके लिए काफी हद तक उत्तम रहेगा । कुछ मुश्किल कार्य जो की आपने समय पर छोड़ दिए थे उन्हें पूरा करने का भी ये उचित समय है । आज के दिन आप अपने सारे रुके हुए कार्य अपनी उम्मीद से ज्यादा पूरा कर पायेंगे और सारा काम का भोज आज खत्म हो सकता है। आज आप में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो आस पास के सहकर्मी को सकारात्मक रूप में प्रभावित करेगा ।

मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,

आज आपके मितव्ययी होने की संभावना हैं, और आप एक असाधारण अवस्था में रहेंगे । आप एक महंगी कला की वस्तु खरीद सकते है क्यों की आप कला के पुजारी है । आप अपने पास के किसी व्यक्ति के लिए एक महंगा उपहार खरीद सकते है जो की उस व्यक्ति को आश्रयचकित कर सकता है । आपके कार्यस्थल में सब कुछ सुचारू रूप से चलेगा ।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,

आज के दिन आपको अपने सहकर्मियों के साथ सतर्कता बरतनी जरुरी है । कुछ तर्क वितर्क और विवाद के कारण आपके दफ्तर का माहौल ख़राब हो सकता है इसलिए बेफ़ालतू के वाद विवाद से अपने को बचाकर रखे । आज के दिन कुछ क्षेत्रों में उच्च अधिकारीयों से आपके विचार अलग हो सकते है हालाँकि धातु या कृषि उत्पाद में निवेश आप के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है ।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,

आपके वित्तीय संसाधनो का विस्तार होगा जिसका लाभ लेने के लिए आप पूरी तरह तैयार है । आप आज अपने घर , व्यवसाय या वाहन के लिए भी ऋण के लिए आवदेन कर सकते है जो की आराम से मंजूर हो जायेगा । जिन विद्यार्थियों ने शिक्षा ऋण के लिए आवदेन किआ हुआ है उन्हें भी शुभ सन्देश की प्राप्ति होगी । आज का दिन शेयर बाजार में निवेश के लिए उत्तम है ।

कन्या टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं और अपने सपनों का पीछा करने के साथ , आप सुनियोजित तरीके से अपनी चीजो को रखते है । दूसरे इस तरह नहीं है लेकिन दूसरों को ये न बताये और समय पर सब छोड़ दे । इस भावना को त्याग दे अन्यथा लोगों को ये गलतफहमी होगी की आप उनके जीवन में हस्तक्षेप करने की कोशिश कर रहे है ।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,

आज का दिन काम और कार्य क्षेत्र के हिसाब से काफी हद तक शांत रहेगा । आज का दिन घटनाओं रहित रहेगा जिससे की आपको अपने व्यस्त कार्यक्रम में से थोड़ी राहत मिलेगी जिसके तलाश आपको काफी समय से थी । इस समय की आप सराहना करे और इसे मनोरंजन में बिताये और उन खुशनुमा पलो को भी याद करे जो अपने अपने कार्य क्षेत्र में महसूस किये है ।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,

अपने सहयोगियों के साथ तालमेल और कदम से कदम बढाकर चलने का ये एक अच्छा समय है। समीक्षा और हताशा का लम्बा समय अब समाप्त होने की और अग्रसर है इसलिए इस खुशी में आप दोस्तों और परिवार और अपने ऊपर कुछ व्यय भी कर सकते है पर कोशिश करे की ये ज्यादा से ज्यादा एक दिन के लिए हो ।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे

आज आप बहुत आत्मविश्वास महसूस नहीं कर रहे हैं, लेकिन यह महत्वपूर्ण है की आप अपनी अनिश्चितता को छुपाके रखे । भ्रम की अपनी भावनाओं को छुपाके रखे अन्यथा लोग आपकी क्षमता पर शक करेंगे और आप एक महत्वपूर्ण समझौते से हाथ धो सकते है । आपको एक सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने की जरूरत है।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी

ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन के कारण , एक नई ऊर्जा का संचार आप में हो सकता है । आप जीवंत महसूस करेंगे । आप में अधिक से अधिक काम लेने की इच्छा आप में प्रबल होगी और तब भी आप खुश रहेंगे । इससे पता चलता है की चीज़े सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है। लेकिन इस उत्साह में , अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज न करे । एक स्वस्थ मन एक स्वस्थ शरीर में रहता है।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,

आप सफलतापूर्वक अपने रचनात्मक कार्यों को खत्म करने में सक्षम होंगे । इस जश्न को मनाने के लिए आप एक पार्टी की मेजबानी की योजना भी बना सकते हैं और जिन्होंने भी इस यात्रा में आप का समर्थन किया एवं अपने विरोधियों को भी समारोह में आमंत्रित करें । अपनी कमाई और खर्च के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए भी प्रयास करते रहे ।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची

प्रमुख परिवर्तन आज आपके कार्यस्थल पर होने की उम्मीद हैं। वास्तव में आपके आय अर्जित करने के साधन में परिवर्तन आ सकता है , और आप ऐसे कार्य में लिप्त हो सकते है जिसको आप करना चाह रहे थे परन्तु आपने सपने में भी नहीं सोचा था , की ऐसा अवसर आपको मिल सकता है । आप अपने कार्यस्थल पर नवीन विचारो एवं नए दृष्टिकोण के साथ आ सकते है।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

सात समंदर पार की कंपनी कर रही थी अमूल की नकल, हाई कोर्ट ने दिखाया आईना

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सहकारी आंदोलन के जरिये देश-विदेश में नाम कमाने वाली अमूल को दिल्ली हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने अमूल को एक बड़े सीमा-पार ट्रेडमार्क उल्लंघन मामले में राहत दी है। भारत के सबसे बड़े डेयरी ब्रांड अमूल के पक्ष में एक इतालवी कंपनी, टेरे प्रिमिटिव के खिलाफ निषेधाज्ञा दी है। इतालवी फर्म 'अमूलेटी' ट्रेड मार्क के तहत कुकीज़ और चॉकलेट कवर्ड बिस्कुट बेच रही थी। यह अमूल के प्रसिद्ध ट्रेडमार्क से काफी मिलता-जुलता है।

अमूल की विदेशों में भी है प्रसिद्धि

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ) अमूल ब्रांड नाम के तहत अपने डेयरी प्रॉडक्ट्स का विपणन करता है। कंपनी ने अपने वकील अभिषेक सिंह के माध्यम से दिल्ली हाई कोर्ट में ट्रेडमार्क मुकदमा दायर किया। सिंह ने उच्च न्यायालय के समक्ष तर्क दिया कि अमूल न केवल भारत में एक घरेलू नाम है, बल्कि इसकी सीमा-पार प्रतिष्ठा भी है। जो अंतर्राष्ट्रीय फार्म तुलना नेटवर्क द्वारा 2020 के सर्वेक्षण के अनुसार दुनिया में 8वें शीर्ष डेयरी संगठन के रूप में रैंकिंग करता है।

ट्रेडमार्क उल्लंघन मामले में अमूल को राहत

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ), जो अमूल ब्रांड नाम के तहत डेयरी उत्पादों का विपणन करता है, ने अपने वकील अभिषेक सिंह के माध्यम से ट्रेडमार्क मुकदमा दायर किया था। सिंह ने अदालत के समक्ष तर्क दिया कि अमूल न केवल भारत में एक घरेलू नाम है, बल्कि इसने सीमा-पार प्रतिष्ठा भी हासिल की है। अंतर्राष्ट्रीय फार्म कंप्रीजन नेटवर्क द्वारा 2020 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार अमूल दुनिया में 8वें शीर्ष डेयरी संगठन के रूप में स्थान पाता है। सिंह ने तर्क दिया कि टेरे प्रिमिटिव ने 'अमूल' को दर्शाने के तरीके, शैली और तरीके की 'स्पष्ट रूप से' नकल की है। इसने अमूल के नाम में बस 'एति' (ईटीआई) शब्द जोड़ दिया और अपना ब्रांड बना लिया। उन्होंने आगे तर्क दिया कि इतालवी कंपनी ने कन्फेक्शनरी के लिए उल्लंघनकारी चिह्न का इस्तेमाल किया, जो अमूल के कई पंजीकरणों के समान ही वर्ग में आता है।

देश के दो बड़े बैंकों पर करोड़ों का जुर्माना

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दो बड़े बैंकों पर भारतीय रिजर्व बैंक ने भारी-भरकम जुर्माना लगाया है. इनमें पहला देश का प्राइवेट सेक्टर का सबसे बड़ा बैंक एचडीएफसी बैंक है और दूसरा एक्सिस बैंक है. केंद्रीय बैंक द्वारा तय किए गए नियमों के अनुपालन में लापरवाही करने के मामले में रिजर्व बैंक की ओर से दोनों बैंकों पर ये एक्शन लिया गया है. ऐसे में अगर आपका भी अकाउंट इन बैंक में है, तो फिर ये खबर आपके लिए बेहद जरूरी है. आरबीआई ने प्रेस रिलीज जारी कर इस संबंध में जानकारी शेयर की है। रिजर्व बैंक की ऐसे तमाम छोटे-बड़े बैंक्स पर सख्ती जारी है, जो दिशा-निर्देशों का अनुपालन करने में लापरवाही कर रहे हैं. ताजा मामले की बात करें तो केंद्रीय बैंक की ओर से एचडीएफसी बैंक और एक्सिस बैंक पर कुल मिलाकर 2.91 करोड़ रुपये का जुर्माना ठोका गया है. आरबीआई ने बताया है कि जुर्माने की ये कार्रवाई बैंकों की ओर से ग्राहकों को दी जाने वाली सर्विसेज में लापरवाही के मामले उजागर होने के बाद की गई है. इसमें केवाईसी, डिपॉजिट पर इंटरेस्ट रेट्स समेत अन्य मामले भी शामिल हैं।

गौतम अडानी की $100 बिलियन क्लब में फिर से एंट्री लेकिन फिसल गई रैंकिंग

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दुनियाभर के शेयर बाजारों में तेजी रही। इससे दुनिया के टॉप 20 अमीरों में से 15 की नेटवर्थ में तेजी आई। दुनिया के सबसे बड़े रईस एलन मस्क सबसे ज्यादा फायदे में रहे।

ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक टेस्ला, स्पेसएक्स और एक्स समेत कई कंपनियां चला रहे मस्क की नेटवर्थ मंगलवार को 7.08 अरब डॉलर बढ़ गई। वह 248 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ अमीरों के लिस्ट में नंबर वन पर टिके हुए हैं। दूर-दूर तक कोई उनके पास नहीं है। ऐमजॉन के फाउंडर जेफ बेजोस 202 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ दूसरे नंबर पर हैं। मस्क और बेजोस की नेटवर्थ में 46 अरब डॉलर का अंतर है। बेजोस की नेटवर्थ में 3.95 अरब डॉलर की तेजी आई। फ्रांसीसी कारोबारी बर्नार्ड अरनॉल्ट 180 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में 27.8 अरब डॉलर की गिरावट आई है। फेसबुक की पेरेंट कंपनी मेटा के सीईओ मार्क जकरबर्ग 179 अरब डॉलर की नेटवर्थ के

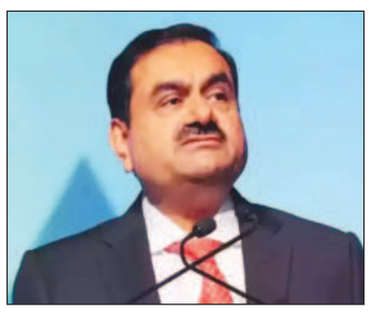

साथ इस लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं। लैरी एलिसन (168 अरब डॉलर) पांचवें, बिल गेट्स (158 अरब डॉलर) छठे, वॉरेन बफे (145 अरब डॉलर) सातवें, स्टीव बालमर (144 अरब डॉलर) आठवें, लैरी पेज (136 अरब डॉलर) नौवें और सर्गेई ब्रिन (128 अरब डॉलर) दसवें नंबर पर हैं।

अंबानी-अडानी की नेटवर्थ

भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी इस लिस्ट में 11वें नंबर पर हैं। मंगलवार को उनकी नेटवर्थ में 23 करोड़ डॉलर की तेजी आई और यह 111 अरब डॉलर पहुंच गई। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन की नेटवर्थ इस साल 14.4 अरब डॉलर बढ़ी है। इस बीच अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी एक बार फिर 100 अरब क्लब में शामिल हो गए हैं।

मंगलवार को उनकी नेटवर्थ में 43.7 करोड़ डॉलर का इजाफा हुआ। इसके साथ ही उनकी नेटवर्थ 100 अरब डॉलर पहुंच गई है। लेकिन अडानी अमीरों की लिस्ट में दो स्थान फिसलकर 15वें नंबर पर पहुंच गए।

सीमेंट की बोरी 60 रुपए महंगी

क्योंकि पड़ोसी राज्यों में डिमांड, बृजमोहन का सीएम को पत्र– जब मजदूरी नहीं बढ़ी तो इसके दाम क्यों

रायपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में सीमेंट कंपनियों ने कीमतों में इजाफा कर दिया गया है। प्रति बोरी 40-50 रुपए बढ़ाए गए हैं। इससे दाम 310 रुपए हो गए हैं। खास बात यह है कि, कीमतों में बढ़ोतरी झारखंड, वेस्ट बंगाल, ओडिशा और एमपी से आने वाली डिमांड के चलते हुई है। प्रदेश में हर महीने करीब 30 से 32 लाख टन सीमेंट का प्रोडक्शन होता है, लेकिन यहां इसकी खपत महज 8 लाख टन ही होती है। बाकी माल दूसरे राज्यों में भेजा जाता है। वहीं सीमेंट की कीमतें बढ़ने के बाद इस पर सियासत भी तेज हो गई है।

रायपुर से भाजपा सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने इस मामले में अपनी ही सरकार को घेरा है। उन्होंने दरें कम करने के लिए केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण और सीएम विष्णुदेव साय को पत्र लिखा है। जबकि कांग्रेस इस मुद्दे को भुनाने की कोशिश में है।

सीमेंट कंपनियां काफी समय से दाम बढ़ाने की कोशिश कर रही हैं। पिछले 5 महीने में चौथी बार सीमेंट की कीमतें बढ़ाने की कोशिश की गई है, लेकिन सरकार के दबाव और मार्केट सपोर्ट नहीं मिलने की वजह से फैसला वापस लेना पड़ा।

अगस्त में भी डीलर्स को कीमतें बढ़ाने को लेकर मैसेज किया गया था, लेकिन डिमांड नहीं होने की वजह से फैसला वापस ले लिया। इस महीने झारखंड, वेस्ट बंगाल, ओडिशा, मध्यप्रदेश, बिहार और यूपी से डिमांड आई है, जिसके चलते छत्तीसगढ़ में भी सीमेंट के दाम बढ़ गए हैं। सीमेंट कंपनी से जुड़े एक अधिकारी ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि सियासी बवाल और चौतरफा दबाव के चलते सीमेंट कंपनियों पर फिर से दाम वापस लेने का प्रेशर है। ऐसे में आने वाले दिनों में इस पर कोई फैसला लिया जा सकता है। एक-दो दिनों में कीमतें कम हो सकती हैं।

कंपनियों ने सीमेंट के दाम भले ही बढ़ा दिए हों, लेकिन जब हमने बिल्डिंग मटेरियल सप्लायर्स से बात की तो पता लगा कि अब तक मार्केट में 50 रुपए की बढ़ोतरी नहीं हुई है। कुछ सप्लायर्स ही पुराने स्टॉक को 20 से 25 रु. बढ़ाकर बेच रहे हैं।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने अपने पत्र में प्रधानमंत्री आवास योजना समेत प्रदेश में इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स इनमें सड़क, पुल-पुलिया, भवन, नहर, स्कूल और कॉलेजों ने निर्माण प्रभावित होने की बात कही है। उन्होंने लिखा है कि छत्तीसगढ़ में हर महीने सीमेंट का उत्पादन करीब 8 करोड़ बैग है।

पहले सीमेंट का रेट 260 रुपए प्रति बोरी था, जो कि 3 सितंबर 2024 से बढ़ा दिया गया है और अब एक बोरी सीमेंट की कीमत 310 रुपए की गई है। इसके अलावा सरकारी और जनहित के प्रोजेक्ट्स के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली सीमेंट के दाम भी बढ़ा दिए गए हैं।

नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव एक साथ नहीं होगा

रायपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में नगरीय निकाय और पंचायती चुनाव को लेकर राज्य निर्वाचन आयोग ने तैयारियां शुरू कर दी है। नगरीय निकाय चुनाव दिसंबर में, तो पंचायत चुनाव जनवरी में होगी। इसके लिए मास्टर ट्रेनर ने सभी जिलों के उप जिला निर्वाचन अधिकारियों को मतदाता सूची तैयार करने के लिए प्रशिक्षण दिया है। मतदाता सूची तैयार करने का काम 29 नवंबर तक चलेगा। इसमें 18 वर्ष पूर्ण करने वालों के नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाएगा। राज्य निर्वाचन आयोग में मंगलवार को आयोग के अधिकारियों और मास्टर ट्रेनर ने उप जिला निर्वाचन अधिकारियों की समस्याओं का निदान कर सुझाव दिए हैं। तय समय सीमा में शुद्ध मतदाता सूची बनाने का निर्देश दिए हैं। दूसरी ओर चुनाव को लेकर प्रथम चरण में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी और सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की नियुक्ति 18 सितंबर तक होगी।

रांची-हजारीबाग समेत झारखंड के 6 जगहों पर एसीबी की रेड

बड़गाई अंचल जमीन घोटाला मामले में टीम ने मारा छापा, 60 से अधिक अधिकारी पहुंचे

रांची/हजारीबाग, 11 सितंबर (एजेंसियां)। रांची के बड़गई अंचल जमीन घोटाला मामले में आज झारखंड एसीबी एक साथ 6 अलग-अलग जगहों पर छापेमारी कर रही है। इसमें रांची के अलावा हजारीबाग में दो जगह, गिरिडीह में दो जगह और चाईबासा में एक जगह पर एसीबी रेड कर रही है। एसीबी की टीम मंगलवार की देर रात ही एक्टिव हो गई थी। रांची एसीबी टीम के नेतृत्व में छापेमारी जारी है। पश्चिमी सिंहभूम जिले के नोवा मुंडी अंचल के सीओ मनोज कुमार के आवास और कार्यालय में एसीबी ने दबिश दी है। झारखंड पुलिस की एंटी करप्शन ब्यूरो की यह सबसे बड़ी कार्रवाई बताई जा रही है। सभी जगहों को मिला कर इस पूरी कार्रवाई में 60 से अधिक पदाधिकारी शामिल हैं। हजारीबाग सदर एसडीओ शैलेश कुमार के समाहरणालय स्थित कार्यालय और झील परिसर स्थित आवास पर एसीबी ने छापेमारी की है। हजारीबाग पुलिस को दफ्तर और उनके आवास में मुस्तैद किया गया है। जांच के दौरान सदर अनुमंडल पदाधिकारी शैलेश कुमार अपने आवास में हैं। इस दौरान किसी भी व्यक्ति को आवास में आने की इजाजत नहीं दी जा रही है और नहीं बाहर निकालने की। गिरिडीह शहर के शास्त्री नगर मोहल्ले में एसीबी की छापेमारी कर रही है। टीम जहां छापेमारी कर रही है वह हजारीबाग एसडीओ शैलेश कुमार का पैतृक आवास है। वहीं मार्बल कारोबारी रिंकू सिन्हा के घर पर भी एसीबी की टीम ने दबिश दी है। फिलहाल रिंकू सिन्हा के घर पर किसी भी बाहरी व्यक्ति को प्रवेश करने की इजाजत नहीं दी जा रही है। एसीबी की यह छापेमारी बड़गाई जमीन मामले को लेकर चल रही है।

शिवनाथ नदी का जल स्तर अचानक बढ़ा

कई गांव बाढ़ की चपेट में, कान्हा रिजार्ट से 4 और धमधा से 18 लोगों को रेस्क्यू कर एसडीआरएफ ने बचाया

दुर्ग, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दुर्ग संभाग में लगातार दो दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश से मोगरा जलाशय का जल स्तर काफी बढ़ गया था। इसके चलते मोगरा जलाशय सहित, खट्टोला, घुमरिया, सूखा नाला व अन्य जगहों पर 2 लाख 4 हजार 346 क्यूसेक पानी छोड़ा गया। इससे शिवनाथ नदी का जल स्तर अचानक बढ़ गया। इससे दुर्ग में कन्हा रिजार्ट और धमधा के पास सिल्ली गांव में 18 लोग बाढ़ में फंस गए। जिला सेनानी अग्निशमन अधिकारी नागेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि उन्हें बुधवार तड़के सूचना मिली थी कि दुर्ग जिले के शिवनाथ नदी से लगते कान्हा रिजॉर्ट में चार लोग फंस गए हैं। सूचना मिलते ही उन्होंने एसडीआरएफ को वहां रेस्क्यू के लिए भेजा। टीम नंदनी थाना अंतर्गत ग्राम मेडेसरा में स्थित कान्हा रिजॉर्ट पहुंची।

टीम ने देखा कि शिवनाथ नदी के किनारे में स्थित इस रिजार्ट में 4 लोगो के बाढ़ के बीच फंसे हैं। टीम तुरंत एक वोट में बैठकर फंसे हुए लोगों तक पहुंची। इसके बाद उन्हें लाइव जैकेट पहनाकर अपने साथ किनारे सुरक्षित जगह पर लाई। इसी तरह एसडीआरएफ की टीम को सूचना मिली की धमधा ब्लॉक के सिल्ली गांव में 18 लोग बाढ़ में फंस गए हैं। टीम तुरंत वहां पहुंची। इसके बाद शिवनाथ नदी के किनारे बसे इस गांव में फंसे सभी 18 लोगो को बाढ़ के बीच से बचाकर सुरक्षित जगह पहुंचाया। इसमें पुरुष, महिला और बच्चे सभी शामिल थे।

डिप्टी कमिश्नर बने शराब कोचिया

सप्ताहभर घूमकर की नकली शराब की डील, पकड़ी 60 पेटी 'गोवा', मोतीलाल साहू चला रहा था धंधा

रायपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। रायपुर में आबकारी विभाग ने बड़ी मात्रा में नकली शराब पकड़ी है। 300 लीटर ओपी (ओवर प्रूव्ड लिक्विड) भी बरामद किया है। इसका इस्तेमाल नकली शराब बनाने में होता था। इसके साथ आरोपियों मोतीलाल साहू और युवराज साहू को भी पकड़ा गया है। खास बात यह है कि आरोपियों तक पहुंचने के लिए एक्साइज डिपार्टमेंट के डिप्टी कमिश्नर विकास गोस्वामी खुद कोचिया बने। इसके लिए उन्होंने एक सप्ताह तक अवैध शराब का धंधा करने वाला बने और नकली शराब बेचने वालों को ट्रेस कर उन तक पहुंचे।

डिप्टी कमिश्नर विकास गोस्वामी ने बताया कि, हमें कई दिनों से नकली शराब के काम की जानकारी मिल रही थी। हमें इसे बनाने वालों को पकड़ना था। इसलिए ऑपरेशन प्लान किया गया। वे खुद कोचिया बने और नकली शराब बेचने वालों से संपर्क किया। अलग-अलग नंबरों से नकली शराब बनाने वालों से डील की बातचीत की। पकड़े गए आरोपी मोतीलाल साहू से डील होने के बाद उसके पास से 40 पेटी गोवा ब्रांड की नकली शराब जब्त की गई। बिना होलोग्राम वाली ये शराब कार से बरामद की गई। इसी तरह मिनी ट्रक से टीम ने 12 पेटी और लावारिस हालत में 8 पेटी नकली शराब बरामद की है। युवराज के पास से नकली शराब बनाने में इस्तेमाल होने वाली 300 लीटर स्पिरिट भी मिली है। इससे 1500 लीटर नकली शराब बनाई जा सकती थी। मुखबिरों से आबकारी विभाग के अफसरों को नकली शराब के ट्रांसपोर्ट की जानकारी मिली थी। आसपास के जिलों के गांवों में ये शराब बेचने की तैयारी थी।

झारखंड के 5 जिलों में बारिश का यलो अलर्ट

13 सितंबर को आठ जिलों में भारी बारिश की चेतावनी, अबतक 15% कम हुई बारिश

रांची, 11 सितंबर (एजेंसियां)। बंगाल की खाड़ी में उठे तूफान का असर झारखंड के अलग-अलग हिस्सों में दिख रहा है। मौसम विभाग ने आज भी बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया है।

मौसम विभाग ने आज गढ़वा, पलामू, लातेहार, गुमला और सिमडेगा में अच्छी बारिश के आसार बताए हैं। इसे लेकर यलो अलर्ट भी जारी किया गया है। वहीं लोगों से सावधानी बरतने की अपील की गई है।

मौसम विभाग की ओर से कल के बाद अगले दो दिनों तक अच्छी बारिश की बात कही गई है। इसको लेकर ऑरेंज अलर्ट भी जारी किया गया है। मौसम विभाग की तरफ से 13 सितंबर से 14 सितंबर को देवघर, दुमका, धनबाद, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहेबगंज में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। 14 सितंबर को मध्य झारखंड के 6 जिलों में भी भारी बारिश की आशंका जताई गई है। इसमें रांची, बोकारो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी और रामगढ़ जिले शामिल हैं।

मौसम केंद्र के मुताबिक, झारखंड में इस बार बारिश कम हुई है। अब तक सामान्य से 15 प्रतिशत कम बारिश हुई है। राज्य में अब तक 753.3 मिमी बारिश हुई है, जबकि सामान्य बारिश 882.3 मिमी होती है। धनबाद के बाद रांची में सामान्य से 1 प्रतिशत कम, सिमडेगा में सामान्य से 1 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई है।

भालुओं का आतंक

हमला कर दो लोगों को किया घायल अस्पताल में भर्ती, ग्रामीणों में फैली दहशत

गौरेला पेंड्रा मरवाही, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मरवाही वन मंडल में भालूओं के हमले थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। आए दिन ग्रामीण भालुओं के हमले के शिकार हो रहे हैं। दो अलग-अलग मामलों में भालुओं ने दो लोगों पर हमला कर घायल कर दिया। धरहर गांव में रहने वाली महिला पर हमला किया है तो दूसरे मामले में सेमरदर्री गांव के एक व्यक्ति पर हमला किया है। दोनो को इलाज के लिए मरवाही के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पहला मामला ग्राम धरहर का है। जहां पर रहने वाली दशमतिया बाई शौच के लिए घर से बाहर निकली हुई थी। तभी अचानक तीन भालूओं ने महिला पर हमला कर दिया। जिसके कारण महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। वहीं आसपास के लोग आवाज सुनकर मौके पर पहुंचे। जिसके बाद भालु महिला को छोड़ जंगल की ओर भाग गए। वहीं, दूसरा मामला भी मरवाही वन मंडल के मरवाही वन परिक्षेत्र का ही है। जहां पर ग्राम सेमरदर्री के मगुरूदा में भी बुजुर्ग ग्रामीण विष्णु मार्को, पर भी तीन भालूओं ने हमला कर दिया है। बुजुर्ग गुल्लीडाढ़ ग्राम पंचायत से होते हुए अपने घर कि ओर जा रहा था। उसी समय रास्ते में तीन भालुओं ने बुजुर्ग पर हमला कर दिया। उसके चिखने चिल्लाने पर ग्रामीणों द्वारा बुजुर्ग की जान बचाई गई। ग्रामीणों के द्वारा बताया जा रहा हैं कि घायल व्यक्ति के सिर और चेहरे को नोच-नोचकर भालुओं ने लहूलुहान कर दिया। आनन-फानन में ग्रामीणो की मदद से मरवाही के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिये भर्ती करवाया गया है। फिलहाल दोनो घायलों का इलाज मरवाही के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में जारी है और दोनों की हालत खतरे से बाहर है।

दिनदहाड़े 5 करोड़ रुपए के सोने की लूट

तीन बदमाशों ने ज्वेलर्स पर कट्टे से किया हमला, झारखंड की ओर भागे

बलरामपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर-रामानुजगंज जिले में 5 करोड़ रुपए के सोने की लूट हो गई। बुधवार को ज्वेलरी शॉप में दिनदहाड़े बदमाश घूसे और संचालक पर कट्टे की बट से हमला कर दिया। साथ ही गोली मारने की धमकी देकर 8 किलो सोना लूट लिया और झारखंड की ओर भाग निकले। जानकारी के मुताबिक, रामानुजगंज नगर पालिका चौक में राजेश ज्वेलर्स नाम से दुकान है। दोपहर 1.50 बजे बाइक में सवार होकर तीन युवक पहुंचे थे। दुकान में अंदर घुसकर उन्होंने कट्टा निकाल लिया और संचालक राजेश सोनी सहित कर्मचारियों को कब्जे में ले लिया। लुटेरों के भागने के बाद संचालक राजेश सोनी सहित कर्मचारियों ने शोर मचाया तो आसपास के लोग बड़ी संख्या में मौके पर पहुंच गए। सूचना पर रामानुजगंज पुलिस भी मौके पर पहुंची। लुटेरों की तलाश में पुलिस टीम झारखंड की ओर भी भेजे गए हैं। फिलहाल लुटेरों का कोई सुराग नहीं मिला है। घटना स्थल पर लोगों की भीड़ लग गई है। पुलिस सीसी टीवी फूटेज भी खंगाल रही है। दुकान के संचालक राजेश सोनी वार्ड रामानुजगंज के वार्ड क्रमांक 8 के पार्षद हैं। रामानुजगंज में उनकी सबसे बड़ी ज्वेलरी शॉप है। राजेश सोनी ने ज्वेलरी शॉप की ब्रांच बलरामपुर में भी खोली है। वे बलरामपुर ज्वेलरी शॉप संभालते हैं। वहीं रामानुजगंज के ज्वेलरी शॉप का कार्य उनकी बहन सीमा सोनी देखती हैं। रामानुजगंज के दुकान में स्टॉक का पूरा सोना रखा हुआ था। संचालक राजेश के अनुसार दुकान से लुटेरे करीब 8 किलो से अधिक सोना लूट ले गए हैं। आशंका है कि लुटेरों ने पहले ही दुकान की रेकी की थी। उन्होंने ऐसे समय को लूट के लिए तय किया था, जब दुकान में ग्राहकों की संख्या सबसे कम रहती है। बलरामपुर पुलिस दुकान सहित आसपास के सीसी कैमरों के फुटेल खंगाल रही है, ताकि लुटेरों के आने एवं भागने के रास्ते की जानकारी मिल सके। बलरामपुर एसपी राजेश अग्रवाल सहित वरिष्ठ अधिकारी भी रामानुजगंज पहुंच गए हैं।

राधिका खेड़ा ने भेजा नोटिस, भूपेश-बैज को चैलेंज

रायपुर में कहा– मां की कंपनी को सरकार ने पेमेंट किया, सबूत दें तो छोड़ दूंगी राजनीति

रायपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ कांग्रेस और भाजपा नेता राधिका खेड़ा में उनकी मां की कंपनी को लेकर आरोपों पर विवाद बढ़ता जा रहा है। राधिका ने प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज और प्रवक्ता वंदना राजपूत को लीगल नोटिस भेजा है। साथ ही बैज और पूर्व सीएम भूपेश बघेल को चैलेंज किया है। राधिका ने कहा, अगर भूपेश बघेल और बैज 48 घंटे में सबूत दें कि उनकी मां की कंपनी को सरकार ने पेमेंट किया तो वे राजनीति छोड़ देंगी।

राधिका ने यह भी कहा कि अगर चैलेंज पूरा नहीं कर सके तो यही काम बघेल और बैज को भी करना होगा। कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि, भूपेश शासन में उनकी मां की कंपनी ने सरकार के लिए कुछ विज्ञापन फिल्में बनाईं और लाभ कमाया। तब के कुछ पेंडिंग बिल थे। इस वजह से सरकार बदलने के बाद कांग्रेस नेताओं से उन्होंने विवाद किया और पार्टी छोड़ दी।

राधिका ने कहा कि मेरी मां फिल्ममेकर हैं। उन्होंने यहां राम वन गमन पथ पर डॉक्यूमेंट्री शूट करने के लिए सरकार की प्रोटेक्टेड साइट पर शूटिंग की परमिशन मांगी थी। कोई पैसा नहीं मांगा गया। मैं ये मांग करती हूं कि बैज और उनके नेता सार्वजनिक रूप से मेरी मां से माफी मांगें। राधिका ने सवाल किया कि, कांग्रेस ने उन पर निराधार आरोप सिर्फ इसलिए लगाए कि क्योंकि, मैंने मेरे साथ जो हुआ वो बात दुनिया के सामने लाई और पार्टी छोड़ दी। उन्होंने कहा कि, कांग्रेस मेरे चरित्र हनन के लिए झूठी अफवाहें फैला रही है।

राधिका ने कहा कि, मैं देख रही हूं कि कांग्रेस पदाधिकारी लगातार झूठ फैला रहे हैं कि मेरी मां का कोई बिल छत्तीसगढ़ सरकार में अटका है, जिसके कारण मैंने भाजपा का दामन थामा। मैं स्पष्ट करना चाहती हूं कि मेरी मां ने छत्तीसगढ़ में एक भी रुपया का सरकारी काम नहीं किया है। दरअसल, 9 सितंबर को राधिका खेड़ा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। इसमें कहा था कि, कांग्रेस घर की महिला को तो न्याय नहीं दिला सकती है, अब छत्तीसगढ़ की कानून व्यवस्था पर सवाल उठा रही है। राधिका ने भूपेश बघेल को महिला विरोधी बता दिया था।

465 नगर सैनिकों की होगी भर्ती

21 हजार अभ्यर्थियों ने किया आवेदन, 16 सितंबर से 1 अक्टूबर तक होगा फिजिकल टेस्ट

बिलासपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक दशक बाद नगर सैनिकों के 465 पदों पर भर्ती होगी। नगर सैनिकों के 200 पद और महिला छात्रावासों में महिला नगर सैनिकों के 265 पद शामिल हैं। इसमें भाग लेने के लिए संभाग के 21 हजार युवाओं ने आवेदन किया है। जिले के भरनी परसदा स्थित अग्निशमन और एसडीआरएफ मैदान पर 16 सितंबर से 1 अक्टूबर तक भर्ती की प्रकिया पूरी होगी। जिसमें युवाओं को फिजिकल टेस्ट देना होगा। जिसमें युवा पहुंच सकते हैं।

अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाएं के डीआईजी एसके ठाकुर ने बताया कि, प्रतिदिन करीब 1500 उम्मीदवारों की दक्षता परीक्षा मैदान में होगी। दक्षता परीक्षा 100 अंकों की होगी। पुरुष उम्मीदवारों के लिए 100 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, लम्बी कूद और ऊंची कूद होगी। महिला उम्मीदवारों के लिए 100 मीटर दौड़ को छोड़कर शेष तीनों प्रतियोगिताएं होंगी।

नगर सैनिकों के 200 पदों में बिलासपुर जिले के लिए 75 पद, मुंगेली के लिए 25, जीपीएम 25, रायगढ़ 25, कोरबा 25 और जांजगीर 25 शामिल हैं। सभी उम्मीदवारों को कॉल लेटर तिथिवार जारी कर दिया गया है। उन्हें दक्षता परीक्षण के दौरान जाति, निवास प्रमाण पत्र, रोजगार कार्यालय पंजीयन, एनसीसी सी सर्टिफिकेट, हेवी वाहन ड्राइविंग लाइसेंस, संभाग स्तरीय या उच्च स्तर के खेलकूद प्रतियोगिता प्रमाण पत्र साथ लेकर पहुंचना होगा। सोमवार को कलेक्टर-एसपी ने अधिकारियों के साथ मैदान का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को जिम्मेदारी भी सौंपी। भर्ती मैदान का समतलीकरण, मैदान की घेराबंदी, बैरिकेडिंग, विभिन्न इवेंट के लिए जरूरी व्यवस्था, मेडिकल टीम, पेयजल, कूड़ादान चलित शौचालय, भर्ती मैदान में एवं उसके आस-पास कानून व्यवस्था और यातायात के लिए आवश्यक व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर डीएफओ सत्यदेव शर्मा, जिला पंचायत सीईओ रामप्रसाद चौहान, एसडीएम ज्योति पटेल, जिला कमाण्डेन्ट दीपांकुर नाथ तखतपुर के सीईओ और सहायक कलेक्टर तन्मय खन्ना सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पांच दिन पहले जेल भेजे गए युवक की मौत

पलामू, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पलामू में चार दिन पहले अपहरण कांड में जेल में भेजे गए आरोपी युवक की मौत बुधवार की सुबह हो गई। कैदी कुंदन कुमार पांडेय (26) का घर शहर थानाक्षेत्र के बारालोटा में जीएलए कॉलेज के पास है।

कुंदन को जेल से मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल लेकर पंहुचे पुलिसकर्मियों के मुताबिक सुबह साढ़े पांच बजे कुंदन को हॉस्पिटल लाया गया। वह नवल पांडेय का इकलौता पुत्र था। कुंदन के मौत की जानकारी मिलते ही पूरा परिवार हॉस्पिटल पंहुच गया।

जेल में हुई कुंदन की मौत

परिवार का आरोप है कि जेल में ही कुंदन की मौत हो गई है। इसके बाद हॉस्पिटल लाया गया। कुंदन जेल जाने के पहले बिलकुल स्वस्थ था। जेल में आखिर क्या हुआ कि उसकी तबियत बिगड़ी और मर गया। परिवार ने जेल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

जेल प्रबंधन के अनुसार कुंदन पहले से बीमार नहीं था। अचानक तबियत बिगड़ने से उसकी मौत हुई है। सेंट्रल जेल के जेलर प्रमोद कुमार का कहना है कि कंपाउंडर ने सुबह बताया कि कुंदन की तबियत खराब है। तत्काल उसे एमएमसीएच ईलाज के लिए भेज दिया गया। कुंदन का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड करेगा। पूरे प्रक्रिया की वीडियोग्राफी होगी। घटना की जानकारी मिलने पर पूर्व मंत्री केएन त्रिपाठी हॉस्पिटल पहुंचे। उन्होंने कुंदन को हॉस्पिटल लाने वाले पुलिसकर्मियों से घटना की जानकारी ली। मौके पर जेल के कंपाउंडर को खोजा गया तो वह वहां से भाग निकला।

छत्तीसगढ़ लिकर स्कैम, टुटेजा की जमानत याचिका खारिज

रायपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ शराब घोटाला केस में एसीबी-ईओडब्ल्यू कोर्ट ने रिटायर्ड आईएएस अनिल टुटेजा की जमानत याचिका खारिज कर दी है। मामले की सुनवाई विशेष न्यायाधीश निधि शर्मा तिवारी की कोर्ट में हुई। अनिल टुटेजा करीब 5 महीने से जेल में बंद हैं। सुनवाई के दौरान ईओडब्ल्यू की ओर से वकील सौरभ कुमार पांडेय कोर्ट में कहा कि, बेल मिलने के बाद टुटेजा विदेश भाग सकते हैं। वहीं रिटायर्ड आईएएस टुटेजा की ओर से याचिका में उनके स्वास्थ्य को देखते हुए जमानत की मांग की गई। टुटेजा ने कोर्ट में बताया कि, ईओडब्ल्यू ने प्रताड़ित करने के लिए 14 दिन की रिमांड पर लिया। अब तक जांच के दौरान उनके पास से शराब की बोतल और नकली होलोग्राम तक बरामद नहीं हुआ है। जो आरोप लगाए गए, वे भी साबित नहीं हो पाए हैं।

कोर्ट में टुटेजा के वकील ने कहा कि, नोएडा में शराब घोटाले से जुड़े नकली होलोग्राम केस में दर्ज एफआईआर को स्थगित कर दिया गया है। छत्तीसगढ़ शराब घोटाले से जुड़े नकली होलोग्राम केस में यूपी एसटीएफ की कार्रवाई पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। इसलिए उन्हें जमानत दी जाए। वहीं ईओडब्ल्यू के वकील पांडेय ने जमानत का विरोध किया। उन्होंने कोर्ट को बताया कि, लिकर स्कैम में सिंडिकेट में अनिल टुटेजा का रोल महत्वपूर्ण है। अगर उन्हें जमानत दी जाती है, तो वे गवाहों और सबूतों को प्रभावित कर सकते हैं। बेल मिलने के बाद विदेश भाग सकते हैं। शराब घोटाले केस में 18 सितंबर को रायपुर की स्पेशल कोर्ट में अगली सुनवाई होगी। इस केस में रिटायर्ड आईएएस अनिल टुटेजा, आबकारी विभाग के अधिकारी रहे एपी त्रिपाठी, कारोबारी अनवर ढेबर, अरविंद सिंह और त्रिलोक सिंह ढिल्लन रायपुर की सेंट्रल जेल में बंद है। लिकर स्कैम मामले में ईड जांच कर रही है। ईडी ने एसीबी में एफआईआर दर्ज कराई है। दर्ज एफआईआर में 2 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा के घोटाले की बात कही गई है। ईडी ने अपनी जांच में पाया कि तत्कालीन भूपेश सरकार के कार्यकाल में आईएएस अफसर अनिल टुटेजा, आबकारी विभाग के एमडी एपी त्रिपाठी और कारोबारी अनवर ढेबर के अवैध सिंडिकेट के जरिए घोटाले को अंजाम दिया गया था। ईडी की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर की जांच एसीबी कर रही है। एसीबी से मिली जानकारी के अनुसार, साल 2019 से 2022 तक सरकारी शराब दुकानों से अवैध शराब डुप्लिकेट होलोग्राम लगाकर बेची गई थी, जिससे शासन को करोड़ों के राजस्व का नुकसान हुआ है।

यूक्रेन का रूस पर सबसे घातक ड्रोन हमला

मॉस्को सहित 8 प्रांतों में 144 ड्रोन दागे, 3 एयरपोर्ट के ऑपरेशन और 50 उड़ानों पर असर

कीव, 11 सितंबर (एजेंसियां)। यूक्रेन ने मंगलवार को रूस पर अब तक का सबसे घातक ड्रोन हमला किया है। यूक्रेन ने रूस की राजधानी मॉस्को सहित 8 प्रांतों को 144 ड्रोन से निशाना बनाया है। हमले में कई रिहायशी इमारतों को नुकसान पहुंचा है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक रूस की राजधानी मॉस्को के आस-पास करीब 20 ड्रोन मार गिराए गए। हमले में दर्जनों घर नष्ट हो गए हैं। इस हमले के चलते मॉस्को और उसके आसपास के एयरपोर्ट्स से 50 से ज्यादा उड़ानों को डायवर्ट करना पड़ा है। रूसी अधिकारियों के मुताबिक मॉस्को के 4 में से 3 एयरपोर्ट्स को 6 घंटे से ज्यादा समय तक बंद रहना पड़ा। हमले में एक 46 वर्षीय महिला की मौत भी हो गई है। रूस ने अन्य 8 प्रांतों में 124 ड्रोन भी मार गिराए हैं। वहीं इस हमले का पलटवार करते हुए रूस ने भी यूक्रेन पर 46 ड्रोन से हमला किया है। हालांकि यूक्रेन के मुताबिक उसने इनमें से 38 ड्रोन को मार गिराया। इससे पहले

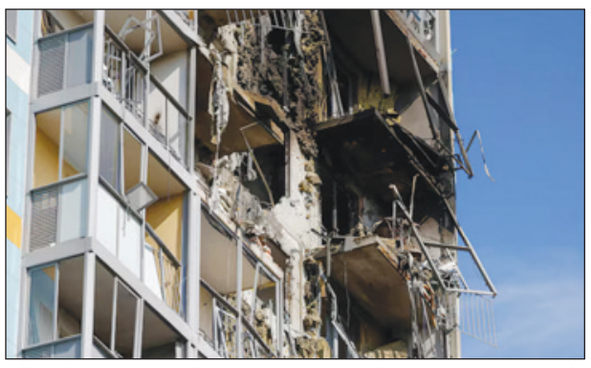

यूक्रेन ने 31 अगस्त को रूस पर 150 से ज्यादा ड्रोन से हमला किया था। ढाई साल से जारी रूस-यूक्रेन जंग में पहली बार यूक्रेन ने रूस के खिलाफ इतनी ज्यादा संख्या में ड्रोन से हमला किया था । यूक्रेन ने तब भी राजधानी मॉस्को को निशाना बनया था। मॉस्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन के मुताबिक शहर पर 11 ड्रोन से हमला किया गया था। इन हमलों में एक ऑयल रिफाइनरी और एक टेक्निकल रूम को निशाना बनाया गया। ऑयल रिफाइनरी पर हुए हमले के बाद उसमें विस्फोट हो गया। इसके बाद गहरा धुआं उठता नजर आया। रूसी अधिकारियों के मुताबिक यूक्रेन ने 15 प्रांतों में 158 ड्रोन से हमला किया था। उन्होंने कहा कि रूसी एयर डिफेंस ने लगभग सभी ड्रोन को इंटरसेप्ट कर मार गिराया था। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने किसी भी तरह के खतरे से निपटने के लिए तैयार रहने को कहा है। पुतिन ने कहा कि हमारी सेनाओं की देश की सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए। पुतिन ओशन-कमांड 2024 एक्सरसाइज में शामिल सैनिकों को संबोधित कर रहे थे। ओशन-2024 में रूस के 400 से अधिक युद्धपोत और पनडुब्बियां, 120 से ज्यादा एयरक्राफ्ट और हेलिकॉप्टर शामिल हो रहे हैं। इसके अलावा इसमें 90 हजार से अधिक सैनिक हिस्सा ले रहे हैं।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की अब रूस में और अंदर घुसकर हमले करना चाहते हैं। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, इसमें मदद के लिए वे अमेरिका पर दबाव भी बना रहे हैं। जेलेंस्की ने 31 अगस्त को एक वीडियो जारी कर बताया कि 30 अगस्त को रूस ने खारकीव पर एयरस्ट्राइक की, जिसमें 6 यूक्रेनियों की मौत हो गई। वहीं 97 लोग घायल हुए। जेलेंस्की ने कहा कि इन हमलों को तभी रोका जा सकता है, जब यूक्रेन रूस की एयरफील्ड्स और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाएगा।

जल्द भारत आएंगे मालदीव के राष्ट्रपति

सरकार से दो मंत्रियों के इस्तीफे के बीच मोइज्जू पर बड़ा अपडेट

माले, 11 सितंबर (एजेंसियां)। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू जल्द ही भारत की आधिकारिक यात्रा करेंगे। उनकी प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। राष्ट्रपति कार्यालय की मुख्य प्रवक्ता हीना वलीद ने मुइज्जू की यात्रा का एलान किया। यह एलान ऐसे दिन किया गया है, जब जब जनवरी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों के लिए निलंबित किए गए तीन में से दो मंत्रियों ने सरकार से इस्तीफा दे दिया। इस्तीफा देने वाले मंत्रियों में मरियम शिउना और मालशा शरीफ शामिल हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रवक्ता ने कहा कि यात्रा की तारीख अभी तय नहीं हुई है। दोनों देश ऐसी तारीख पर चर्चा कर रहे हैं, जो पीएम मोदी और मोइज्जू के लिए सुविधाजनक हो। इससे पहले चीन समर्थक रुख के लिए जाने जाने वाले मुइज्जू ने प्रधानमंत्री मोदी के शपथग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए 9 जून को भारत की यात्रा की थी।

आईएमएफ ने अटकाया पैकेज तो अटकी पाकिस्तान की सांस

जिन्ना के देश पर गहराया दिवालिया होने का संकट

इस्लामाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति बीते कुछ वर्षों में लगातार खराब हुई है। ऐसे में आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से बेलआउट मांगा है। काफी समय से पाकिस्तान में आईएमएफ से मिलने वाली मदद की चर्चा है लेकिन लगातार होती देरी से ऐसी अटकलें लगाई जाने लगी हैं कि उसको कोई सहायता नहीं मिलने जा रही है। पाकिस्तान के डिप्टी पीएम इशाक डार ने संकेत दिए हैं कि आईएमएफ इस्लामाबाद को बेलआउट पैकेज देने के लिए बहुत उत्सुक नहीं है और इसमें देर हो सकती है। माना जा रहा है कि आईएमएफ पाकिस्तान को बेलआउट देने के अपने फैसले पर पुनर्विचार कर रहा है और फिलहाल डील अधर में है। ऐसे में अगर आईएमएफ आर्थिक पैकेज में देरी करता है तो इस्लामाबाद के लिए मुश्किल हो सकती है और

देश दिवालिया होने जैसी स्थिति का भी सामना कर सकता है। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, आईएमएफ की ओर से पाकिस्तान को सात बिलियन डॉलर के सहायता पैकेज पर सहमति जताई गई थी। आईएमएफ ने कहा था कि उसके और पाकिस्तानी अधिकारियों के बीच 7 बिलियन डॉलर के 37 महीने के विस्तारित फंड सुविधा व्यवस्था (ईएफएफ) पर एक स्टाफ-स्तरीय समझौता हुआ है। यह घोषणा आईएमएफ के पाकिस्तान में मिशन प्रमुख नाथन पोर्टर के नेतृत्व में आईएमएफ टीम द्वारा मई, 2024 में इस्लामाबाद दौरे के दौरान पाकिस्तानी पक्ष के साथ चर्चा के बाद की गई थी। यह सौदा पाकिस्तान का आईएमएफ से 24वां बेलआउट था, जो दुनिया के किसी भी देश के लिए सबसे अधिक है। इस्लामाबाद आईएमएफ का चौथा सबसे बड़ा कर्जदार भी है। पाकिस्तान को सात बिलियन डॉलर के सौदे को आईएमएफ के कार्यकारी बोर्ड से इजाजत नहीं मिली है। आईएमएफ के कार्यकारी बोर्ड से आधिकारिक मंजूरी के बिना सौदा आगे नहीं बढ़ सकता है। इस पर अगस्त में बात होनी थी लेकिन पहले इसे 9 सितंबर और अब 18 सितंबर तक टाल दिया गया है। इस देरी ने पाकिस्तान की सरकार की परेशान को बढ़ि दिया है। डॉन की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान के डिप्टी प्रधानमंत्री इशाक डार ने खुलकर आईएमएफ की आलोचना करते हुए उस पर जानबूझकर देरी करने का आरोप लगाया है।

दो पति, एक प्रेमी और तीनों की मौत

कौन है सोनू पंजाबन, जिसे कोर्ट ने कहा– तुम औरत कहलाने लायक भी नहीं

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। तारीख- 10 सितंबर 2024, वक्त दोपहर के लगभग तीन बजे और जगह दिल्ली का हाईकोर्ट परिसर। लोगों के बीच एक अलग ही हलचल थी। वकीलों में भी सुगबुगाहट हो रही थी। खचाखच भरी अदालत में सुनवाई होनी थी एक ऐसे मामले में राहत देने की याचिका पर, जिसमें दोषी को 24 साल जेल की सजा सुनाई जा चुकी थी। अचानक हलचल बढ़ती है और कोर्ट के अंदर से खबर आती है कि अदालत ने किसी तरह की राहत नहीं दी है। दोषी को सलाखों के पीछे ही रहना होगा और काटनी होगी 24 साल की लंबी सजा। हलचल के बीच पता चलता है कि इस दोषी का नाम है सोनू पंजाबन। सोनू पंजाबन, जिसका असली नाम गीता अरोड़ा है। वही सोनू पंजाबन, जो कभी लेडी डॉन के नाम से कुख्यात रही

और जिसने दिल्ली-एनसीआर के भीतर देह व्यापार का सबसे बड़ा रैकेट चलाया। 22 जुलाई 2020 को कोर्ट ने सोनू पंजाबन को एक नाबालिग लड़की को जबरन देह व्यापार में धकेलने पर पीओसीएसओ एक्ट के तहत दोषी माना और उसे 24 साल की सजा सुनाई। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि सोनू पंजाबन को सभ्य समाज में रहने का कोई अधिकार नहीं है। साथ ही कोर्ट ने कहा कि उसने महिला कहलाने की सारी हदें भी पार कर दी हैं। सोनू पंजाबन के ऊपर कई केस दर्ज हैं, लेकिन ये पहला मामला था, जिसमें उसे दोषी मानते हुए सजा सुनाई गई। आखिर कौन है ये सोनू पंजाबन और क्या है इसकी क्राइम कुंडली? सोनू पंजाबन देह व्यापार के धंधे में कैसे उतरी? गीता अरोड़ा से बदलकर कब उसका नाम सोनू पंजाबन हो गया? जुर्म की दुनिया में उसने कब अपने कदम रखे? इन सवालों के जवाब जानने के लिए जब उसकी हिस्ट्री खंगाली गई तो पता चला कि गैंगस्टर्स के साथ सोनू का पुराना और लंबा कनेक्शन रहा है। साल 2003 में उसकी जिंदगी में विजय सिंह नाम का गैंगस्टर आया और उसके साथ शादी करते ही सोनू ने जुर्म की दुनिया में एंट्री ले ली। हालांकि, उसी साल यूपी एसटीएफ ने एक मुठभेड़ में विजय सिंह को ढेर कर दिया।

विजय सिंह की मौत के बाद कुछ वक्त बीता, तो सोनू की जिंदगी में दीपक नाम के एक दूसरे क्रिमिनल की एंट्री हुई। दीपक का नाम जुर्म की कई वारदातों में शामिल था और पुलिस उसके पीछे थी। दोनों के बीच पहले बातें शुरू हुईं और धीरे-धीरे बातचीत का ये सिलसिला अफेयर में बदल गया। दीपक के साथ सोनू के रिलेशन को अभी कुछ ही साल बीते थे कि असम में हुई एक मुठभेड़ में पुलिस ने उसे मार गिराया। यहां से सोनू का अफेयर दीपक के भाई और गैंगस्टर हेमंत सोनू के साथ शुरू हो गया। कुछ वक्त बाद दोनों ने शादी कर ली और साथ-साथ रहने लगे। हालांकि, हेमंत के साथ भी सोनू पंजाब की जिंदगी ज्यादा दिनों तक नहीं चली। डबल मर्डर के एक मामले में, अप्रैल 2006 में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के साथ दिल्ली-गुरुग्राम बॉर्डर पर हुई मुठभेड़ में हेमंत मारा गया। हेमंत की मौत के बाद ही गीता अरोड़ा ने अपने पति के सरनेम 'सोनू' के साथ अपना नाम बदलकर सोनू पंजाबन रख लिया। अब सोनू पंजाबन देह व्यापार के धंधे में पूरी तरह उतर चुकी थी। साल 2007 में सोनू को पहली बार देह व्यापार के मामले में गिरफ्तार किया गया। कुछ समय बाद उसने कोर्ट से जमानत ले ली, लेकिन अगले ही साल 2008 में सोनू को फिर से इसी मामले में गिरफ्तार कर लिया गया। सोनू पंजाबन की मुश्किलें उस वक्त बढ़ीं, जब 2011 में उसके ऊपर मकोका लगाया गया।

बताया जाता है कि सोनू पंजाबन को लग्जरी लाइफ पसंद थी और इसी वजह से उसने जुर्म की राह पर चलना शुरू किया। पहले वो खुद देह व्यापार के धंधे में उतरी और इसके बाद उसने दूसरी लड़कियों को इस दलदल में खींचना शुरू किया। उसके निशाने पर होती थीं वो लड़कियां, जो फिल्मों और मॉडलिंग की दुनिया में जाने की चाहत लिए अपना घर-परिवार छोड़ आती थीं। इन लड़कियों को अपने धंधे में शामिल कर, सोनू दूसरे राज्यों में भी इनकी सप्लाई करती थी। अपने ग्रुप में उसने कुछ ऐसे लोगों को भी भर्ती किया, जिनका काम इन लड़कियों का बाहर ले जाना और सुरक्षित वापस लाना था। उसके ग्राहकों में कई हाई-प्रोफाइल लोग शामिल थे। इस बीच वो मामला आया, जिसके लिए सोनू पंजाबन को 24 साल की सजा सुनाई गई। दरअसल, संदीप बेदवाल नाम के आदमी ने एक नाबालिग लड़की को अगवा किया और उसे सोनू पंजाबन को बेच दिया। सोनू ने उसे खरीदने के बाद कई दिनों तक बंधक बनाकर रखा और बाद में उससे वेश्यावृत्ति कराई। नाबालिग लड़की विरोध ना कर सके, इसके लिए सोनू उसे नशीली दवाइयां देती थी। तीन-चार महीने तक उसे अपने पास रखने और वेश्यावृत्ति कराने के बाद सोनू ने नाबालिग को लखनऊ के अपने साथी लाला को बेच दिया। इस मामले में सोनू की गिरफ्तारी हुई और उसके ऊपर मुकदमा चला।

कोर्ट ने कहा, तुम्हें महिला कहलाने का भी हक नहीं

22 जुलाई 2020 को सोनू पंजाबन को सजा सुनाते हुए कोर्ट ने कहा कि उसने ना केवल वेश्यावृत्ति के लिए पीड़िता को खरीदा, बल्कि उसे अपनी मांगों के आगे झुकने के लिए मजबूर भी किया। सोनू ने एक नाबालिग लड़की के साथ क्रूरता की हदें पार कीं। उसने पीड़िता को जबरन नशीली दवाइयां दीं, ताकि वह किसी ग्राहक का विरोध ना कर सके। कोर्ट ने कहा कि एक महिला की मर्यादा उसके लिए सबसे बड़ी चीज होती है।

शेख हसीना के जाते ही बांग्लादेश आ रहे अमेरिका के 'बदनाम' राजनयिक

वॉशिंगटन, 11 सितंबर (एजेंसियां)। अमेरिका के वरिष्ठ राजनयिक डोनाल्ड लू इस हफ्ते भारत और बांग्लादेश का दौरा करने वाले हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि डोनाल्ड लू की इस यात्रा का मकसद अमेरिकी साझेदारों के आर्थिक विकास का समर्थन करने और पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता की पुष्टि करना है। डोनाल्ड लू अमेरिकी विदेश विभाग में दक्षिण और मध्य एशिया के लिए सहायक विदेश मंत्री के पद पर कार्यरत हैं, लेकिन उनके ऊपर कई देशों में सत्ता परिवर्तन करवाने के आरोप हैं। डोनाल्ड लू सबसे पहले नई दिल्ली जाएंगे, जहां वह अमेरिका-भारत व्यापार परिषद द्वारा आयोजित 'इंडिया आइडियाज' शिखर सम्मेलन में विकास, सुरक्षा और महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए अमेरिका और भारत के बीच सहयोग पर प्रकाश डालेंगे। लू 10 सितंबर से 16 सितंबर तक यात्रा पर रहेंगे और इस दौरान वह इंडो पैसिफिक सुरक्षा मामलों के लिए अमेरिकी प्रधान उप सहायक रक्षा मंत्री जेडीडिया पी रॉयल और भारत के विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय के समकक्षों के साथ आठवीं अमेरिका-भारत 'टू प्लस टू' अंतर-सत्रीय वार्ता की सह-अध्यक्षता भी करेंगे। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि इस वार्ता के दौरान रक्षा क्षेत्र में सहयोग सहित अमेरिका-भारत द्विपक्षीय साझेदारी बढ़ाने के अवसरों की पहचान की जाएगी तथा हिंद-प्रशांत और उससे परे अमेरिका-भारत सहयोग का विस्तार किया जाएगा। लू ढाका में बांग्लादेशी अंतरिम सरकार के साथ बैठकों के लिए एक अंतर-एजेंसी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगे।

तालिबान और पाकिस्तानी सेना में छठें दिन भी गरजी तोपें

डूरंड लाइन पर क्यों बन गए हैं जंग जैसे हालात

इस्लामाबाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान की सेना और अफगान बॉर्डर गार्ड्स के बीच जारी लड़ाई छठें दिन में प्रवेश कर गई है। नई सुरक्षा चौकियों के निर्माण की वजह से शुरू हुए इस संघर्ष में दोनों देशों के बलों के बीच लगातार गोलीबारी हुई है। अफगानिस्तान के खोस्त जिले में जजई मैदान के पास डूरंड रेखा पर दोनों देशों के बल आमने-सामने हैं। जजई मैदान के निवासी लगातार संघर्ष को समाप्त करने की अपील कर रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि रुक-रुक कर हो रही गोलीबारी की आवाजें इलाके में लोगों के अंदर दहशत पैदा कर रही हैं। सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि जिस तरह से दोनों देशों के बल सीधे तौर पर संघर्ष में आए हैं, उससे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों पर खराब असर हो सकता है।

टोलो न्यूज के मुताबिक, जजई मैदान, खोस्त के रहने वाले इनायतुल्ला ने कहा कि दोनों पक्षों से हमारा अनुरोध राजनयिक माध्यमों और अंतरराष्ट्रीय सिद्धांतों के जरिए सीमा मुद्दों को हल करने का है। इसी इलाके में रहने वाले हेलमंद खान ने बताया है कि जब लड़ाई शुरू हुई तो हमने सोचा कि यह कोई छिटपुट झड़प है लेकिन होगी लेकिन हमें अंदाजा नहीं था कि ये इतनी लंबी हो जाएगी। इस गोलीबारी की वजह से सीमा पर रहने वाले लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं।

अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान और पाकिस्तान की सरकार के बीच रिश्ते बीते कुछ समय से अच्छे नहीं रहे हैं। ऐसे में ये नया संघर्ष दोनों देशों के रिश्तों को और ज्यादा खराब कर सकता है। सैन्य विश्लेषक समर सादात ने टोलोन्यूज को बात करते हुए कहा कि ताजा तनाव क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा के लिए खतरा है। इन झड़पों के पीछे क्षेत्रीय खुफिया एजेंसियां हैं। पाकिस्तान चाहता है कि डूरंड लाइन पर बाड़ लगाने और सुविधाओं के निर्माण के बाद इसे आधिकारिक तौर पर मान्यता दी जाए। अंतरराष्ट्रीय संबंध विश्लेषक नजीबुर्रहमान शामल के मुताबिक, 'इस स्थिति के जारी रहने से काबुल और इस्लामाबाद के बीच पहले से ही तनावपूर्ण संबंधों को और नुकसान हो सकता है। संघर्ष बढ़ने की स्थिति में जानमाल के भी बड़े नुकसान का अंदेशा है।

इस ताजा संघर्ष की वजह अफगानिस्तान के सुरक्षा बलों की ओर से एक सुरक्षा चौकी के निर्माण की कोशिश है। बीते बुधवार को अफगानी बल विवादित डूरंड रेखा के पास खोस्त के जजई मैदान में बॉर्डर के पास एक सुरक्षा चौकी का निर्माण कर रहे थे। पाकिस्तानी सीमा रक्षकों ने उनको रोका तो झड़प शुरू हो हुईं।

जर्मनी के विदेश मामलों की समिति के चेयरमैन से मिले जयशंकर

द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की

बर्लिन, 11 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर जर्मनी के तीन दिवसीयदौरे पर हैं। उन्होंने जर्मन सांसद की विदेश मामलों की समिति के चेयरमैन माइकल रोथ से मुलाकात की। दोनों के बीच मौजूदा वैश्विक चुनौतियों और नए द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर बात हुई। जयशंकर सऊदी अरब से जर्मनी पहुंचे। जर्मन सांसद से बातचीत को लेकर जयशंकर ने सोशल मीडिया पर जानकारी दी। केंद्रीय विदेश मंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, माइकल रोथ से मिलकर खुशी हुई। हमने भारत-जर्मनी के बीच मौजूदा वैश्विक चुनौतियों और नए द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर बात की। उन्होंने मंगलवार को बर्लिन में आयोजित म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में विदेशी मामलों और सुरक्षा विशेषज्ञों के साथ बातचीत भी की।

भारतवंशी कमला हैरिस जीतीं अमेरिकी प्रेसिडेंशियल डिबेट

5 सर्वे में उन्हें बेहतर माना, ट्रम्प ने पर्सनल अटैक किए, वे मुस्कुराकर जवाब देती रहीं

वाशिंगटन, 11 सितंबर (एजेंसियां)। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प और भारतवंशी कमला हैरिस के बीच बुधवार (11 सितंबर) को प्रेसिडेंशियल डिबेट हुई। दोनों ने 90 मिनट बहस की। डिबेट शुरू होने से पहले कमला ट्रम्प के पोडियम तक पहुंचीं और उनसे हाथ मिलाया। डिबेट के दौरान ट्रम्प ने कहा कि कमला राष्ट्रपति बनीं तो 2 साल में इजराइल का मिट जाएगा। इस पर कमला ने कहा कि अगर आप राष्ट्रपति होते तो पुतिन कीव में बैठे होते और लंच में आपको खा रहे होते। डिबेट में कमला 37 मिनट 36 सेकेंड जबकि ट्रम्प 42 मिनट 52 सेकेंड तक बोले। डिबेट खत्म होने के बाद दोनों बिना हाथ मिलाए लौट गए। अमेरिका के 4 मीडिया हाउस (न्यूयॉर्क टाइम्स, सीएनएन, वॉशिंगटन पोस्ट) और बीबीसी के किए सर्वे में कमला को विजेता माना है। ट्रम्प और कमला के बीच इस चुनाव में यह पहली और आखिरी डिबेट थी। कमला ने पहली बार राष्ट्रपति चुनाव की बहस में हिस्सा लिया, जबकि ट्रम्प 2016 से 24 तक 6 बार डिबेट में हिस्सा ले चुके हैं। इस चुनाव में 27 जून को पहली प्रेसिडेंशियल डिबेट ट्रम्प और बाइडेन के बीच हुई थी। बाइडेन हार गए थे, जिसके बाद उन्होंने राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी छोड़ दी थी। इसके बाद डेमोक्रेटिक पार्टी ने कमला हैरिस को उम्मीदवार बनाया था।

भारतीय मूल के लेक्चरर को मिला सिंगापुर साहित्य सम्मान

'नाइन यार्ड साड़ी' को मिला पुरस्कार

सिंगापुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय मूल के लेक्चरर ने अपनी अंग्रेजी फिक्शन के लिए सिंगापुर साहित्य पुरस्कार जीता। नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के लेक्चरर प्रशांति राम को नाइन यार्ड साड़ी के लिए यह पुरस्कार दिया गया। उनकी यह कहानी सिंगापुर, सिडनी, न्यूयॉर्क और कनेक्टिकट में फैले एक तमिल ब्राह्मण परिवार की पीढ़ियों के बारे में है। पुरस्कार जीतने के बाद प्रशांति राम ने कहा कि वह आश्चर्यचकित हैं। लेक्चरर प्रशांति राम ने कहा, मैं आश्चर्यचकित हूं। मैं बहुत आभारी हूं कि जजों ने 'नाइन यार्ड साड़ी' में योग्यता देखी। मैंने यह यह कहानी अपने दिवंगत पिता की देखभाल करने के दौरान लिखी थी। उन्होंने आगे कहा, मुझे उम्मीद है कि अब ज्यादा ज्यादा लेखक लघु कथा के साथ नए-नए प्रयोग करेंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि इस प्रारूप के जरिए एक ही रचना में इतने सारे परिप्रेक्ष्यों और संदर्भों में गोता लगाने का मौका मिलता है। यह बहुत खुशी की बात है। मंगलवार को विक्टोरिया थिएटर में एक समारोह में कवि सिरिल वोंग के नेतृत्व में तीन सदस्यीय पैनल ने बताया कि प्रशांति राम की यह कहानी कुशल, आश्वस्त, कभी-कभी हास्यपूर्ण और प्रभावित करने वाला था। इंग्लिश क्रिएटिव नॉन फिक्शनका पुरस्कार भारतीय मूल की कलाकार शुबिगी राव को मिला। उन्हें यह पुरस्कार उनकी 'पल्प III: एन इंटिमेट इन्वेंटरी ऑफ द बेनिश्ड बुक' (2022) के लिए दिया गया।

ब्राजील-भारत का नजरिया अच्छा

जेलेंस्की गंभीर नहीं, युद्धविराम और ब्लिंकन-लैमी के दौरे पर लावरोव

रियाद, 11 सितंबर (एजेंसियां)। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि वे यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की की बातों और युद्धविराम को लेकर उनके फॉर्मूले को गंभीरता से नहीं लेते। उन्होंने कहा कि रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध की समाप्ति को लेकर ब्राजील और भारत का नजरिया सराहनीय है। लावरोव ने कहा कि उन्होंने जेलेंस्की के शांति प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार नहीं किया है। रूसी विदेश मंत्री ने यूक्रेन की नीयत पर भी गंभीर सवालिया निशान लगाए। उन्होंने यह भी कहा कि जेलेंस्की का खुद के 'शांति सूत्र' पर अड़े रहना दिखाता है कि वे युद्धविराम को लेकर गंभीर नहीं हैं। लावरोव ने कहा, ऐसा लगता है कि जेलेंस्की ईमानदारी से समझौता नहीं करना

चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'जेलेंस्की सूत्र' के इर्द-गिर्द तैरते कई विचार ऐसे शब्दों से शुरू होते हैं, जिसमें सैन्य अभियानों को समाप्त करने की बात करते हैं। उनकी बातों में अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करने की अपील भी नजर आती है। बकौल लावरोव, अंतरराष्ट्रीय कानून केवल उन बातों से संबंधित नहीं हैं, जिनके बारे में जेलेंस्की बातें कर रहे हैं। तमाम अंतरराष्ट्रीय कवायदों के बीच अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और ब्रिटिश विदेश मंत्री डेविड लैमी भी यूक्रेन की राजधानी कीव पहुंचे हैं। ब्लिंकन और लैमी के 11 सितंबर को कीव पहुंचने से पहले यूक्रेन पश्चिमी देशों पर रूस के खिलाफ लंबी दूरी की मिसाइलों का इस्तेमाल करने की अनुमति देने का दबाव बना रहा है। ब्लिंकन का दौरा इसलिए भी अहम है क्योंकि नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से पहले डेमोक्रेट प्रत्याशी कमला हैरिस और पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच ढाई साल से अधिक समय से जारी रूस-यूक्रेन युद्ध पर बहस हो चुकी है। रूस और यूक्रेन के संघर्ष विराम की कवायदों के बीच लावरोव का यह बयान रियाद में हुई रणनीतिक वार्ता के बाद सामने आया है। 9 सितंबर को 7वीं रूस-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) की मंत्रिस्तरीय बैठक हुई थी।

खींवसर में 'हनुमान' का गढ़ ढहाने के लिए भाजपा-कांग्रेस ने कसी कमर, दावेदार देंगे टक्कर!

नागौर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। प्रदेश में खींवसर सहित छह विधानसभा सीटों पर उप चुनाव कराने की सुगबुगाहट तेज हो गई। नागौर की खींवसर विधानसभा सीट पर आरएलपी विधायक हनुमान बेनीवाल के लोकसभा चुनाव जीतने के बाद यह सीट खाली हो गई। अब यहां यह सीट आरएलपी के लिए प्रतिष्ठा की सीट बन गई है, वहीं सत्ता पर काबिज भाजपा भी इस सीट को जीतने की तैयारी में कोई कसर छोड़ती नहीं दिख रही।

हालांकि, भाजपा को यहां लगातार हार का सामना करना पड़ा है। पिछला चुनाव भाजपा कम अन्तर से हारी और इस बार प्रदेश व देश में सरकार होने का फायदा भाजपा उप चुनाव में उठाने की तैयारियों में जुटी नजर आ रही है। प्रत्याशियों को लेकर अभी स्थिति साफ नहीं है। सभी अपने-अपने हिसाब से तैयारी में जुटे हैं। उप चुनाव में मुख्य मुकाबला भले ही भाजपा एवं आरएलपी में दिखेगा, लेकिन कांग्रेस, बसपा, राजस्थान अभिनव

पार्टी से डॉ. अशोक चौधरी सहित कई दल यहां अपना समीकरण बैठाने में लगे हैं।

खींवसर विधानसभा सीट सृजित होने के बाद वर्ष 2008 में यहां से हनुमान बेनीवाल ने भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ा और बसपा के उम्मीदवार दुर्गसिंह चौहान को 24443 मतों से हराया। यही स्थिति वर्ष 2013 के चुनावों में रही। हालांकि इस चुनाव में बेनीवाल निर्दलीय लड़े, लेकिन बसपा के दुर्गसिंह चौहान को 23020 वोटों के अन्तराल से दूसरी बार चुनाव हराकर विधानसभा सदस्य निर्वाचित हुए। वर्ष 2018 में जब दुर्गसिंह चौहान ने मैदान छोड़ दिया तो निर्दलीय बेनीवाल ने कांग्रेस प्रत्याशी सवाईसिंह चौधरी को 16948 मतों से हराया।

इसके बाद वर्ष 2019 में हनुमान बेनीवाल ने अपनी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाकर भाजपा से गठबन्धन किया और लोकसभा चुनाव लड़कर सांसद बने। खींवसर सीट पर अपनी पार्टी का भाजपा के साथ गठबंधन कर भाई नारायण बेनीवाल को चुनाव मैदान में उतारा। वो 4630 वोटों से कांग्रेस प्रत्याशी हरेन्द्र मिर्धा से जीते। इस बार के चुनाव में हनुमान बेनीवाल ने भाजपा के रेवन्तराम डांगा को हराया।

राजस्थान की राजनीति पर गहरी नजर रखने वालों के मुताबिक इस बार बीजेपी को हारने के लिए कांग्रेस और आरएलपी लोकसभा चुनाव के तर्ज पर गठबंधन कर सकती है। लेकिन इसमें भी गोविंद सिंह डोटासरा का पेंच फसा हुआ है, क्योंकि हाल ही में हनुमान बेनीवाल ने एक सभा में अप्रत्यक्ष रूप से डोटासरा के खिलाफ बयानबाजी की थी। वहीं दूसरी ओर राजनीतिक विश्लेषक यह भी मान रहे हैं कि कांग्रेस और एलएलपी का गठबंधन हुआ तो इसका नुकसान गठबंधन को ही होगा और भाजपा इसका लाभ उठा लेगी। बताते चलें कि गत चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रहे तेजपाल मिर्धा ने लोकसभा चुनाव में आरएलपी और कांग्रेस का गठबंधन होने पर बगावत कर दी थी और भाजपा में शामिल हो गए थे। ऐसे में वे अपने समर्थकों के साथ गठबंधन को भारी नुकसान पहुंचा सकते हैं।

उपचुनाव से पहले बीजेपी के संगठन में होगा बदलाव

मदन राठौड़ की नई टीम से इनकी होगी छुट्टी, ये होंगे रिपीट

जयपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में 6 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव से पहले प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ की नई टीम को लेकर सियासी हलकों में चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया है। सूत्रों की मानें तो राठौड़ नए सिरे से अपनी टीम तैयार कर रहे हैं। बताया जा रहा है राठौड़ ने दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व से मिलकर इसकी अनुमति भी ले ली है। माना जा रहा है कि नई टीम में वसुंधरा राजे के समर्थकों को कार्यकारिणी में जगह मिल सकती है। बता दें लोकसभा चुनाव के बाद प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी को हटाकर मदन राठौड़ को कमान सौंपी गई थी।

दरअसल, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ संगठन के बदलाव के मामले में दो दिन के लिए दिल्ली दौरे पर है। उन्होंने इस दौरान बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष से भी मुलाकात की है। इस मुलाकात को सियासी जानकार संगठन में बदलाव से जोड़कर देख रहे हैं। बताया जा रहा है कि दिल्ली में संगठन में बदलाव और उपचुनाव को लेकर विस्तार से चर्चा हुई है। इसके बाद अब मदन राठौड़ दिल्ली से वापस आने के बाद संगठन के बदलाव की घोषणा कर सकते हैं।

बताया जा रहा है कि प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ की नई टीम में कई मौजूदा नेताओं की छुट्टी होने जा रही है। प्रदेश उपाध्यक्ष चुन्नीलाल गरासिया, सीआर चौधरी, मोतीलाल मीणा और प्रदेश के मुख्यमंत्री दामोदर अग्रवाल और ओमप्रकाश भड़ाना बाहर हो सकते हैं। क्योंकि सीआर चौधरी को किसान आयोग का अध्यक्ष बनाया गया है, चुन्नीलाल गरासिया को पार्टी ने राज्यसभा भेजा है। वहीं दामोदर अग्रवाल भीलवाड़ा से सांसद बन गए हैं, ओमप्रकाश भड़ाना को देवनारायण बोर्ड का अध्यक्ष बनाया जा चुका है। ऐसे में इन दोनों नेताओं की जगह नए चेहरों को मौका मिलने की उम्मीद है।

बताया जा रहा कि संगठन में बदलाव करते हुए नए चेहरों को भी जोड़ा जा सकता है। जबकि कुछ बड़े चेहरे रिपीट करने का प्लान तैयार हो रहा है, जिसमें ज्योति मिर्धा और बाबा बालकनाथ योगी का नाम भी शामिल है। ऐसा माना जा रहा है कि राजस्थान बीजेपी में 13 प्रदेश मंत्रियों में से 5 से 6 ही प्रदेश मंत्री रह सकते हैं। इन नेताओं में प्रदेश उपाध्यक्ष नारायण पंचारिया, बाबा बालकनाथ, मुकेश दाधीच, सरदार अजयपाल सिंह, प्रभुलाल सैनी, ज्योति मिर्धा और नाहर सिंह जोधा शामिल हैं। वहीं मौजूदा प्रदेश महामंत्री में श्रवण सिंह बगड़ी और जितेंद्र गोठवाल को भी उपाध्यक्ष बनाया जा सकता है।

इसके साथ कुछ मोर्चा और जिला अध्यक्षों के कामकाज को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद उनमें भी बदलाव किया जा सकता है। मदन राठौड़ की कोशिश होगी कि उपचुनाव से पहले संगठनात्मक कुछ बदलाव करके जातीय और क्षेत्रिय समीकरण को संतुलित किया जाए।

पार्टी सूत्रों की माने तो जिस तरह से पिछले दिनों प्रदेश प्रभारी राधामोहन दास अग्रवाल और सह प्रभारी विजया रहाटकर के साथ मदन राठौड़ ने उन विधानसभा सीटों का दौरा किया जहां पर उपचुनाव होने हैं। वहां की ग्राउंड रिपोर्ट को लेकर राठौड़ ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से भी चर्चा की है।

सरकारी कर्मचारियों के लिए बड़ी खबर

योजना का हर्जाना वसूलेगी भजनलाल सरकार

जयपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) में लाभार्थी बनकर गरीबों के हक का गेहूं उठाने वाले 83679 कर्मचारियों में से 16382 से राज्य सरकार 5 साल बाद भी वसूली नहीं कर सकी है। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में 2020 में सामने आए इस मामले में अब तक 67297 कार्मिकों से 82 करोड़ 66 लाख रुपए की वसूली कर ली गई है। इन सरकारी कार्मिकों ने गरीब के हिस्से का गेहूं 1 से 2 रुपए किलो में लिया था, लेकिन इनसे सरकार ने वसूली गेहूं की बाजार कीमत 27 रुपए किलो के हिसाब से की है।

सूत्रों के मुताबिक पांच साल बाद भी रुपए जमा नहीं कराने वाले 16382 राजस्थान सरकार के कार्मिकों को वसूली के लिए नोटिस दिए गए हैं। इसमें बकाया नहीं चुकाने पर कड़ी कार्रवाई के लिए कहा गया है। उधर, खाद्य आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने जिला रसद अधिकारियों (डीएसओ) को वसूली में तेजी लाने के लिए कहा है। कर्मचारियों में राज्य और केंद्रीय दोनों शामिल हैं।

दो जिलों में शत प्रतिशत वसूली

विभाग ने करौली और टोंक में कार्मिकों से शत प्रतिशत वसूली कर ली है। करौली में 2924 कार्मिकों से 4 करोड़ 33 लाख और टोंक में 1175 कार्मिकों से 1 करोड़ 40 लाख रुपए से अधिक वसूले गए हैं। वहीं, भरतपुर ग्रामीण और उदयपुर ग्रामीण में जांच में किसी कर्मचारी का नाम सामने नहीं आया था।

साल 2020 से शुरू हुई वसूली

दरअसल राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम में सरकारी कार्मिकों के पात्र बनकर गेहूं उठाने की शिकायतों के बाद साल 2020 में जिला रसद अधिकारियों से जांच कराई थी। जांच में सरकारी कार्मिकों के नाम सामने आने के बाद उठाए गए गेहूं की कीमत बाजार दर से वसूलने के निर्देश दिए थे। तब योजना को आधार से लिंक करने पर जांच में मामले सामने आए थे।

जैसलमेर के रामदेवरा मेले में बम धमाके की धमकी के बाद हाई अलर्ट

जैसलमेर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। जैसलमेर जिले के प्रसिद्ध रामदेवरा मंदिर में बम धमाके की धमकी मिलने के बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर हैं। पोकरण रेलवे स्टेशन पर एक पर्ची मिली है, जिसमें कपड़े से बने घोड़ों में बम होने की आशंका जताई गई है। पर्ची में लिखा गया कि इन घोड़ों के अंदर विस्फोटक छिपाया जा सकता है और आतंकवादी इन्हें मंदिर को उड़ाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। पर्ची मिलने के बाद पुलिस और खुफिया एजेंसियां तुरंत हरकत में आईं। मंदिर के चारों ओर सुरक्षा बढ़ा दी गई है, और मंदिर परिसर से कपड़े के बने सभी घोड़ों को बाहर निकाल दिया गया है। खुफिया एजेंसियां पूरी जांच कर रही हैं ताकि संभावित खतरे को टाला जा सके। मंदिर को तुरंत खाली कराया गया और श्रद्धालुओं को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया। जांच के लिए विशेष बम निरोधक दस्ते और आतंकवाद निरोधी दस्ते को मौके पर बुलाया गया है। मंदिर परिसर और उसके आसपास के इलाके में गहन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। बम निरोधक दस्ते द्वारा घोड़ों और अन्य संदिग्ध वस्तुओं की गहन जांच की जा रही है। रामदेवरा मंदिर राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जहां हर साल लाखों श्रद्धालु बाबा रामदेव के दर्शन करने आते हैं। वर्तमान में मंदिर की सुरक्षा को लेकर कोई जोखिम नहीं लिया जा रहा है और स्थानीय प्रशासन स्थिति पर कड़ी नजर रखे हुए है।

टोल टैक्स फ्री! 20 कि.मी बाद वसूला जाएगा शुल्क, परिवहन मंत्रालय का बड़ा फैसला

जयपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में वाहन चालकों से टोल नाकों पर मनमानी वसूली से अब राहत मिलेगी। सड़क परिवहन मंत्रालय ने शुल्क वसूली की नई प्रणाली ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम के लिए अपने नियमों में संशोधन की अधिसूचना जारी कर दी है।

विभाग के अनुसार, इसमें उपग्रह आधारित प्रणाली में शुल्क वसूली के लिए ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम और ऑन बोर्ड यूनिट का इस्तेमाल किया जाएगा।

इस नए सिस्टम के प्रचलन बढ़ने के साथ ही मौजूदा टोल नाकाओं की विदाई का समय आ जाएगा। यह प्रणाली शुरुआत में प्रमुख राजमार्गों और एक्सप्रेस-वे पर लागू की जाएगी।

सरकार ने नई प्रणाली के लिए राजमार्गों के लिए शुल्क निधारित करने वाले नियमों में संशोधन किया है। इस प्रणाली के लागू होने पर यात्रियों को वर्तमान व्यवस्था में वसूली जा रही एकमुश्त रकम के स्थान पर उतनी ही राशि चुकानी होगी, जितनी उसने यात्रा की है।

वहीं, शुरुआती 20 किलोमीटर की यात्रा पर वाहनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। नया सिस्टम मौजूदा फास्टैग और ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन तकनीक का एक विकल्प होगा। यह संशोधित नियम विकसित टेक्नोलॉजी के माध्यम से राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल संग्रहण को आधुनिक बनाने के सरकार के प्रयासों का हिस्सा हैं।

जीपीएस आधारिक टोल सिस्टम में यात्रा की तय की गई दूरी के आधार पर टोल की गणना करने के लिए सैटेलाइट और इन-कार ट्रैकिंग सिस्टम का इस्तेमाल किया जाता है।

नए सिस्टम से शुल्क वसूली में भौतिक टोल प्लाजा की आवश्यकता समाप्त हो जाती है जिससे टोल नाकाओं पर जाम नहीं लगता।

नई प्रणाली के लिए वाहनों में ऑन-बोर्ड यूनिट (ओबीयू) या ट्रैकिंग डिवाइस लगाना होगा। राजमार्गों पर लगे सीसीटीवी कैमरे वाहनों की स्थिति की पुष्टि करेंगे। उसके आधार पर शुल्क लिया जाएगा।

किरोड़ी लाल मीणा के खोहरामुल्ला गांव में पैंथर की हलचल से दहशत

दौसा, 11 सितंबर (एजेंसियां)। दौसा जिले में लगातार जिले में अलग-अलग इलाकों में पैंथर की आहट सुनाई देने लगी है। पिछले कई दिनों से सिकराय विधानसभा क्षेत्र में पैंथर का मूवमेंट होने से लोगों काफी

दहशत का माहौल है। एक पैंथर का मूवमेंट महवा विधानसभा क्षेत्र के खोहरामुल्ला गांव में पहाड़ पर सुबह पैंथर की मूवमेंट से दहशत का माहौल पैदा हो गया। पहाड़ी पर पैंथर दिखने के चलते ग्रामीणों में भय पैदा हो गया। यह खोहरामुल्ला गांव रहने वाले और राजस्थान की भजनलाल सरकार में आपदा मंत्री डॉक्टर किरोड़ी लाल मीणा का पैतृक गांव है। पैंथर की मूवमेंट की सूचना पर वन विभाग भी अलर्ट मोड पर आ गया है। आनन फानन में वन विभाग ने पैंथर की पुष्टि करते हुए पिंजरे लगाए हैं। इधर, दौसा डीएफओ अजित उचोई ने बताया कि पैंथर की मूवमेंट होने के कारण दो पिंजरे लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि पास में जंगल होने कारण पैंथर आ गया है। इस घनी हरियाली से कई और जंगली जानवर यहां मौजूद होने की बात भी सामने आई है। उचोई का कहना जल्द रेस्क्यू करने की कोशिश रहेगी। खोहरामुल्ला गांव में पहाड़ी क्षेत्र के आसपास डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने करीब लाखों पेड़ पौधे लगाकर गांव को हरा-भरा खूबसूरत कर स्वर्ग जैसे तैयार किया है। डॉक्टर किरोड़ी के निर्देश पर वर्तमान में 10 हजार पौधे लगाए हैं।

सिरोही विधानसभा के 20 सरकारी विद्यालयों में होंगे विकास कार्य, 499.34 लाख की मिली स्वीकृति

सिरोही, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सिरोही विधानसभा क्षेत्र के वाशिंदों के लिए अच्छी खबर है। पंचायतीराज राज्यमंत्री ओटाराम देवासी के प्रयास से राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर द्वारा समग्र शिक्षा अभियान की पीएबी वर्ष 2024-25 अन्तर्गत विधानसभा क्षेत्र 20 सरकारी विद्यालयो मे 41 कार्यों के लिए 499.34 लाख की स्वीकृति प्रदान की गई है।

पंचायतीराज राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने बताया कि इस राशि से सिरोही ब्लॉक के 10 विद्यालयों (राप्रावि, भीलो की ढाणी, नून-11.43 लाख, राउमावि, मामावली-26.37 लाख, राउमावि, राजपुरा-13.67 लाख,

मगारावि, पाडीव-47.10 लाख, राउमावि, गोयली 47.10 लाख, रामावि, काकेन्द्रा-31.17 लाख, राउमावि, मण्डवारिया-15.93 लाख, राउमावि, नून-17.50 लाख, राबाउप्रावि, संस्कृत सिरोही-3.72 लाख एवं केजीबीवी, जावाल-21.65 लाख) मे अतिरिक्त कक्षाकक्ष, कलाकक्ष, कम्पयुटर कक्ष, पुस्तकालय, शौचालय-मूत्रालय, मरम्मत एवं रखरखाव हेतु विद्यालयवार कुल राशि 235.64 लाख तथा शिवगंज ब्लॉक के 10 विद्यालयों (राउप्रावि, देवों का वेरा-22.86 लाख, राउप्रावि, देवनगर- 11.43 लाख, मगारावि, पालडी एम-47.10 लाख, राउमावि, केराल 13.67 लाख, राउमावि, मनादर-13.67 लाख, राउमावि, मांडानी-13.67 लाख, राउमावि, खन्दरा-47.10 लाख, मगारावि, भीमगिरी बस्ती कैलाशनगर-13.67 लाख, राउमावि, राडबर-47.10 लाख एवं राउमावि, बागसीन 33.43 लाख) मे अतिरिक्त कक्षाकक्ष, कलाकक्ष, कम्पयुटर कक्ष, पुस्तकालय हेतु विद्यालयवार कुल राशि 263.70 लाख के विकास कार्य करवाये जायेंगे। इसके अतिरिक्त पी.एम.श्री 2024-25 योजना अन्तर्गत मगारावि, जावाल हेतु 37.68 लाख एवं राबाउमावि, सिरोही के लिए 50.57 लाख के विकास कार्य करवाये जायेंगे। इसमें कालंद्री, लखमावा छोटा और गोडाना विद्यालय प्रस्तावित है। इस मामले में भाजपा जिला मीडिया प्रभारी रोहित खत्री ने बताया कि इन विद्यालयों में विकास कार्यों की लोगों द्वारा लंबे समय से मांग की जा रही थी। पंचायतीराज राज्यमंत्री देवासी के ध्यान में लाए जाने के बाद उनके द्वारा लगातार प्रयास कर इन कार्यों को स्वीकृत करवाया गया है।

माउंट आबू में सबसे ज्यादा 75 मिमी तो सिरोही में 70 मिमी बारिश, देलवाड़ा मार्ग बंद

सिरोही, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सिरोही जिले में भी बारिश का दौर शुरू हो गया है। बीते 24 घंटों में माउंटआबू में सबसे ज्यादा 75 मिमी और सिरोही में 70 मिमी बारिश दर्ज की गई है। हालांकि इस दौरान आबूरोड पूरी तरह सूखा रहा। आबूरोड में भी दिनभर कभी तेज एवं कभी धीमे बारिश का दौर चलता रहा।

सिरोही जिले में लगातार हो रही बारिश के दौरान रेवदर में 45 मिमी पिंडवाड़ा में 37 मिमी और शिवगंज में 32.5 मिमी बारिश हुई। इस बारिश से नदियों प्राकृतिक बहाव के नालों, एनीकटों एवं बांधों में भी पानी की आवक लगातार बढ़ रही है। रातभर में हिल स्टेशन माउंट आबू में सबसे ज्यादा बारिश होने से सभी नाले पूरे उफान पर बह रहे हैं। झरनों में पानी का वेग बढ़ गया है। इससे देलवाड़ा मार्ग बंद हो गया। मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लाइनें लग गई। इस दौरान पर्यटक पानी के बहाव के कम होने एवं मार्ग चालू होने का इंतजार करते नजर आए। कभी तेज एवं कभी धीमे बारिश से साथ धुंध के वातावरण के चलते यहां का मौसम खुशनुमा हो गया है। इसके साथ ही लगातार पड़ रही तेज गर्मी एवं उमस के बाद सोमवार रात से आबूरोड शहर में भी रूक रूक कर बारिश होती रही। इससे शहरवासियों को गर्मी से हल्की सी राहत मिली है। बाजार में जगह जगह गर्मागर्म नाश्ता सेंटरों पर लोग ग्राहकी बढ़ गई है। मक्के के भुट्टे भी आमजन के आकर्षण का केंद्र बने है।

करौली-सरमथुरा मार्ग पर बोलेरो और टेंपो की भिड़ंत, तीन वर्षीय बालक की मौत,14 घायल

करौली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। करौली-सरमथुरा मार्ग स्थित एनएच-23 कोंडर मोड टोल प्लाजा के पास एक बोलेरो और लोडिंग टेंपो में भिड़ंत हो गई। दुर्घटना इतनी जबरदस्त थी कि टेंपो और बोलेरो में सवार 14 से अधिक लोग घायल हो गए, जबकि एक तीन वर्षीय बालक की मौत हो गई। दो को गंभीर अवस्था में जयपुर रेफर कर दिया गया, जबकि शेष घायलों को करौली अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही करौली सदर और कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची तथा घटनाक्रम की जानकारी ली। सभी घायलों का करौली अस्पताल में उपचार चल रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। करौली हॉस्पिटल पीएमओ डॉ. रामकेश मीणा ने बताया कि पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार एक लोडिंग टेंपो धौलपुर से कैला देवी की ओर जा रहा था। बोलेरो करौली से सरमथुरा की ओर जा रही थी। इस दौरान कोंडर मोड़ के पास टोल नाके से आगे लोडिंग टेंपो और बोलेरो में भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में 14 लोग घायल हो गए, जबकि एक बालक की मौत हो गई और दो को गंभीर अवस्था में जयपुर रेफर किया गया है।

दो महीने की बच्ची को उठा ले गया जरख

सवाई माधोपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। सवाई माधोपुर जिले के रणथंभौर नेशनल पार्क की बालेर रेंज से सटे नोराड का टापर गांव के नजदीक छप्परपोश के नीचे खाट पर सो रही दो माह की बालिका को जरख (वन्यजीव) उठाकर ले गया। परिजनों ने हो-हल्ला व पथराव कर करीब डेढ़ सौ मीटर दूरी पर बालिका को जरख के मुंह से छुड़ाया लेकिन तब तक बालिका दम तोड़ चुकी थी। बालिका के परिजन घायल दो माह की बालिका तनिष्का को लेकर खंडार अस्पताल पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे वनकर्मियों ने मौके से जरख के पगमार्क लिए। वहीं इस मामले में वन विभाग के अधिकारी वन्यजीव जरख के बजाय किसी कुत्ते द्वारा हमला करने की बात कहकर अपना पल्ला झाड़ रहे हैं।

विवादों में आया मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया का टेंडर,दूसरी बार क्यों हुआ रद्द

जयपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान की भजनलाल का सोशल मीडिया टेंडर दूसरी बार भी निरस्त हो गया। इसी साल पहला टेंडर 30 जुलाई और अब 9 सितंबर को दूसरा टेंडर भी निरस्त हो गया। डीओआईटी की राजकॉम्प कंपनी ने सीएम के सोशल मीडिया प्रबंधन के लिए 28 करोड़ रुपए का टेंडर जारी किया था।

नए टेंडर में ओबर्न डिजिटल, दिशा कम्यूनिकेशन्स जैसी कई बड़ी कंपनियों ने निविदाएं भरी थीं। इसकी अंतिम तारीख 20 अगस्त तय की गई थी। परचेज कमेटी ने इनमें से दो कंपनियों को तकनीकी रूप से योग्य माना था।

सूत्रों के अनुसार, ये कंपनियां टेंडर की शर्तें पूरा नहीं कर रही थीं इसलिए टेंडर को निरस्त करना पड़ गया। हालांकि फिलहाल सीएम के सोशल मीडिया की जिम्मेदारी उनके ओएसडी धनराज सोलंकी संभाल रहे हैं। लेकिन एक मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया टेंडर जिस तरह से बार-बार निरस्त हो रहे हैं उसे लेकर प्रदेश में चर्चाएं होने लगी हैं कि आखिर सोशल मीडिया के टेंडर से सरकार बार-बार पीछे क्यूं हट रही है।

स्क्रब टायफस के बढ़ते मरीज, स्वास्थ्य विभाग की मॉनिटरिंग पर उठे सवाल

जयपुर, 11 सितंबर (एजेंसियां)। प्रदेश के अस्पतालों में डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया और स्क्रब टायफस के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है, लेकिन स्क्रब टायफस के मामले सबसे ज्यादा चिंता का विषय बने हुए हैं। जयपुर में इस साल अब तक 178 स्क्रब टायफस के मामले दर्ज किए गए हैं। वहीं, एसएमएस अस्पताल में जनवरी से अगस्त तक 216 मामले सामने आ चुके हैं, जबकि पिछले 10 दिनों में ही 133 नए केस दर्ज हुए हैं।

मौतों का आंकड़ा और विरोधाभास

एसएमएस अस्पताल के अनुसार, 1 सितंबर से अब तक 133 स्क्रब टायफस के मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें से 3 मौतें पिछले 10 दिनों में हुई हैं। इस साल अस्पताल में स्क्रब टायफस से

कुल 6 लोगों की मौत हो चुकी है। मेडिसिन विभाग के एचओडी डॉ. सुधीर मेहता ने बताया कि मौजूदा मौसम स्क्रब टायफस के लिए अनुकूल है और मरीज बुखार, उल्टी, निमोनिया जैसे लक्षणों के साथ अस्पताल पहुंच रहे हैं। गंभीर मामलों में मस्तिष्क और फेफड़ों पर असर और प्लेटलेट्स की कमी जैसी जटिलताएं देखी जा रही हैं।

हालांकि, स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट में 9 सितंबर तक प्रदेश में स्क्रब टायफस के 1128 मामले दर्ज हुए हैं, लेकिन मौतों का कोई उल्लेख नहीं है। यह आंकड़ों का विरोधाभास यह सवाल खड़ा करता है कि स्वास्थ्य विभाग मौसमी बीमारियों की रोकथाम और मॉनिटरिंग को लेकर कितना गंभीर है।

सटीक मॉनिटरिंग की जरूरत

विशेषज्ञों का मानना है कि अगर मरीजों को समय पर इलाज मिल जाए, तो उनकी जान बचाई जा सकती है, लेकिन देरी से स्थिति गंभीर हो सकती है। मौसमी बीमारियों की सही मॉनिटरिंग और मौतों के सही आंकड़ों का होना आवश्यक है ताकि समय पर उचित कदम उठाए जा सकें। स्वास्थ्य विभाग और अस्पताल के आंकड़ों में विरोधाभास से विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठने लगे हैं।

'मेक इन तेलंगाना' का विकास होना चाहिए: मंत्री श्रीधर बाबू

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आईटी और उद्योग मंत्री डुडिला श्रीधर बाबू ने औद्योगिक क्षेत्र से राज्य को विनिर्माण क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए 'मेक इन तेलंगाना' की अवधारणा को बढ़ावा देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि तेलंगाना के उत्पादों को घरेलू बाजार में स्वीकार किया जा सके। वह बेगमपेट में क्वालिटी सर्कल फोरम ऑफ इंडिया हैदराबाद चैप्टर के 38वें वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि अगर हम मात्रा के बजाय गुणवत्ता को प्राथमिकता देंगे तो पूरा देश हमारी ओर देखेगा। मंत्री ने बताया कि कर्मचारियों, श्रमिकों और उद्योग प्रतिनिधियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के बारे में जागरूक किया जाएगा।

उन्होंने हमसे तेजी से बढ़ती कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने और देश को दुनिया में शीर्ष पर पहुंचाने का आग्रह किया। मंत्री ने कर्मचारियों की रचनात्मकता को सामने लाने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए गुणवत्ता मंच के प्रयासों की सराहना की।

श्रीधर बाबू ने कहा कि कैंपस टू कॉरपोरेट नामक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सराहनीय है। मंत्री ने क्वालिटी सर्कल प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उनके समर्थन के लिए ईसीआईएल, एनएमडीसी, आरटीसी, थर्मोपोड्स, थर्मोकेबल्स, उषा इंटरनेशनल, टाटा ग्रुप, रेणुका प्लास्टिक्स, तोशिबा, राम कंपनी, केसीपी सीमेंट्स, एचएएल, मिधानी और बीईएल को पुरस्कार सौंपे। कार्यक्रम में हैदराबाद चैप्टर के चेयरमैन बालकृष्ण राव, हनमंत राव आदि ने विचार व्यक्त किए।

बंडी ने सेरिलिंगमपल्ली में भाजपा सदस्यता अभियान में हिस्सा लिया

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार ने आज सेरिलिंगमपल्ली विधानसभा क्षेत्र में पार्टी कार्यकर्ताओं के चल रहे सदस्यता अभियान में हिस्सा लिया।

उन्होंने एक बार फिर कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ सनसनीखेज टिप्पणी की। राहुल गांधी, जो न केवल विदेश यात्रा करके भारत को बदनाम कर रहे हैं, बल्कि चुनावी प्रणाली की भी आलोचना कर रहे हैं, उन्हें इस देश में रहने का कोई हक नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस, बीआरएस और एमआईएम पार्टियां आगामी जीएचएमसी चुनाव एक साथ लड़ने जा रही हैं और उन्होंने कहा कि भले ही सभी एक साथ चुनाव लड़ें, लेकिन इस बार भाजपा जीएचएमसी पर भगवा झंडा फहराएगी और मेयर का पद जीतेगी।

पर्यावरण अनुकूल प्रतिमाएं बनीं आकर्षण का केंद्र

बाप्पा के दिख रहे अलग-अलग रूप

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शहर में इस वर्ष गणेश चतुर्थी उत्सव के दौरान मूर्तियों के लिए कई नवीन दृष्टिकोण अपनाए गए हैं, जिसमें कई आयोजकों ने कुछ अनूठी मूर्तियां स्थापित की हैं, जो पर्यावरण-अनुकूल संदेश दे रही हैं। शहर का एक और उल्लेखनीय आकर्षण सिकंदराबाद के रामगोपालपेट की गणेश उत्सव समिति है, जिसने साबूदाना का उपयोग करके 3 फुट की गणेश प्रतिमा तैयार की है। इस प्रतिमा का मुख्य आकर्षण चांदी और सोने की परत से बने हाथ और पैर हैं।

मूर्तिकार और आयोजक शैनाथ ने कहा कि हम मूर्ति बनाने में प्लास्टर ऑफ पेरिस के इस्तेमाल के खिलाफ हैं और पिछले 26 सालों से अनोखी और पर्यावरण के अनुकूल मूर्तियां बना रहे हैं। इस बार हमने करीब डेढ़ किलो साबूदाना से मूर्ति बनाई है। मूर्ति हाथ से बनाई गई है। हम इसे विसर्जन के लिए सोमशिला बैकवाटर ले जाएंगे।

इसी तरह के एक अभिनव दृष्टिकोण में, पुरानी घनमंडी में श्री गणेश मित्र संघ ने 5,000 समुद्री सीपों से बनी गणेश प्रतिमा स्थापित की है, जो इस क्षेत्र की प्रमुख मूर्तियों में से एक बन गई है। आयोजकों ने पर्यावरण के अनुकूल और प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देते हुए मूर्ति बनाई है।

रूट्स कॉलेज ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कलिनरी आर्ट्स, सोमाजीगुडा ने उत्सव को पाक-कला के साथ एक अलग अंदाज में पेश किया। इसके लिए शेफ वंदना और शेफ अर्जुन ने 20 अन्य छात्रों के साथ मिलकर 20 किलो चॉकलेट से गणेश की मूर्ति बनाई।

प्रिंसिपल निखिल ने बताया कि तीन दिनों तक चॉकलेट गणेश की पूजा करने के बाद मूर्ति को दूध में विसर्जित किया गया और सभी को प्रसाद के तौर पर चॉकलेट मिल्क बांटा गया।

कन्नट सुरेंद्रन को मन्नाथ आचार्य पुरस्कार

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। समाज सुधारक और नायर सर्विस सोसाइटी (एनएसएस) के संस्थापक भारत केसरी मन्नथु पद्मनाभन की स्मृति में स्थापित मन्नथ आचार्य पुरस्कार, प्रमुख परोपकारी और लोक केरल सभा के सदस्य कन्नट सुरेंद्रन को प्रदान किया गया।

मंगलवार को यहां जारी एक बयान के अनुसार, यह पुरस्कार त्रावणकोर राजघराने के सदस्य और श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर के ट्रस्टी आदित्य वर्मा द्वारा प्रदान किया गया। यह कार्यक्रम शहर में एनएसएस द्वारा आयोजित ओणम समारोह के दौरान आयोजित किया गया था। प्रशस्ति पत्र एनएसएस सलाहकार और वरिष्ठ पत्रकार सीजी चंद्र मोहन ने पढ़ा। इस अवसर पर एनएसएस अध्यक्ष वी अप्पुकुट्टन नायर और महासचिव जी सुरेश कुमार और विनोद मेनन भी मौजूद थे।

चेतावनी स्तर से ऊपर बह रही गोदावरी

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गोदावरी नदी राज्य में कई ऊपरी इलाकों में चेतावनी स्तर से ऊपर बह रही है, जिससे चिंता बढ़ गई है। स्थानीय अधिकारी हाई अलर्ट पर हैं और संभावित प्रभाव से निपटने के लिए स्थिति पर बारीकी से नज़र रख रहे हैं। ओडिशा और छत्तीसगढ़ में भारी बारिश के कारण गोदावरी की प्रमुख सहायक नदी इंद्रावती के जलस्तर में वृद्धि से स्थिति और खराब हो गई है। जगदलपुर में इंद्रावती चेतावनी स्तर से ऊपर बह रही है, जिससे बाढ़ का स्तर बढ़ने में महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है। राज्य के एतुरनगरम में गोदावरी 14.83 मीटर के चेतावनी स्तर के करीब बह रही है।

दुम्मुगुडेम में जलस्तर 13.20 मीटर तक पहुंच गया है, जो चेतावनी स्तर 13 मीटर से अधिक है। विदर्भ और छत्तीसगढ़ में भारी बारिश के पूर्वानुमान के कारण नदी

के जलस्तर पर लगातार नजर रखी जा रही है। वर्तमान प्रवाह लक्ष्मी बैराज (3.62 लाख क्यूसेक), सम्मक्का सागर (करीब % लाख क्यूसेक), सीताम्मा सागर (डुम्मुगुडेम) - बहिर्वाह 12.05 लाख क्यूसेक और भद्राचलम है, जहां यह 11 लाख क्यूसेक के करीब है।

इस बीच, निजाम सागर परियोजना (100%) और मंजीरा पर सिंगुर परियोजना (99.13%) तथा जाइकवाड़ी बांध (98.56%), कदमम परियोजना (96.58%) और श्रीपदा येल्लमपल्ली (91.76%) को गोदावरी बेसिन में उनकी सकल क्षमता के 90 प्रतिशत से अधिक भंडारण वाले जलाशयों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

पल भर में वाहनों को उड़ानें वाला कुख्यात चोर गिरफ्तार

42 लाख रुपये की 59 बाइक बरामद

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बेगमपेट पुलिस ने बाइक चोरी की कई वारदातों में शामिल एक कुख्यात अपराधी को पकड़ लिया है। बेगमपेट थाने में दर्ज बाइक चोरी के मामले से संबंधित सीसीटीवी फुटेज की सावधानीपूर्वक जांच के बाद पुलिस को मामले में सफलता मिली। पूछताछ में अपराधी ने कबूल किया कि अप्रैल, 2024 में उप्पल थाने में बाइक चोरी के एक मामले में जेल से छूटने के बाद उसने 59 बाइक चोरी की वारदातों को अंजाम दिया है।आरोपी की पहचान रायुडू चैतन्य साई कुमार, पुत्र वेंकट रमना, उम्र 33 वर्ष, निवासी मंचुकांति नगर, पलवंचा टाउन, भद्राद्री कोत्तागुडेम के रूप में हुई। चोरी के वाहन प्राप्तकर्ताओं में महदयानपु जगदीश, निवासी गंडुगुलापल्ली, दम्मापेटा, कोत्तागुडेम, कुचला हरि कृष्ण, निवासी कंदुकुर गांव और मंडल, प्रकाशम जिला, ए.पी. शामिल है। बाइक चोरी के एक मामले की जांच के दौरान, बेगमपेट पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज से सुराग एकत्र किए और विश्वसनीय जानकारी के आधार पर दोनों आरोपियों को ट्रैक किया गया। मुख्य आरोपी घटकेसर रेलवे स्टेशन पर अन्य आरोपी जगदीश को (12) चोरी की बाइक सौंप रहा था। आगे की पूछताछ में मुख्य आरोपी ने कबूल किया कि घटकेसर बस स्टैंड पर अन्य आरोपी कुचला हरिकृष्ण को सौंपने के लिए (7) और चोरी की गई बाइक रखी गई हैं। तदनुसार, पुलिस टीम ने चोरी की बाइक जब्त कर ली इसके अलावा जेबीएस क्षेत्र और रेलवे स्टेशन क्षेत्र से करीब 39 चोरी की बाइकें बरामद की गईं। कुल 59 दोपहिया वाहन बरामद किया गया, जिनकी कीमत 42 लाख रुपये है। पुलिस के अनुसार अपराधी रायुडू चैतन्य साई कुमार आदतन ऑटोमोबाइल चोरी करने वाला अपराधी है और वह आमतौर पर पैराडाइज, उप्पल, एलबी जैसे क्षेत्रों के मेट्रो स्टेशनों के पार्किंग स्थलों पर रखी मोटरसाइकिलों को निशाना बनाता है।

पोनुगोटी चोक्का राव और अन्य की भाजपा सदस्यता स्वीकार की गई

नलगोंडा, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पोनुगोटी चोक्का राव, पेंड्याला दामोदर राव, निदुनुरी परमेश, अटलुरु रंगा राव और 50 अन्य लोगों की भाजपा पार्टी की सदस्यता आज मलकाजगिरी के भाजपा सांसद इटेला राजेंद्र की मौजूदगी में स्वीकार की गई।

एआईसीबी के उपाध्यक्ष और डीडब्ल्यूएबी के महासचिव पोनुगोटी चोक्का राव ने कहा, "हमने तेलंगाना राज्य में कई सरकारें देखी हैं और हम सभी का लक्ष्य भाजपा को सत्ता में लाना और विकास की दिशा में काम करना है। यह कार्यक्रम नलगोंडा भाजपा अध्यक्ष नागा वर्षित रेड्डी और अन्य नेताओं की मौजूदगी में आयोजित किया गया।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला संपन्न

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीसीएमबी एवं सीएसआईआर-आईआईसीटी के संयुक्त तत्वावधान में एक-दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि पत्राचार आदि कार्यालयीन दस्तावेजों में अधिक से अधिक हिंदी शब्दों का इस्तेमाल करें।

संस्थान के प्रशासन नियंत्रक एम. आनंद कुमार ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईसीटी अपने कार्यालय सहित हैदराबाद के दूसरे कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन को गति देने में सहयोगी है। प्रशासनिक अधिकारी सतीश कुमार एम.डी. ने प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का अत्यधिक लाभ उठाने की अपील की। सीसीएमबी के प्रशासनिक अधिकारी चंदन कुमार ने नराकास की बैठक का जिक्र करते हुए प्रतिभागियों से तीनों प्रयोगशालाओं के हिंदी अधिकारियों एवं अनुवादकों की कर्मठता और राजभाषा संबंधी जानकारी और प्रशिक्षण के अधिकाधिक लाभ उठाने की बात कही।

मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेन्द्र रेड्डी, राजीव त्रिवेदी, वरि. प्रधान वैज्ञानिक ए.वी. सुब्रह्मण्या शर्मा और भंडार एवं क्रय नियंत्रक धर्मेन्द्र कुमार भी उपस्थित थे।

प्रथम सत्र में वरि. हिंदी अधिकारी, सीएच. सुब्बा राव ने हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण लेखन, पठन-पाठन व लेखन अभ्यास एवं व्याकरण विषय पर सत्र का संचालन किया। दूसरे सत्र में हिंदी अधिकारी, डॉ. सौरभ कुमार ने राजभाषा कार्यान्वयन में डिजिटल उपकरणों की भूमिका पर व्याख्यान दिया। तीसरे सत्र में सीएसआईआर-सीसीएमबी की हिंदी अधिकारी ने संघ की राजभाषा नीति विषय के अंतर्गत संघ सरकार की राजभाषा सम्बन्धी अधिनियम, नियम एवं संविधान में वर्णित इससेसम्बन्धी अनुच्छेद के बारे में कहा कि राजभाषा संबंधी अनुच्छेद संविधान के महत्वपूर्ण अनुच्छेद हैं जिसे केंद्रीय कर्मचारियों को ध्यान में रखना चाहिए और इसके अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। अंत में आईआईसीटी के अनुवादक आदर्श कुमार धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री सोनाणा खेतलाजी महाराज का जागरण 16 को

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सीरवी समाज ट्रस्ट करमनघाट अलमासगुडा श्री आईमाता मंदिर में समाज बन्धुओं के तत्वावधान में एक शाम श्री सोनाणा खेतलाजी महाराज के नाम जागरण 16 सितम्बर सोमवार रात्रि 8.30 बजे से आयोजित किया जाएगा।

प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष प्रकाश आगलेचा एवं सचिव पुखराज चोयल ने बताया कि समाज बन्धुओं के तत्वावधान में भादवा सुदी तेरस के अवसर पर खेतलाजी महाराज के मंदिर को फूलों से सजाकर, समाज बन्धु व भक्तगण पुजा-अर्चना व श्रीफल भेंटकर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करेंगे। रात्रि 8.30 बजे से खेतलाजी महाराज का जागरण आयोजित किया जाएगा। जिसमें ओमप्रकाश कुमावत एंड पार्टी भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। जागरण में पधारे समाज बन्धुओं व भक्तों की सेवार्थ सभी पदाधिकारी व कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहेंगे। समाज बन्धुओं व भक्तों से निवेदन है कि जागरण में सपरिवार पधारकर दर्शन, भजनों व प्रसाद का लाभ लेवे।

जगतियाल में कुत्ते के हमले में 10 लोग घायल

जगतियाल, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कथालापुर मंडल के भूषणरावपेट में मंगलवार शाम आवारा कुत्ते के हमले में 10 लोग घायल हो गए। ग्रामीणों के अनुसार, कुत्ते ने गांव के विभिन्न इलाकों में घूम रहे लोगों पर हमला किया। घायलों को कथलापुर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां उन्हें एंटी-रेबीज टीका लगाया गया।

मेडचल में गणेश पंडाल से लड्डू चोरी

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बुधवार तड़के लड्डू चोरों ने मेडचल में एक गणेश पंडाल को निशाना बनाया और गणेश प्रतिमा के हाथ में रखा लड्डू प्रसाद चुरा लिया। संदिग्ध लोग राघवेंद्र नगर कॉलोनी स्थित पंडाल में उस समय घुस गए, जब आसपास कोई नहीं था और उन्होंने लगभग एक किलो वजन का लड्डू उठा लिया और मौके से भाग गए। पंडाल आयोजकों को जब पता चला कि पंडाल से लड्डू गायब है तो उन्होंने मेडचल पुलिस को इसकी सूचना दी, जो मामले की जांच कर रही है। पंडाल और आस-पास के इलाकों में लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है।

लावारिस हालत में सड़क पर मिली नवजात

महबूबनगर, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बुधवार की सुबह देवराकाद्रा मंडल के डोकुर गांव के गेट के पास सड़क के किनारे एक नवजात बच्ची लावारिस हालत में मिली। रिपोर्ट के अनुसार बच्चे को सड़क किनारे एक राहगीर ने देखा और पुलिस को सूचना दी। अधिकारियों ने बच्चे को जिला मुख्यालय स्थित एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) केंद्र में भेज दिया। अस्पताल के कर्मचारियों ने बताया कि ठंड के मौसम में सड़क पर छोड़े जाने के बावजूद बच्चा स्वस्थ है। इस बीच, पुलिस माता-पिता का पता लगाने की कोशिश कर रही है।

खोजी कुत्ते गोल्डी का पुलिस सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

निजामाबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य पुलिस में आठ साल से अधिक समय तक सेवा देने वाले लैब्राडोर गोल्डी का बुधवार को पूरे पुलिस सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कर दिया गया। बीमारी के कारण उनका निधन हो गया। पुलिस आयुक्त कलमेश्वर शिंगणावर और अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और प्रतिष्ठित कुत्ते के ताबूत पर पुष्पांजलि अर्पित की। गोल्डी को 2016 में डॉग स्क्वायड में शामिल किया गया था और उन्होंने माइन डिटेक्टर स्निफर डॉग के रूप में काम किया था। अपनी सेवा के दौरान उन्हें कई पदक और प्रशंसा पत्र मिले।

आभूषण विक्रेताओं के लिए हॉलमार्किंग पर जागरूकता कार्यक्रम

महबूबनगर, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीआईएस हैदराबाद शाखा कार्यालय द्वारा महबूबनगर में आभूषण विक्रेताओं के लिए हॉलमार्किंग पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य आभूषण विक्रेताओं को हॉलमार्किंग के महत्व, अनिवार्य हॉलमार्किंग में हाल के विकास और हॉलमार्क यूनिक आइडेंटिफिकेशन (एचयूआईडी) प्रणाली के बारे में जागरूक करना था।

पीवी श्रीकांत, वैज्ञानिक ई/निदेशक, ने हॉलमार्किंग के महत्व पर प्रकाश डाला और बीआईएस का संक्षिप्त विवरण दिया।

श्री काविन, वैज्ञानिक सी/सहायक निदेशक, और श्रीमती प्रशांति, हॉलमार्किंग प्रतिनिधि, ने अनिवार्य हॉलमार्किंग और एचयूआईडी प्रणाली में हाल के विकास पर एक पॉवरपॉइंट प्रस्तुति दी।

श्रीमती जामिला, वैज्ञानिक बी/सहायक निदेशक, ने सोने के नमूनों की परीक्षण विधियों और प्रयोगशाला गतिविधियों पर विस्तार से बताया। स्पीकर्स ने प्रतिभागियों के हॉलमार्किंग से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दिया और पंजीकृत आभूषण विक्रेताओं से बीआईएस द्वारा निकाले गए निगरानी नमूनों की विफलता पर की गई कार्रवाई के बारे में स्पष्टीकरण दिया।

मिड-डे मील एजेंसियों को लंबित बिल भुगतान का इंतजार

8 महीनों से रुका है भुगतान

करीमनगर, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सब्जियों और अन्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण छात्रों को भोजन उपलब्ध कराने में संघर्ष कर रही मध्याह्न भोजन एजेंसियों को पिछले 8 महीनों से राज्य सरकार द्वारा उनके बिलों का भुगतान करने में और अधिक वित्तीय संकट का सामना करना पड़ रहा है। कर्मचारियों के वेतन के अलावा अंडे और रागी जावा के बिल पिछले 8 महीनों से लंबित बताए जा रहे हैं। इस वजह से मिड-डे मील में छात्रों को अंडे परोसना एजेंसियों के लिए भारी बोझ बन गया है। कक्षा 9 से 10 तक पढ़ने वाले छात्रों को दिए जाने वाले अंडे के बिल इस साल जनवरी से लंबित हैं। कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों के कुछ महीनों के अंडे के बिल भी लंबित हैं।

अधिकांश एजेंसियां साहूकारों से उधार लेकर अंडे परोस रही हैं, लेकिन कुछ एजेंसियां नियमित रूप से अंडे नहीं परोस रही हैं। छात्रों को सप्ताह में तीन दिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को अंडे परोसे जाने चाहिए। इस बीच अंडे के दाम में हुई बढ़ोतरी भी एजेंसियों के लिए एक और बोझ बन गई है। सरकार 5 रुपये प्रति अंडा दे रही है, जबकि बाजार में एक अंडे की कीमत छह से सात रुपये है। बाजार में अंडे के दाम बढ़ने के बावजूद सरकार ने दाम नहीं बढ़ाए, जिससे एजेंसियों को अतिरिक्त रकम चुकानी पड़ रही है।

एजेंसियों को मुख्यमंत्री नाश्ता योजना के बिलों का भुगतान भी नहीं किया गया है। रिपोर्ट्स के अनुसार मौजूदा सरकार ने अनौपचारिक रूप से इस योजना को ही खत्म कर दिया है। पिछले साल 7 अक्टूबर को राज्य भर के चुनिंदा स्कूलों में पिछली बीआरएस सरकार द्वारा शुरू की गई नाश्ता योजना में छात्रों को नाश्ते में इडली, सांभर, गेहूं का रवा, उपमा, चटनी, पूरी, आलू खोरमा, टमाटर बाथ, खिचड़ी या पोंगल परोसा जाता था। इसे बनाने और परोसने की जिम्मेदारी मिड-डे मील एजेंसियों को दी गई थी। रागी जावा बिल का भी यही मामला है, जो काफी समय से लंबित है।

मिड-डे मील वर्कर्स एसोसिएशन की जिलाध्यक्ष बुर्रा मंजुला ने कहा कि कई बार ज्ञापन देने के बावजूद सरकार ने बिल जारी नहीं किए हैं। उन्होंने कहा कि उनका वेतन भी लंबित है।

आईआरसीटीसी भारत गौरव ट्रेन चलाएगा सप्त ज्योतिर्लिंग दर्शन यात्रा

यह ट्रेन पश्चिमी और उत्तरी भारत में सात ज्योतिर्लिंगों को जोड़ती है

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय रेलवे द्वारा भारत गौरव पर्यटक ट्रेनों के नाम से शुरू की गई थीम-आधारित सर्किट ट्रेनें दक्षिण मध्य रेलवे में बहुत सफल रही हैं। ज़ोन से संचालित की जाने वाली पिछली ट्रेनों को लगभग सभी ट्रेनों में लगातार 100% ऑक्यूपेंसी के साथ भारी संरक्षण मिला है। भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (IRCTC) ने आंध्र प्रदेश से शुरू होने वाली एक और भारत गौरव ट्रेन की योजना बनाई है, जिसमें तेलंगाना और महाराष्ट्र में बोर्डिंग/डीबोर्डिंग स्थान होंगे। यह पर्यटक सर्किट ट्रेन भारत के पश्चिमी और उत्तरी भागों में स्थित महत्वपूर्ण ज्योतिर्लिंग स्थलों को कवर करेगी। इसके हिस्से के रूप में, आईआरसीटीसी ने विजयवाड़ा रेलवे स्टेशन से शुरू होने वाली सप्त ज्योतिर्लिंग दर्शन यात्रा भारत गौरव पर्यटक ट्रेन नामक एक नए पर्यटक पैकेज की घोषणा की है। यह ट्रेन देश के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों में प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग स्थलों को कवर करेगी, जबकि आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के सोलह महत्वपूर्ण मार्ग स्टेशनों पर बोर्डिंग / डी-बोर्डिंग की सुविधा प्रदान करेगी। बोर्डिंग / डी-बोर्डिंग की सुविधा एपी में विजयवाड़ा, तेलंगाना में मधिरा, खम्मम, दोर्नाकल, महबूबाबाद, वारंगल, काजीपेट, जंगों, भोंगीर, सिकंदराबाद, कामारेड्डी और निजामाबाद, महाराष्ट्र में धर्माबाद, मुदखेड़ नांदेड़ और पूर्णा में प्रदान की जाती है। यह ट्रेन उज्जैन (महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर), द्वारका, सोमनाथ, पुणे (भीमा शंकर), नासिक (त्र्यंबकेश्वर) और औरंगाबाद (घृष्णेश्वर मंदिर) जैसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों को कवर करेगी। पूरी यात्रा 11 रातों/12 दिनों की अवधि में पूरी की जाएगी। इसमें सभी यात्रा सुविधाएँ (रेल और सड़क परिवहन दोनों सहित), आवास सुविधा, खानपान व्यवस्था (सुबह की चाय, नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात का खाना - ऑन-बोर्ड और ऑफ-बोर्ड दोनों), पेशेवर और मैत्रीपूर्ण टूर एस्कॉर्ट्स की सेवाएँ शामिल हैं, इस प्रकार, यह व्यक्तिगत योजना और संबंधित व्यवस्थाओं में शामिल कठिनाइयों से बचने में सहायक है।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

'एक तस्वीर खींची गई, उसमें भी राजनीति हुई'

विनेश फोगाट ने आईओए अध्यक्ष पीटी उषा पर साधा निशाना

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। भारत की दिग्गज पहलवान विनेश फोगाट ने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पीटी उषा पर पेरिस ओलंपिक 2024 में उनकी दुखद यात्रा के दौरान पर्याप्त समर्थन नहीं देने का आरोप लगाया है। विनेश ओलंपिक खेलों में कुश्ती के फाइनल के लिए क्वालिफाई करने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। 30 साल की इस पहलवान ने महिलाओं के 50 किग्रा फ्रीस्टाइल वर्ग के फाइनल के लिए क्वालिफाई करने के बाद कम से कम रजत पदक पक्का कर लिया था।

हालांकि, उनकी इस यात्रा का दुखद समापन हुआ, क्योंकि उनका वजन 100 ग्राम अधिक पाया गया था और फाइनल से ठीक पहले उन्हें डिसक्वालिफाई कर दिया गया था। इस तरह अपने आखिरी ओलंपिक में उनके पदक जीतने का सपना टूट गया। हालांकि, इस मुश्किल घड़ी में पूरा देश उनके साथ खड़ा रहा, लेकिन विनेश ने भारतीय ओलंपिक

संघ पर उनकी कठिन यात्रा के दौरान उनका समर्थन नहीं करने का आरोप लगाया है। विनेश ने पीटी उषा पर उनके साथ सिर्फ तस्वीरें क्लिक करने और कोई मदद नहीं करने का आरोप लगाया है।

विनेश ने एएए मीडिया के साथ एक इंटरव्यू में कहा, 'मुझे नहीं पता कि मुझे वहां क्या समर्थन मिला। पीटी उषा मैडम ने अस्पताल में मुझसे मुलाकात की। एक फोटो क्लिक की गई थी... जैसा कि आपने कहा, राजनीति में बंद दरवाजों के पीछे बहुत कुछ होता है। इसी तरह वहां (पेरिस में) भी राजनीति हुई। इसलिए मेरा दिल टूट गया था। वरना काफी लोग कह रहे हैं कि कुश्ती मत छोड़ो। मुझे क्यों इसे जारी रखना चाहिए! हर जगह राजनीति है।'

विनेश ने कहा, 'आप अस्पताल के बिस्तर पर हैं, जहां आपको नहीं पता होता कि बाहर क्या हो रहा है। आप अपने जीवन के सबसे बुरे दौर से गुजर रहे हैं। उस जगह पर बस सभी को दिखाने के लिए कि आप मेरे साथ खड़े हैं, आप बिना बताए फोटो खींचते हो, फिर सोशल मीडिया पे दाल के बोल रहे हो हम साथ में खड़े हैं। आप इस तरह समर्थन नहीं दिखाते हैं। उनका पोज फोटो खिंचवाने से ज्यादा क्या था!'

प्रतियोगिता से अयोग्य करार दिए जाने के बाद इस भारतीय पहलवान ने संयुक्त रजत पदक जीतने के लिए खेल पंचाट न्यायालय (सीएएस) में अपनी अयोग्यता के खिलाफ अपील भी की थी। हालांकि, एक हफ्ते की सुनवाई के बाद, सीएएस का फैसला भी उनके पक्ष में नहीं आया और उन्हें पेरिस से खाली हाथ लौटना पड़ा। पूरी घटना पर विचार करते हुए विनेश ने कहा कि भारत सरकार को उनकी ओर से मामला दर्ज करना चाहिए था, लेकिन उन्होंने खुद इसे दायर करने के बाद ही इसमें शामिल किया।

विनेश ने कहा, 'मैंने अपना मामला खुद दायर किया। हरीश साल्वे सर अगले दिन शामिल हुए। पेरिस में मौजूद वकीलों ने मेरी ओर से यह मामला दायर किया। यह भारत सरकार से नहीं किया गया था, उन्होंने तीसरे पक्ष के रूप में कार्य किया।

पीएम मोदी ने लिखा पूर्व गोलकीपर को पत्र

जूनियर कोच के रूप में किया समर्थन, कहा- धन्यवाद श्रीजेश

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय हॉकी टीम के पूर्व गोलकीपर पी आर श्रीजेश को प्रधानमंत्री मोदी ने पत्र लिखा। इसमें उन्होंने खेल में उनके योगदान की सराहना की और विश्वास जताया कि वह जूनियर कोच के रूप में भी उतने ही प्रभावी होंगे।

पेरिस ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम ने स्पेन को हराकर कांस्य पदक जीता था। इसके बाद श्रीजेश ने खेल से संन्यास ले लिया। हालांकि, वह अब भी खेल से जुड़े हैं। उन्हें हॉकी इंडिया ने जूनियर पुरुष हॉकी टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने पत्र में लिखा- मुझे विश्वास है कि नई भूमिका में भी आपका काम उतना ही प्रभावी और प्रेरणास्पद होगा। आपने खेल से विदा लेने का फैसला किया है और मैं भारतीय हॉकी में आपके अपार योगदान की हृदय से सराहना करता हूं।

वहीं, श्रीजेश ने अब प्रधानमंत्री मोदी का पत्र सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा किया है। उन्होंने लिखा- मेरे संन्यास पर

नरेंद्र मोदी सर का पत्र मिला। हॉकी मेरा जीवन है और मैं खेल की सेवा करता रहूंगा। भारत को हॉकी की महाशक्ति बनाने के लिये काम करता रहूंगा जिसकी शुरूआत 2020 और 2024 ओलंपिक पदकों से हो गई है । मुझ पर विश्वास जताने के लिये धन्यवाद प्रधानमंत्री सर।

श्रीजेश के करियर के बारे में मोदी ने 2014 एशियाई खेलों में उनके प्रदर्शन को याद किया। इसके अलावा रियो, टोक्यो और पेरिस ओलंपिक में उनके प्रदर्शन का भी जिक्र किया। उन्होंने लिखा- ऐसी अनगिनत यादें हैं और इनके लिए एक पत्र पर्याप्त नहीं है। आपको मिले विभिन्न पुरस्कार, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक बताते हैं कि आपने किन ऊंचाइयों को छुआ है। लेकिन इसके बावजूद आपकी विनम्रता और गरिमा, मैदान से भीतर और बाहर, प्रशंसनीय है।

प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा-मुझे विश्वास है कि आपका जुनून, प्रतिबद्धता और समर्पण अगली पीढी के विश्व विजेताओं को तैयार करेगा ।मैं आपको आपके अथक समर्पण, शानदार करियर और भारत को गौरवान्वित करने के लिए धन्यवाद देता हूं। इन सभी यादों के लिये धन्यवाद और भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

'पाकिस्तान में फिसड्डी खिलाड़ी'

सौरव गांगुली ने सरेआम पाक खिलाड़ियों को लगाई लताड़, बयान से मची सनसनी

मुंबई, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान क्रिकेट टीम इन दिनों खराब दौर से गुजर रही है। टीम के लगभग सभी खिलाड़ियों की ओर से खराब प्रदर्शन देखा जा रहा है। हाल ही में शान मसूद की अगुवाई वाली पाकिस्तान टेस्ट टीम को घरेलू सरजमी पर बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज 0-2 से गंवानी पड़ी। इससे पहले टी-20 विश्व कप 2024 में भी पाक को यूएसए के खिलाफ हार झेलनी पड़ी थी। हालांकि पाक के खराब प्रदर्शन पर अब सौरव गांगुली ने खुलकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने माना है कि मौजूदा पाक खिलाड़ियों में दम नहीं है। दादा का ये बयान क्रिकेट जगत में चर्चा का विषय बना हुआ है। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के लगातार खराब प्रदर्शन पर पूर्व कप्तान सौरव गांगुली को अपनी चुप्पी तोड़नी पड़ी। पीटीआई के मुताबिक दादा ने अपने बयान में

कहा कि 'मुझे पाकिस्तान में प्रतिभा की कमी नजर आती है। मुझे वो दिन याद है जब पाकिस्तान में जावेद मियांदाद, वसीम अकरम, वकार यूनुस जैसे खिलाड़ी रीढ़ की हड्डी हुआ करते थे। जीतने के लिए हर जेनरेशन को अच्छा प्रदर्शन करना होता है। खिलाड़ियों को तैयार करना होता है।' दादा का मानना है कि पीसीबी को अच्छी गुणवत्ता वाले खिलाड़ियों को खोजने का समाधान निकालना चाहिए, जो उनके लिए मैच विनर के तौर पर उभरे। खेल जगत से जुड़े लोगों को इसपर ध्यान देना चाहिए। गांगुली ने पाकिस्तान को सलाह दी है। लेकिन पीसीबी उनकी बातों पर कितना अमल करती है। ये देखने वाली बात होगी।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड में आए दिन बड़े बदलाव होते हैं। 1 साल के अंतराल में ही पीसीबी के 2 चेयरमैन बदल चुके हैं। ऐसे में हर नया बोर्ड अध्यक्ष अपने हिसाब से टीम मैनेजमेंट को तैयार करता है। स्थिरता नाम की कोई चीज नहीं है।

क्यों तमाम कोशिशों के बावजूद

ग्रेटर नोएडा क्रिकेट स्टेडियम का ग्राउंड नहीं सूख रहा?

ग्रेटर नोएडा, 11 सितंबर (एजेंसियां)। ग्रेटर नोएडा का क्रिकेट स्टेडियम चर्चा में है. पिछले कुछ दिनों से इस स्टेडियम को लेकर बातें इसलिए हो रही हैं क्योंकि यहां पर अफगानिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच इकलौते टेस्ट में बारी-बारी से हर दिन का खेल रद्द हो रहा है. टेस्ट मैच में पहले 3 दिन का खेल अब तक रद्द हो चुका है. पहले 2 दिन का खेल गीले मैदान की वजह से नहीं हो सका तो तीसरे दिन बारिश ने खेल होने के आसारों पर पानी फेर दिया. ऐसा नहीं है कि टेस्ट मैच को कराए जाने की कोशिशें नहीं की गई. पहले दो दिन बारिश के रुकने पर ग्राउंड्समैन ने हर संभव कोशिश की, हर वो तरीका आजमाया, ताकि खेल हो सके. लेकिन, ग्राउंड को सुखाने के उनके सारे तरीके और हथकंडे बेकार गए. ऐसे में सवाल है कि आखिर ग्रेटर नोएडा क्रिकेट

स्टेडियम का ग्राउंड सूख क्यों नहीं रहा?

ग्राउंड को सूखाने के लिए क्या-क्या ना किया?

सबसे पहले तो ये जान लीजिए कि ग्राउंड्समैन ने ग्राउंड को सूखाने के लिए किया क्या-क्या था? पहले तो उन्होंने ग्राउंड के गीले एरिया को पंखे से सुखाने की कोशिश की. सिर्फ उससे ही बात नहीं बनती दिखी तो उन्होंने ग्राउंड को खोद भी दिया. उन्होंने ग्राउंड के उस भाग को खोदा जो गीले थे. ऐसा इसलिए किया ताकि वहां किसी दूसरे जगह से सूखी सतह लाकर लगा सकें. ग्राउंड्समैन ने नेट प्रैक्टिस एरिया से सूखी सतह लाकर मिडफील्ड पर लगाई भी. लेकिन, हालात उससे भी इतने बेहतर नहीं बने कि खेल कराया जा सके.

क्यों नहीं सूख रहा ग्राउंड?

अब जान लीजिए कि ग्रेटर नोएडा क्रिकेट स्टेडियम का ग्राउंड आखिर सूख क्यों नहीं रहा? दरअसल, ग्राउंड का जो आउटफील्ड है उसकी सतह रेतीली नहीं है, जिसकी वजह से वहां पर पानी ज्यादा देर तक ठहर रहा है. ये ग्राउंड के गीले रहने की एक वजह है. दूसरी वजह उतने बड़े कवर का ना होना भी है, जिससे पूरे ग्राउंड को ढका जा सके. इसके अलावा सुपर सॉपर, जिससे ग्राउंड को सुखाया जाता है, उसका एक्स्ट्रा ना होना भी ग्रेटर नोएडा में गीले ग्राउंड की एक बड़ी वजह है.

इस बीच बीसीसीआई से जो सहयोग बन सकता है एसीबी को वो पूरा मिला. बीसीसीआई ने दिल्ली के अरूण जेटली स्टेडियम से क्यूरेटर उपलब्ध कराए, जिन्होंने ग्रेटर नोएडा जाकर ग्राउंड को तैयार करने में मदद की. लेकिन, लगता नहीं कि इसका भी कुछ खास फायदा मिलता दिखा है.

युजवेंद्र चहल ने अकेले ही आधी टीम की ढेर

पांच पारियों में दूसरी बार झटके 5 विकेट

लंदन, 11 सितंबर (एजेंसियां)। युजवेंद्र चहल का चयन भले ही टीम इंडिया में नहीं हो सका है, लेकिन वह इंग्लैंड में अपनी गेंदबाजी से कमाल करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं. काउंटी चैंपियनशिप में उन्होंने नॉर्थैंम्पटन के लिए खेलते हुए डर्बीशर के खिलाफ 5 विकेट लिए हैं.

युजवेंद्र चहल ने इंग्लैंड में एक बार फिर से अपने प्रदर्शन से तहलका मचा दिया है. उन्होंने काउंटी चैंपियनशिप डिविजन टू टूर्नामेंट में नॉर्थैंम्पटनशर के लिए खेलते हुए जबरदस्त गेंदबाजी की है. चहल ने 10 सितंबर को डर्बीशर के खिलाफ 5 विकेट चटकाकर अपने टीम की वापसी कराई. उनकी टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 219 रन पर ऑलआउट हो गई थी. इसके बाद

टीम इंडिया के इस स्पिनर ने 45 रन देकर 5 विकेट झटक लिए. इससे डर्बीशर की टीम घुटने टेकने पर मजबूर हो गई. इस घातक गेंदबाजी की वजह से पूरी टीम 165 पर ढेर हो गई, जिससे नॉर्थैंम्पटनशर को वापसी का मौका मिल गया. काउंटी में चहल की पांचवी पारी है, जब उन्होंने गेंदबाज की है. इन 5 पारियों में ही उन्होंने 5 बार 5 विकेट लेने का कारनामा कर दिया है. इससे पहले उन्होंने काउंटी की वनडे कप के दौरान 5 विकेट झटके थे.

चहल की फिरकी में फंसे बल्लेबाज

युजवेंद्र चहल पहली बार इंग्लैंड की काउंटी चैंपियनशिप में फर्स्ट क्लास मुकाबला खेल रहे हैं. मैच के दौरान डर्बीशर के बल्लेबाज चहल के आगे मजबूर दिखे. उन्हें चहल की गेंदों का सामना करने में काफी परेशानी हुई, जिसका वीडियो भी सामने आया है. उन्होंने अपने 5 विकेट में से 2 को बोल्ड कर दिया. वहीं 3 बल्लेबाज उनकी फिरकी फंसकर कैच आउट हो गए.

इस टूर्नामेंट में चहल के साथ पृथ्वी शॉ भी हिस्सा ले रहे हैं. वो भी चहल की टीम नॉर्थैंम्पटनशर के लिए ही खेल रहे हैं. पहले पारी में पृथ्वी फ्लॉप रहे. वह महज 4 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. इससे पहले उन्होंने काउंटी की वनडे कप में भी वह अपनी छाप छोड़ने में सफल नहीं रहे थे. हालांकि, उन्होंने 9 मुकाबलों में 3 फिफ्टी जड़े थे लेकिन कोई बड़ी पारी नहीं खेल सके थे.

चहल का संघर्ष

युजवेंद्र चहल पिछले कुछ समय में टीम इंडिया में अपनी जगह पक्की करने में असफल रहे हैं.

उनका चयन तो होता रहा है लेकिन प्लेइंग इलेवन नहीं जगह नहीं मिलती. चहल टी20 वर्ल्ड कप में भी 15 सदस्यों के स्क्वॉड में शामिल थे लेकिन उन्होंने कोई भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला था. वह भारत के लिए करीब 21 महीने से वनडे मुकाबला और 12 महीने से टी20 मैच नहीं खेल पाए हैं.

चहल ने टीम इंडिया के लिए आखिरी वनडे मैच जनवरी 2023 में खेला था, वहीं आखिरी पिछला टी20 मुकाबला अगस्त 2023 में खेला था. इतना ही नहीं वह अभी तक टेस्ट डेब्यू भी नहीं कर सके है.

38 खिलाड़ियों समेत 43 पर लगा लाइफटाइम बैन, मैच फिक्सिंग का है आरोप

2 साल की जांच के बाद हुआ भंडाफोड़

खेल डेस्क, , 11 सितंबर (एजेंसियां)। चीन फुटबॉल एसोसिएशन ने 43 लोगों पर मैच फिक्सिंग और दूसरे भ्रष्टाचारों के आरोप में लाइफटाइम बैन लगाया है. एसोसिएशन के इस एक्शन में 38 खिलाड़ी और 5 मैच ऑफिशियल्स शामिल हैं. चीन का रिकॉर्ड आमतौर पर दूसरे खेलों में अच्छा है. इस वजह से ओलंपिक के दौरान वह 40 गोल्ड मेडल के साथ दूसरे नंबर पर रहा था. लेकिन फुटबॉल में भ्रष्टाचार के कारण उसकी स्थिति हमेशा से बहुत बुरी रही है. इसकी सुधार और इस खेल में भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए चीन के फुटबॉल एसोसिएशन ने दो साल की लंबी जांच के बाद ये कदम उठाया है.

चीन फुटबॉल एसोसिएशन के इस जांच में 120 मैच, 128 संदिग्ध और 41 क्लब निशाने पर थे. एसोसिएशन ने दो साल तक लंबी जांच की, जिसके बाद 38 खिलाड़ी और 5 मैच ऑफिशियल दोषी पाए. शिनहुआ न्यूज एजेंसी के अनुसार, जांच में पता चला कि ये सभी ऑनलाइन जुआ, मैच फिक्सिंग और भ्रष्टाचार के मामलों में शामिल थे. वहीं कुछ विदेशी खिलाड़ियों और ऑफिशियल्स पर शॉर्ट टर्म बैन लगाए गए हैं. इनमें कुछ विदेशी खिलाड़ी भी शामिल थे, जो ज्यादा सैलरी के लिए चीन शिफ्ट हो गए थे. 2026 वर्ल्ड कप के लिए एशिया क्वालिफिकेशन राउंड में तीसरे दौर की शुरूआत हो चुकी है. पिछले ही

हफ्ते जापान ने चीन को 7-0 से रौंद दिया था. यह जापान के खिलाफ चीन की सबसे बड़ी हार थी. अब उसका मुकाबला सऊदी अरब से है. 2026 वर्ल्ड कप अमेरिका, मेक्सिको और कनाडा के मेजबानी में होना है और इसमें 48 टीमें हिस्सा लेंगी. चीन मौजूदा फीफा रैंकिंग में 87वें नंबर पर है.उसके पास अभी भी में इसमें क्वालिफाई करने का मौका है. बता दें चीन ने 2002 में वर्ल्ड कप के लिए एक बार क्वालीफाई किया था.फीफा वर्ल्ड कप 2026 के लिए 18 टीमें मुकाबला कर रही हैं. इन्हें 6-6 की 3 ग्रुप में बांटा गया है. हर ग्रुप की टॉप-2 टीम सीधे वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई कर जाएंगी, जबकि नंबर 3 और 4 की टीम को चौथे राउंड में फिर से मशक्कत करनी पड़ेगी. सभी टीमों ने फिलहाल एक-एक मैच खेलें हैं. इसके बाद ग्रुप ए में युएई और ईरान, ग्रुप बी में इराक और जॉर्डन, वहीं ग्रुप सी में जापान और बहरीन की टीम टॉप-2 पर बनी हुई हैं. चीन ग्रुप सी में जापान से हारकर सबसे अंतिम पर है.

पकिस्तान दौरे के लिए इंग्लैंड की टीम का ऐलान, 17 शतक लगाने वाला बल्लेबाज बाहर

लंदन, 11 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड की टीम का ऐलान हो गया है. इंग्लैंड ने 17 सदस्यीय खिलाड़ियों की टीम चुनी है जिसकी अगुवाई बेन स्टोक्स करेंगे. बेन स्टोक्स चोट की वजह से श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज नहीं खेले थे. जैक क्राउली की भी इंग्लिश टीम में वापसी हुई है. दूसरी ओर टॉम हार्टली और डैन लॉरेंस को टीम से बाहर कर दिया गया है. डैन लॉरेंस के नाम फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 17 शतक हैं लेकिन इंटरनेशनल क्रिकेट में खराब प्रदर्शन के बाद उन्हें टेस्ट टीम से ड्रॉप कर दिया गया. इंग्लैंड की टीम में 2 अनकैप्ड खिलाड़ी भी चुने गए हैं. जॉर्डन कॉक्स और ब्राइडन कार्स भी पाकिस्तान दौरे पर जाएंगे.

इंग्लैंड की टेस्ट टीम

बेन स्टोक्स, रेहान अहमद, गस एटकिंसन, शोएब बशीर, हैरी ब्रूक, ब्राइडन कार्स, जॉर्डन कॉक्स, जैक क्रॉली, बेन डकेट, जॉश हल, जैक लीच, ऑली पोप, मैथ्यू पॉट्स, जो

रूट, जेमी स्मिथ, ऑली स्टोन, क्रिस वोक्स.

पाकिस्तान-इंग्लैंड टेस्ट सीरीज का कार्यक्रम

पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच होने वाली टेस्ट सीरीज का आगाज 7 अक्तूबर से खेला जाएगा हालांकि अबतक ये पुष्टि नहीं हुई है कि मैच कहां होंगे. वैसे सीरीज का पहला टेस्ट मुल्तान, दूसरा मैच कराची और तीसरा रावलपिंडी में कराया जाना है लेकिन ऐसी खबरें हैं कि सीरीज का एक टेस्ट मैच पाकिस्तान से बाहर शिफ्ट हो सकता है क्योंकि अभी स्टेडियम का काम पूरा नहीं हुआ है.

इंग्लैंड ने किया था पाकिस्तान का बुरा हाल

इंग्लैंड के लिए पिछला पाकिस्तान दौरा यादगार रहा था. अंग्रेजों ने पाकिस्तान को उसके घर में घुसकर 3-0 से हरा दिया था. पिछले दौरे पर रावलपिंडी में इंग्लैंड ने पाकिस्तान को 74 रनों से हराया था. इसके बाद मुल्तान टेस्ट में इंग्लैंड 26 रनों से जीता वहीं कराची में इंग्लैंड ने 8 विकेट से जीत दर्ज की.

इस बार भी पाकिस्तान का जीतना मुश्किल

पाकिस्तान का इस बार भी इंग्लैंड से जीतना मुश्किल लग रहा है. पाकिस्तान का अपने घर पर टेस्ट सीरीज में बेहद खराब प्रदर्शन रहा है. पाकिस्तान पिछले 10 में से एक भी टेस्ट नहीं जीत पाया है. हाल ही में उसने बांग्लादेश से टेस्ट सीरीज गंवा दी. बांग्लादेश ने पाकिस्तान को दो मैचों की टेस्ट सीरीज में 2-0 से हरा दिया.

नाडा के निलंबन के खिलाफ बजरंग ने किया दिल्ली हाई कोर्ट का रुख, इस टूर्नामेंट में लेना चाहते हैं हिस्सा

नई दिल्ली, 11 सितंबर (एजेंसियां)। अल्बानिया में अक्टूबर में होने वाली सीनियर विश्व कुश्ती चैंपियनशिप से पहले पहलवान बजरंग पूनिया ने राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) के फैसले को चुनौती दी है। उन्होंने निलंबन पर रोक लगाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट का रुख किया है।

21 जून को नाडा ने पूनिया को दूसरी बार निलंबित किया था।

एजेंसी ने उनके खिलाफ औपचारिक नोटिस ऑफ चार्ज जारी किया था, जिससे वह प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अयोग्य हो गए। अब पहलवान ने दावा किया है कि एजेंसी का यह आचरण उनके किसी पेशे को अपनाने और आजीविका कमाने के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि मनमाना निलंबन नहीं हटाया गया तो उन्हें सेवानिवृत्त होने के लिए मजबूर किया जाएगा।

मुख्य सचिव ने बारिश से हुए नुकसान के बारे में केंद्रीय टीम को जानकारी दी

कर्नल केपी सिंह की अध्यक्षता में छह सदस्यीय केंद्रीय टीम सचिवालय पहुंची

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्य सचिव शांति कुमारी ने कर्नल के पी सिंह के नेतृत्व में दौरे पर आई केंद्रीय टीम को 31 अगस्त से 3 सितंबर की अवधि के दौरान हुई अभूतपूर्व बारिश के कारण राज्य के अधिकांश हिस्सों में हुए व्यापक नुकसान के बारे में जानकारी दी।

कर्नल के पी सिंह की अध्यक्षता में छह सदस्यीय केंद्रीय टीम ने आज सचिवालय में मुख्य सचिव और राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा की। मुख्य सचिव ने बताया कि भले ही मौसम की चेतावनी बहुत कम समय में प्राप्त हुई थी, लेकिन प्रशासन हाई अलर्ट पर था और राज्य सरकार द्वारा त्वरित कार्रवाई की गई, जिसके परिणामस्वरूप जानमाल का कम नुकसान हुआ। मुख्यमंत्री लगातार स्थिति की समीक्षा कर रहे थे और उपमुख्यमंत्री दो अन्य मंत्रियों के साथ राहत और बचाव कार्यों की निगरानी के लिए बारिश का सामना करते हुए खम्मम पहुंचे। राज्य सरकार ने राहत उपाय करने के लिए जिला प्रशासन को तुरंत धन जारी किया। मुख्य सचिव ने केंद्रीय टीम से दिशा-निर्देशों को उदार बनाने की अपील की ताकि राज्य सरकार व्यापक रूप से राहत पहुंचा सके। उन्होंने यह भी बताया कि मुख्यमंत्री ने राज्य में आपातकालीन स्थितियों में बचाव कार्यों में भाग लेने के लिए एनडीआरएफ के बराबर विशेषज्ञ टीमों के गठन का आदेश दिया है। उन्होंने विशेष टीमों के लिए प्रशिक्षण और अन्य रसद सहायता में एनडीएमए से सहयोग मांगा। मुख्य सचिव ने भारी बारिश के दौरान हवाई बचाव कार्यों के मुद्दे को भी उठाया जो प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती बन रहा है और इस चुनौती से निपटने में केंद्र से सहयोग मांगा। एतुरूनगरम क्षेत्र में 332 हेक्टेयर में हुई बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई और पारिस्थितिक आपदा पर भी प्रकाश डाला गया। केंद्रीय टीम ने इस पारिस्थितिक आपदा के मूल कारण का पता लगाने के लिए एक विस्तृत अध्ययन करने की सलाह दी जो अभूतपूर्व थी और पहले कभी नहीं सुनी गई थी। आपदा प्रबंधन विभाग के विशेष मुख्य सचिव अरविंद कुमार ने बाढ़ से हुए नुकसान और संकट में फंसे लोगों को तत्काल राहत पहुंचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का संक्षिप्त ब्यौरा दिया। उन्होंने बताया कि नुकसान का प्रारंभिक अनुमान 5,438 करोड़ रुपये लगाया गया है, जबकि वास्तविक आकलन अभी जारी है। कृषि, सड़क एवं भवन, नगर प्रशासन, पंचायत राज, ऊर्जा, पशुपालन, वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के जरिए केंद्रीय टीमों को हुए नुकसान की जानकारी दी। इससे पहले केंद्रीय टीम ने एक फोटो प्रदर्शनी देखी, जिसमें उन्हें बारिश के कारण हुए व्यापक नुकसान को दिखाया गया। केंद्रीय टीमें खम्मम और महबूबाबाद जिलों के बाढ़ प्रभावित जिलों का दौरा करेंगी और बाढ़ से प्रभावित लोगों से बातचीत करेंगी और जिला प्रशासन से भी बातचीत करेंगी। बैठक में विशेष मुख्य सचिव वित्त के रामकृष्ण राव, विशेष मुख्य सचिव टीआरएंडबी विकास राज, अतिरिक्त महानिदेशक महेश भागवत, महानिदेशक अग्निशमन सेवाएं नागी रेड्डी, प्रमुख सचिव एमएयूडी दानकिशोर, प्रमुख सचिव एएच सब्यसाची घोष, सचिव आवास बुद्धप्रकाश ज्योति, सचिव कृषि रघुनंदन राव, सीआईपीआर हनुमंत राव और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

वन शहीदों के बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता : वीरैय्या

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। वन निगम के अध्यक्ष पोडेम वीरैय्या ने कहा कि वन शहीदों के बलिदान को भुलाया नहीं जा सकेगा। वनों की सुरक्षा के लिए उनके द्वारा किये गये बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने दिया सकता है। वन शहीद दिवस के अवसर पर मुख्य वन संरक्षक के साथ निगम के अध्यक्ष पोडेम वीरैया, मुख्य वन संरक्षक आरएम डोबरियाल और अन्य कर्मचारियों ने बुधवार को नेहरू जूलॉजिकल पार्क शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी और वन मंत्री कोंडा सुरेखा ने संदेश पढ़ा गया। बाद में वीरया ने कहा कि जंगलों का आदिवासियों से अटूट संबंध है। जंगलों के सच्चे रक्षक आदिवासी हैं और वे जंगलों को अपनी मां मानते हैं। उन्होंने कहा कि वह भी आदिवासियों की संतान हैं कर्मचारियों के बलिदान को भुलाया नहीं जाना चाहिए। वन विभाग के कर्मचारियों को वनों की सुरक्षा के लिए उनके बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए और कुशलता से काम करना चाहिए। उन्होंने हरियाली की रक्षा और वन्य जीवों की सुरक्षा की पहल के साथ आगे बढ़ रहे वन अमले को बधाई दी। प्रमुख वन संरक्षक आरएम डोबरियाल ने कहा कि 1984 से अब तक ड्यूटी पर जान गंवाने वाले 22 कार्मिकों का बलिदान अमूल्य है।

आयुक्त आम्रपाली ने एलबी नगर जोन में एच-सीआईटीआई के प्रस्तावों की जांच की

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जीएचएमसी आयुक्त आम्रपाली काटा ने प्रोजेक्ट सीई, एसई और अन्य इंजीनियरों के साथ बुधवार को एलबी नगर जोन में एच-सीआईटीआई के तहत किए जाने वाले कार्यों के प्रस्तावों की जांच की। इस अवसर पर कमिश्नर ने अलकापुरी जंक्शन, फ्लाईओवर प्रस्ताव, टीकेआर जंक्शन से गायत्री नगर और मांडा मल्लम्मा जंक्शन तक बनने वाले फ्लाईओवर प्रस्तावों की जांच की। इस संदर्भ में परियोजना आयुक्त सीई देवानंद को प्रस्तावित परियोजनाओं की आवश्यकता बताई गई। इस अवसर पर आयुक्त ने फ्लाईओवर सेरेखण के संबंध में हैदराबाद मेट्रो रेल (एचएमआर) के अधिकारियों के साथ समन्वय करने का सुझाव दिया। इसके बाद, इंजीनियरों को एलबी नगर जंक्शन का निरीक्षण करने और मुक्त बाईं ओर आवश्यक भूमि अधिग्रहण की व्यवस्था करने के लिए टाउन प्लानिंग और यातायात अधिकारियों के साथ समन्वय में आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया गया। बैरमालगुडा आरएचएस लूप का निरीक्षण करने के बाद, इंजीनियरिंग अधिकारियों को अलग ग्रेड सड़क कार्य से बैरमालगुडा आरएचएस लूप को पूरा करने के लिए परिसंपत्तियों के अधिग्रहण को शीघ्रता से पूरा करने के लिए नगर नियोजन अधिकारियों के साथ समन्वय में उचित उपाय करने की सलाह दी गई। इस कार्यक्रम में कमिश्नर के साथ एलबीनगर जोनल कमिश्नर हेमंत केशव पाटिल, प्रोजेक्ट सीई देवानंद, एसई, ईई रोहिणी इंजीनियरिंग अधिकारी और अन्य लोग शामिल हुए।

गणेश शोभा यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए : काटा

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जीएचएमसी आयुक्त आम्रपाली काटा ने जोनल आयुक्तों को गणेश उत्सव के दौरान विसर्जन वाले स्थानों पर भक्तों को सभी सुविधाएं प्रदान करने का निर्देश दिया है। बुधवार को कमिश्नर ने एडिशनल और जोनल कमिश्नर और अन्य विभागों के अफसरों के साथ टेलीकांफ्रेंस की। इस मौके पर कमिश्नर ने कहा कि गणेश विसर्जन के मद्देनजर जिन इलाकों में शोभा यात्रा निकलती है, वहां की सड़कों से कूड़ा-कचरा तुरंत हटाने के लिए सफाई कर्मचारियों की व्यवस्था की जाए। बिना डार्क स्पॉट वाली इलेक्ट्रिक लाइटें लगाने का आदेश दिया गया। उन्होंने निर्देश दिया कि विसर्जन के सम्मान में निकलने वाली शोभा यात्रा के दौरान किसी भी तरह की परेशानी से बचने के लिए सड़कों पर गड्ढे भर दिए जाएं. इसके अलावा उन्होंने पेड़ों की छंटाई के लिए भी कदम उठाने का आदेश दिया. अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का आदेश दिया गया कि यातायात बाधित न हो। मंडपम से निमज्जनम शोभायात्रा के रास्ते में पेड़ों, बिजली के लटकते तारों, अंधेरे स्थानों और गड्ढों की पहचान की जानी चाहिए और तुरंत उचित कार्रवाई की जानी चाहिए और कार्रवाई करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ एक समिति का गठन किया जाना चाहिए। की गई कार्रवाई पर रिपोर्ट देने का आदेश दिया। विद्युत, यूबीडी, ईए और पुलिस अधिकारियों ने फील्ड का दौरा किया और जोनल कमिश्नरों को किसी भी समस्या से बचने के लिए सख्त कदम उठाने का निर्देश दिया।

नशे में धुत मोटर चालक ने किया आत्मदाह का प्रयास

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कथित तौर पर नशे में धुत एक बाइक सवार ने मंगलवार रात शहर के बाहरी इलाके शमशाबाद में टोंडुपल्ली टोल प्लाजा पर ड्रंकन ड्राइव टेस्ट के दौरान पकड़े जाने के बाद आत्मदाह कर लिया। मैलारदेवपल्ली निवासी शिव कुमार नामक व्यक्ति का पहले भी आपराधिक रिकॉर्ड रहा है। वह बाइक चला रहा था और ट्रैफिक पुलिस द्वारा शराब पीकर गाड़ी चलाने के खिलाफ चलाए गए विशेष अभियान के दौरान उसका परीक्षण किया गया, जिसमें उसे शराब पीने की पुष्टि हुई। उसका बीएसी 157 था।

पुलिस ने बताया कि शिवा को निर्देश दिया गया था कि वह किसी को घर वापस लाने के लिए गाड़ी का प्रबंध करे लेकिन उसने ट्रैफिक पुलिस से बहस की और चला गया, लेकिन बाद में वापस आकर खुद को आग लगा ली। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने उसे बचाया और इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। शमशाबाद पुलिस ने शिवा के खिलाफ सरकारी कर्मचारियों को उनके कर्तव्य पालन में बाधा पहुंचाने और आत्महत्या का प्रयास करने का मामला दर्ज किया है।

सीपी ने दक्षिण पश्चिम जोन का दौरा किया

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सीपी हैदराबाद सी.वी. आनंद ने आज दक्षिण पश्चिम जोन का दौरा किया, सभी एल.ओ., ट्रैफिक, एस.बी., टास्क फोर्स अधिकारियों से मुलाकात की, उनसे गणेश और मिलाद त्योहारों के बारे में फीडबैक लिया और गणेश और मिलाद त्योहारों को एक साथ निपटाने की रणनीति पर चर्चा की। उन्होंने किसी भी तरह से आम जनता को परेशान न करने के निर्देश दिए।

बोधन कस्बे में मिला शिशु का क्षत-विक्षत शव

निजामाबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जिले के बोधन कस्बे में एक बस स्टैंड के पास 10 महीने के बच्चे का क्षत-विक्षत शव मिला। रिपोर्ट के अनुसार, दो दिन पहले एक महिला, जो भिखारी बताई जा रही है, अपने बेटे को बस स्टैंड के पास खुले स्थान पर शौच के लिए छोड़ गई थी। जब वह वापस लौटी तो उसका बेटा कहीं नहीं मिला।

उसने बच्चे को हर जगह तलाशा और जब वह नहीं मिला तो उसने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने जांच की तो उसे पास के इलाके में एक बच्चे के शरीर के अंग मिले। पता चला कि कुत्तों ने बच्चे के अंगों को खा लिया था। पुलिस ने बच्चे के शरीर के अंगों को इकट्ठा कर पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भेज दिया। पुलिस ने कहा कि पोस्टमार्टम और डीएनए जांच के बाद ही पता चल पाएगा कि शरीर के अंग बच्चे के हैं या किसी और बच्चे के?

कुख्यात चेन स्नेचर गिरफ्तार, सोने की चेन बरामद

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नरसिंगी थाना क्षेत्र के अलकापुर कॉलोनी में वाहन चेकिंग के दौरान राजेंद्रनगर सीसीएस पुलिस टीम ने वाहन चेकिंग के दौरान एक कुख्यात चैन स्नैचर को गिरफ्तार किया है। अभियुक्त अपने दो पहिया वाहन होंडा एक्टिवा स्कूटी पर संदिग्ध अवस्था में आ रहा था, जिसे रोककर पूछताछ की गई। वह पूछताछ के दौरान टालमटोल करने लगा, जिसके चलते उसे थाना लाया गया, पूछताछ करने पर आरोपी उप्पुगुंटा सागर निवासी लिंगमपल्ली, मियापुर, हैदराबाद स्वेच्छा से अपराध करना स्वीकार किया। डीसीपी क्राइम साइबराबाद ने बताया कि बीते 17 अगस्त को गंगा भवानी निवासी पुप्पलगुडा, गांडीपेट मंडल, रंगारेड्डी से एक शिकायत प्राप्त हुई। उसने अपने शिकायत में कहा कि वह अपने दो बच्चों को स्कूल से लेकर घर जा रही थी। एक्टिवा बाइक पर सवार और हेलमेट पहने एक अज्ञात व्यक्ति अचानक पीछे से उसके पास आया और उसके गले से सोने की चेन जबरन छीनकर भाग गया। शिकायतकर्ता ने आगे बताया कि संदिग्ध व्यक्ति लगभग 25 वर्ष का था और उसने काली शर्ट पहन रखी थी। उन्होंने बताया कि आरोपी, उप्पुगुंटा सागर एक निजी स्कूल वैन चालक के रूप में काम करता है।

पहले, वह एक फूड डिलीवरी बॉय के रूप में काम करता था। उसकी मासिक आय बहुत कम थी, और बुरी आदतों की लत के कारण वह अपने परिवार का ठीक से भरण-पोषण करने में असमर्थ था।

अपनी योजना के तहत, घटना के दिन वह अपने दोपहिया वाहन, होंडा एक्टिवा पर नरसिंगी क्षेत्र के पुप्पलागुडा गया, उसने हेलमेट पहना हुआ था और पहचान से बचने के लिए नंबर प्लेट को स्टिकर से ढक रखा था। उसने एक महिला को अपने बच्चों के साथ घर जाते हुए देखा और उसकी कमजोरी का फायदा उठाते हुए, अपने स्कूटर पर पीछे से उसके पास पहुंचा, उसके गले से सोने की चेन छीन लिया और मौके से भाग गया। इससे पहले, 2022 में, सागर ने साइबराबाद के पीएस केपीएचबी पीएस के अपराध संख्या 839/2022 यू/सेक 392 आईपीसी के तहत केपीएचबी पुलिस स्टेशन की सीमा के भीतर इसी तरह का अपराध किया था और केपीएचबी पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था, न्यायिक हिरासत पूरी होने के बाद उसे 25 दिनों के बाद जमानत पर रिहा कर दिया गया था। अपनी पिछली गिरफ्तारी के बावजूद, उसने 17 अगस्त को नरसिंगी पुलिस स्टेशन की सीमा के भीतर फिर से इसी तरह का अपराध किया।

फसल ऋण राशि की मांग को लेकर किसानों का प्रदर्शन

कामारेड्डी, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बुधवार को बड़ी संख्या में किसानों ने पेड्डा कोडपगल मंडल मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया और सरकार से फसल ऋण माफी राशि जारी करने और बारिश के कारण हुए फसल नुकसान के लिए मुआवजा देने की मांग की। मंडल मुख्यालय पर किसान एकत्र हुए और सड़क जाम कर दिया, जिससे इलाके में कुछ समय के लिए यातायात बाधित रहा। उन्होंने फसल ऋण माफी को पूरी तरह लागू करने में विफल रहने के लिए राज्य सरकार के खिलाफ नारे लगाए।

उन्होंने आरोप लगाया कि सभी आवश्यक दस्तावेज जमा करने के बावजूद उनके मंडल में बड़ी संख्या में किसानों को फसल ऋण राशि नहीं मिली है।

उन्होंने कहा कि सरकार तुरंत अधिकारियों को भेजकर जिले में बारिश से हुए फसल नुकसान का जायजा लें। उन्होंने सरकार से मांग की कि फसलों को हुए नुकसान का मुआवजा जल्द से जल्द दिया जाए।

पवन ने तेलंगाना मुख्यमंत्री राहत कोष में दिए 1 करोड़

400 गांवों में राहत कार्यों के लिए अतिरिक्त 4 करोड़ देने की भी घोषणा

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने बुधवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी से उनके आवास पर मुलाकात की और बाढ़ प्रभावितों के लिए मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए एक करोड़ रुपये का चेक सौंपा। अभिनेता-राजनेता ने 4 सितंबर को बाढ़ प्रभावित तेलुगु राज्यों के लिए 6 करोड़ रुपये का बड़ा दान देने की घोषणा की। उन्होंने आंध्र प्रदेश और तेलंगाना मुख्यमंत्री राहत कोष (सीएमआरएफ) में एक-एक करोड़ रुपये दान करने की घोषणा की।

जन सेना नेता ने आंध्र प्रदेश के 400 गांवों में राहत कार्यों के लिए अतिरिक्त 4 करोड़ रुपये देने की भी घोषणा की। बैठक के दौरान दोनों नेताओं ने अंतर-राज्यीय संबंधों और अन्य मुद्दों पर चर्चा की। आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनावों में टीडीपी-जन सेना-भाजपा गठबंधन की भारी जीत के बाद जून में पवन कल्याण के उपमुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभालने के बाद दोनों के बीच यह पहली बैठक थी।

पिछले साल दिसंबर में रेवंत रेड्डी के मुख्यमंत्री बनने के बाद दोनों नेताओं के बीच यह पहली बैठक थी। हालांकि दोनों नेताओं ने एक दूसरे को शुभकामनाएं दी थीं। रेवंत रेड्डी के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद पवन कल्याण ने कहा कि रेवंत रेड्डी के साथ उनकी व्यक्तिगत मित्रता है।

पवन कल्याण ने आशा व्यक्त की कि रेवंत रेड्डी तेलंगाना के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करके तेलंगाना राज्य को विकास पथ पर आगे ले जाएंगे।

रेवंत रेड्डी ने 12 जून को पवन कल्याण के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद उन्हें भी शुभकामनाएं दी थीं।

पवन कल्याण जुलाई में हैदराबाद में दोनों राज्य सरकारों के बीच हुई वार्ता में शामिल नहीं हुए थे। मुख्यमंत्रियों रेवंत रेड्डी और एन. चंद्रबाबू नायडू ने विभाजन के बाद के मुद्दों को सुलझाने के लिए वार्ता में अपने-अपने राज्यों का नेतृत्व किया था। तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क और आंध्र प्रदेश के कुछ मंत्री भी 6 जुलाई की बैठक में शामिल हुए थे।

संदिग्ध परिस्थितियों में मृत पाया गया निजी कर्मचारी

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उप्पल के रमंतापुर में बुधवार को एक युवक अपने छात्रावास के पास खुले इलाके में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत पाया गया। मृतक की पहचान डी रामू (23) के रूप में हुई है, जो एक निजी कर्मचारी था और पुरुष छात्रावास में रह रहा था। पुलिस ने बताया कि रामू को उसके हॉस्टल के पास झाड़ियों के बीच संदिग्ध परिस्थितियों में मृत पाया गया। उसके हॉस्टल के साथियों ने उसका शव देखा और हॉस्टल प्रबंधन और पुलिस को सूचना दी। उप्पल पुलिस ने संदेह के आधार पर मामला दर्ज कर लिया है और मौत के पीछे संभावित कारण की जांच कर रही है। उन्होंने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और आगे की जांच के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

गेस्ट हाउस में चल रही रेव पार्टी का भंडाफोड़

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद पुलिस ने बुधवार तड़के शहर के बाहरी इलाके गाचीबोवली में एक गेस्ट हाउस पर छापा मारकर रेव पार्टी का भंडाफोड़ किया। पुलिस ने मौके से महिलाओं और आयोजकों सहित 18 लोगों को हिरासत में लिया है। इसके अलावा उनके पास से प्रतिबंधित दवाएं और शराब भी जब्त की गई। यह पाया गया कि वे ताश खेल रहे थे, पैसे लेकर दांव लगा रहे थे तथा शराब और नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे थे। मामला दर्ज कर लिया गया है और इसकी जांच की जा रही है।

कांग्रेस ने कर्नाटक के वाल्मीकि घोटाले का पैसा तेलंगाना में इस्तेमाल किया : केटीआर

हैदराबाद, 11 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष के टी रामा राव ने आज आरोप लगाया कि तेलंगाना कांग्रेस ने हाल के लोकसभा चुनावों में वाल्मीकि घोटाले का पैसा इस्तेमाल किया है और कहा कि उन्होंने शुरू से जो कहा था वह अब सच हो गया है। उन्होंने मांग की कि आदिवासियों के कल्याण के लिए निर्धारित धन का चुनाव प्रचार के लिए इस्तेमाल करने के लिए कांग्रेस नेताओं को दंडित किया जाना चाहिए। केटीआर ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अपने आरोप पत्र में पुष्टि की है कि कांग्रेस नेता और कर्नाटक के पूर्व मंत्री बी नागेंद्र वाल्मीकि घोटाले में मुख्य

साजिशकर्ता थे। उन्होंने आरोप लगाया कि कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड (केएसडीडीसी) के 187 करोड़ रुपये कांग्रेस के मंत्री द्वारा डायवर्ट किए गए हैं। उन्होंने दावा किया कि इस पैसे का इस्तेमाल तेलंगाना कांग्रेस ने लोकसभा चुनावों के लिए किया। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि घोटाले का मुख्य आरोपी सत्यनारायण वर्मा हैदराबाद का एक बिल्डर है। उन्होंने कहा कि आरोपी तेलंगाना के दो प्रमुख कांग्रेस नेताओं का बहुत करीबी है। उन्होंने कहा, "संदेह है कि यहां के कांग्रेस नेता भी उसके कारोबार में भागीदार हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कांग्रेस के कई और नेता भी हैं। जांच एजेंसियों को वाल्मीकि घोटाले की सच्चाई का पता लगाना चाहिए।" उन्होंने मांग की और अधिकारियों से दोषियों को कड़ी सजा देने की अपील की।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.